मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 07 | जनवरी, 2022 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा),
संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा,
(पंचायती राज के अधीनस्थ), कला,
साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

शिक्षक-कर्त्तव्य बोध

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा:
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:''

शिक्षा व्यक्ति के जीवन में प्रकाशधारा की तरह होती है। जीविकोपार्जन के साधन एवं उत्तम संस्कारों के मधुर फल शिक्षा उपवन में ही लगते हैं। उपवन की महिमा उसके रखवाले बागवान पर निर्भर करती है। मेरी दृष्टि में विद्यालय ऐसे उपवन एवं उनमें शिक्षण कार्य कराने वाले गुरुजन आदर्श-कर्त्तव्यपरायण बागवान हैं। शिक्षक ज्ञान के अग्रदूत हैं। वे किसी मसीहा से कम नहीं होते। उत्तम विद्यालयों एवं आदर्श गुरुजन की अद्भुत जुगलबंदी से संस्कारवान गुणी विद्यार्थियों की टीम तैयार होती है जिनसे परिवार, समाज एवं राष्ट्र की महिमा बढ़ती है। ऐसी ही लोक मंगलमयी उदात्त स्थिति का स्वप्न मैंने देखा है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा विभाग में अधिकारी, संस्थाप्रधान, शिक्षक एवं कर्मचारी मिलकर मेरे इस स्वप्न को साकार करेंगे।

नए वर्ष-2022 ने अभी-अभी अंगड़ाई ली है। हमें नए वर्ष का स्वागत करते हुए आज से ही पूर्ण मनोयोग से परिश्रमपूर्वक अपने निहित कर्त्तव्यों का पालन करने का संकल्प नए वर्ष की उषा वेला में लेना है। मैं राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे मेरे गुरुजन भाई-बहिनों का इस अवसर पर अभिनंदन करते हुए उनसे अपील करना चाहूँगा कि वे समय का मूल्य पहचाने और एक-एक पल का सदुपयोग कर सुखद व समृद्ध भारत का निर्माण करने में अपना योगदान दें।

विगत लगभग दो वर्षों से मानवता पर कोरोना महामारी के डरावने बादल मंडराते रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था इससे प्रभावित होनी ही थी। कोरोना की दो लहरों का भयावह मंजर हमने देखा है। मेरी शिक्षा प्रशासन, संस्थाप्रधानों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं प्यारे विद्यार्थियों से अपील है कि-

1. कोरोना महामारी के सम्भावित प्रकोप से बचने के लिए मास्क लगाने, बार-बार साबुन से हाथ धोने, परस्पर दूरी बनाए रखने जैसे उपाय करते रहें। हमें यह याद रखना चाहिए कि छोटी-छोटी लापरवाहियों एवं गलतियों के कारण ही बड़े खतरों का सामना करना पड़ता है।
2. प्रदेश के गृह विभाग एवं शिक्षा विभाग के द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करने के सम्बन्ध में वर्तमान में विद्यमान एवं भविष्य में जारी किए जाने वाले दिशा निर्देशों की पालना हर स्तर पर की जानी चाहिए।
3. गुरुजन तो समाज के हरावल सदस्य होते हैं। इस नाते उन्हें दोहरा दायित्व निभाना है। उन्हें स्वयं एवं विद्यालय स्तर पर तो यह सुनिश्चित करना ही है, साथ ही समाज में भी तदनुसार वातावरण भी बनाना है।

शिक्षक करुणा एवं संवेदनशीलता का साक्षात् स्वरूप होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पाठ्यपुस्तकों से कहीं ऊपर शिक्षक के कार्य व्यवहार एवं चरित्र में असली शिक्षा देखा करते थे। उत्तम नैतिक चरित्र एवं संवेदनशील निष्पक्ष व्यवहार शिक्षक की असली पूंजी होती है। जिन शिक्षकों ने इस पूंजी के बल पर काम किया है उनकी मान प्रतिष्ठा उच्च स्तर की देखी गई है।

मैं स्वयं शिक्षक रहा हूँ। शिक्षामंत्री से पहले शिक्षक हूँ। शिक्षक की गरिमामय स्थिति का सुख मैंने देखा और अनुभव किया है। वर्तमान समय कोई सामान्य समय नहीं है। बहुत विशेष और सद्य फलदायी वक्त के दौर से हम गुजर रहे हैं। हमें सम्पूर्ण प्रतिबद्धता, समर्पण एवं सेवा भावना से कार्य करके समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है।

इस माह में हम अपना गणतंत्र दिवस मनाएंगे। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती एवं विवेकानन्द जयन्ती भी इसी माह में है। इन महान उत्सव-पर्वों की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....!

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

“हमें नए वर्ष का स्वागत करते हुए आज से ही पूर्ण मनोयोग से परिश्रमपूर्वक अपने निहित कर्त्तव्यों का पालन करने का संकल्प नए वर्ष की उषा वेला में लेना है। मैं राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे मेरे गुरुजन भाई-बहिनों का इस अवसर पर अभिनंदन करते हुए उनसे अपील करना चाहूँगा कि वे समय का मूल्य पहचाने और एक-एक पल का सदुपयोग कर सुखद व समृद्ध भारत का निर्माण करने में अपना योगदान दें।”

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 7 | पौष-माघ, २०७८ | जनवरी, 2022

प्रधान सम्पादक
काना राम

❄

वरिष्ठ सम्पादक
अरुण कुमार शर्मा

❄

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❄

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- नव वर्ष अभिनन्दन.... 5

विशेष रपट

- समूचा विश्व बन गया है एक ग्लोबल विलेज : डॉ. कल्ला 6
  करणीदान कच्छावा

आलेख

- भारतीय संस्कृति के पुरोधा : स्वामी विवेकानन्द 8
  कमलेश कटारिया
- स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन 9
  विजय सिंह माली
- स्वाधीनता समर के नरसिंह : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 10
  डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'
- गणतन्त्र 11
  जगदीश चन्द्र शर्मा
- दृष्टि दिव्यांगों की शिक्षा का आधार बनी ब्रेल लिपि 12
  हेमेन्द्र कुमार सोनी
- प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा 13
  राजेश मुखीजा
- नए वर्ष का नया उजाला 14
  ओमप्रकाश सारस्वत
- पुस्तकों से दोस्ती करना सीखें विद्यार्थी : डॉ. कल्ला 16
  राज कंवर आचार्य
- मकर संक्रांति महापर्व 17
  राजीव अरोड़ा
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा शिविर 18
  भवेन्द्र कुमार गोयल
- युवा और राष्ट्र निर्माण 19
  हीराराम चौधरी
- नए युग के कर्णधार हैं युवा 20
  बिग्रेडियर करण सिंह चौहान
- NCC लेफ्टिनेंट जनरल हुए कैडेट से रूबरू 21
  तनवीर सिंह डऊकिया
- शिक्षा और सिनेमा 22
  डॉ. गोमती साँखला
- समूह गीतों की उपादेयता 23
  प्रमोद दीक्षित मलय
- शैक्षिक नवाचारों के साथ बढ़ते कदम : ब्लॉक सागवाड़ा 24
  राजेन्द्र कुमार पंचाल
- विद्यार्थी जीवन : स्वर्णिम काल 29
  कृष्णचन्द्र टवाणी
- सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल स्काउटिंग 30
  अनुकम्पा अरडावतिया
- शैक्षिक भौतिक परिदृश्य का बदलता स्वरूप 37
  भंवरलाल पुरोहित

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2022 25-27
- शिविरा पञ्चाङ्ग : जनवरी, 2022 27
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 28
- बाल शिविरा 38-39
- शाला प्रांगण से 40-46
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 47
  किशनलाल विश्नोई
- हमारे भामाशाह 49-50

पुस्तक समीक्षा 32-37

- सूरज में तारों की तलाश, कवि : राजेन्द्र जोशी
  समीक्षक : **संजय जनागल**
- द केसानोवा, लेखक : मनोज कुमार स्वामी
  अंग्रेजी अनुवाद : डॉ. मोनिका गढ़वाल व भूपिन्द्र नायक
  समीक्षक : **डॉ. रमेश मयंक**
- सवाई हुवै कविता, लेखक : कमल रंगा
  समीक्षक : **कासिम बीकानेरी**
- परत दर परत, लेखक : डॉ. विद्या पालीवाल
  समीक्षक : **मोनिका गौड़**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

▼ चिन्तन

कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुः भूः मा
ते सङ्गोऽस्त्व कर्माणि।।

(गीता : अध्याय 2, श्लोक 47)

केवल कर्म पर तेरा अधिकार है। फल में कभी नहीं। अतः तू कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

पाठकों की बात

- माननीय शिक्षामंत्री एवं शिक्षा राज्यमंत्री का स्वागत... अभिनंदन शिविरा माह दिसम्बर अंक का वैशिष्ट्य है। आदरणीय निदेशक महोदय के 'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ' में हमारी प्रतिबद्धता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व 'अपनों से अपनी बात' में राजस्थान को शिक्षा का सिरमौर बनाएंगे.... माननीय शिक्षामंत्री महोदय की मनोभावना सराहनीय है। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021 की विशेष रपट पढ़ने को मिली, यह खुशी का विषय है। प्रेरक प्रसंग बड़ा मार्मिक व हृदयस्पर्शी है। आदरणीय राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद देशरत्न का अपने सामान्य चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से क्षमा मांगना हृदय को प्रभावित कर गया। 3 दिसम्बर, 1984 को जन्मे देश रत्न श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद पर लिखा आलेख प्रत्येक शिक्षक, पाठक को आवश्यक रूप से पढ़ना चाहिए। लेखक श्री रामगोपाल राही को इसके लिए हार्दिक बधाई। श्री ओमप्रकाश सारस्वत तो शिविरा के जाने-माने लेखक हैं, सतत् रूप से लिखते हैं उन्हें भी हार्दिक बधाई। उनके लेख का विषय है मस्तिष्क एवं आत्मा की खुराक है अधिगम। नो बैग डे हर शनिवार के दिन विद्यालय में होगा, यह सराहनीय कदम है शिक्षा विभाग का। मानव अधिकार दिवस व प्लास्टिक संबंधी आलेख भी पठनीय है। शिक्षा संबंधी गाँधी के विचार एक सुन्दर आलेख है। महात्मा गाँधी की शिक्षा नीति शिक्षकों के लिए उपादेय है।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टतम मानदण्ड स्थापित करने वाले शिक्षा क्षेत्र के योद्धाओं के सम्मान समारोह की झलकियों से सुशोभित आवरण पृष्ठ के साथ माह दिसम्बर 21 की शिविरा पत्रिका को पाते ही नए वर्ष के लिए नई ऊर्जा का संचार हुआ। अपनों से अपनी बात में विभाग के नए मुखिया का यह कथन कि 'आप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन श्रेष्ठतम रूप में करते रहें, आपके हितों का ध्यान रखना मेरी जिम्मेदारी है।' ने मन में एक आश्वस्तता और निश्चिंतता का भाव भी जगाया कि शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित किए गए नए आयाम आने वाले समय में और आगे बढ़ेंगे। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन से जुड़ा सौरभ बंसल का प्रेरक प्रसंग प्रेरणादायक रहा। शैक्षिक चिंतन-ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा अधिगम को मानव मस्तिष्क एवं आत्मा की खुराक के रूप में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है जो यथार्थ में सबके लिए जानने एवं सहेज कर रखे जाने योग्य है। मानवाधिकार पर सुभाष चौधरी एवं मदनलाल मीणा के आलेख नवीन जानकारी से भरपूर थे साथ ही रामजीलाल घोड़ेला का सृजनशील बालक पहचान एवं उचित वातावरण के निर्माण से संबंधित आलेख भी शिक्षण कार्य में निपुणता लाने हेतु पथप्रदर्शक है। सृजनशीलता के विकास हेतु इसी क्रम में रोहताश का आलेख नो बैग डे भी महत्त्वपूर्ण रहा। बाल शिविरा हमेशा की तरह ही रुचिकर एवं रोमांचित कर देने वाली लगी। जफर उल्लाह खान का पुरातत्व से संबंधित आलेख विशेष एवं रोचक जानकारी लिए हुआ रहा। अन्य स्थाई स्तंभ भी हमेशा की तरह ही सूचनाप्रद लगे। टीम शिविरा का आभार।

विकास चन्द्र भारू, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का शिक्षक दिवस सम्मान समारोह की झलकियों से सुसज्जित बहुरंगी आवरण ने मन मोह लिया। माननीय शिक्षामंत्री एवं माननीय शिक्षा राज्यमंत्री का परिचयात्मक विवरण एवं शिक्षा के कार्य सम्बन्धी निष्ठा एवं संकल्प की जानकारी मिली। श्री ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा लिखित 'मस्तिष्क एवं आत्मा की खुराक है अधिगम' की सार्थकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में रोचक थी। 'कार्मिकों द्वारा योग्यता अभिवृद्धि एवं उसका अंकन' सेवाभिलेख में करवाने की सहायक निदेशक श्री मनीष महलोत द्वारा दी गई जानकारी ज्ञानवर्द्धक रही। चित्र वीथिका में विधानसभा में बाल सत्र का आयोजन एवं राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2021 के चित्रों का अंकन सुसज्जित रहा। आदेश परिपत्रों में परीक्षा प्रश्न पत्र पैटर्न का विवरण छात्रों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी एवं सार्थक है। संपादक मण्डल का आभार।

सोहनलाल डागा, बीकानेर

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

नव वर्ष अभिनन्दन...

नूतन वर्ष 2022 के शुभागमन की मंगल वेला में प्रदेश के कोने-कोने में शिक्षा व लोक चेतना की अलख जगा रहे समस्त शिक्षक भाई-बहिनों, मंत्रालयिक व सहायक कर्मचारियों का हार्दिक अभिनन्दन एवं उनके प्रति शुभकामनाएं अर्पित करते हुए मुझे आत्मिक प्रसन्नता एवं सन्तोष की अनुभूति हो रही है। वर्ष 2021 की विदाई एवं वर्ष 2022 के आगमन की यह वेला दरअसल समीक्षा एवं नियोजन की वेला है। बीते वर्ष में जो करणीय संकल्प हमने लिए थे, उनमें हम कहाँ तक सफल रहे, इस बात की समीक्षा करते हुए नवागत वर्ष में करने के लिए सुविचारित योजना बनाकर उस पर चलना प्रबंध एवं प्रशासन में समीक्षा-नियोजन-क्रियान्वयन कहलाता है। पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखकर आगे की योजना बनाकर निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य में जुटने वालों को सफलता एवं प्रतिष्ठा मिलती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस भीतर में झांकने की प्रक्रिया को शब्दों में स्वाध्याय कहा गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सब गुरुजन मेरी भावना को समझकर तदनुसार कार्यवाही करेंगे।

आप समस्त गुरुजन एक शिक्षण नियोजन डायरी संधारित करते हैं। इस डायरी में आप शिक्षण की वार्षिक से लेकर दैनिक योजना, गृहकार्य, मूल्यांकन रिपोर्ट आदि दर्ज करते हैं। यह डायरी शिक्षक के कार्यों की समीक्षा एवं नियोजन का जीवंत दस्तावेज होती है। शिक्षकों के कार्यों का दर्पण है डायरी। मैं चाहूँगा कि गुरुजन इस डायरी को विस्तारपूर्वक संधारित करें तथा विद्यालय प्रशासन इस दस्तावेज को विरासत के रूप में सहेज कर रखें। अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं संपन्न हो चुकी है। आगामी समय में बोर्ड परीक्षाएं भी होनी है। आप गुरुजनों से कुशल शिक्षण एवं आत्मीय मार्गदर्शन पाकर हमारे विद्यार्थी परीक्षाओं में उत्तम प्रदर्शन करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप गुरुजन के स्नेहिल प्रोत्साहन से हमारे विद्यार्थी स्कूल समय पश्चात् घर पर भी समय विभाग चक्र बनाकर मननपूर्वक अध्ययन के लिए प्रेरित होंगे।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

आप गुरुजन के श्रेष्ठ शिक्षण एवं मार्गदर्शन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार की इंस्पायर अवार्ड मानक योजनान्तर्गत प्रदेश के 10019 बाल वैज्ञानिकों का चयन हुआ है, वर्ष 2021-22 में राजस्थान राज्य ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इस गौरवमयी उपलब्धि के साथ देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह हम सब के लिए अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है साथ ही इससे प्रदेश के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक एवं रचनात्मक सोच की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। इस शानदान उपलब्धि के लिए आप सभी का साधुवाद।

जनवरी माह में गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती है, प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाने वाला यह महान् दिन शिक्षा का आलोक फेलाए यही कामना है। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती 12 जनवरी का प्रेरणादायी अवसर भी इसी माह में है। राष्ट्रीय त्योहार गणतंत्र दिवस के शुभावसर पर राष्ट्र निर्माण व जीवन में अनुशासन की स्थापना एवं अपने कर्त्तव्यों के श्रेष्ठ निष्पादन का संकल्प लेना चाहिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान का शिक्षा परिवार इस अपेक्षा पर सदैव खरा उतरेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ....।

(काना राम)

“ पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखकर आगे की योजना बनाकर निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य में जुटने वालों को सफलता एवं प्रतिष्ठा मिलती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस भीतर में झांकने की प्रक्रिया को शब्दों में स्वाध्याय कहा गया है। ”

रपट

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

समूचा विश्व बन गया है एक ग्लोबल विलेज : डॉ. कल्ला

❒ करणीदान कच्छावा

'विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत तोहफा है। हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए। (Scicnce is a beautiful gift for huminity. We should not distor it.)

–अब्दुल कलाम (Abdul Kalam)

कार्यक्रम पृष्ठभूमि– भारत गणतंत्र के 11वें राष्ट्रपति महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विज्ञान सम्बन्धी स्वप्न को साकार करने, बालक–बालिकाओं में वैज्ञानिक प्रयोग के प्रति रुचि व जिज्ञासा उत्पन्न कर उनके भावी वैज्ञानिक बनने का पथ प्रशस्त करने के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इसी दिशा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में बीकानेर संभाग मुख्यालय पर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र में 10 दिसम्बर, 2021 को एक नया इतिहास रच गया, जब राजस्थान के यशस्वी शिक्षामंत्री, शिक्षाविद् एवं चिंतक डॉ. बी.डी. कल्ला ने केन्द्र में पधारकर न केवल केन्द्र की गतिविधियों का ही अवलोकन किया अपितु उपस्थित विज्ञान प्रेमी व्यक्तियों से रूबरू होकर अपनी दृष्टि एवं मंगलभावना से उन्हें लाभान्वित भी किया।

स्वागत–सम्मान – इससे पूर्व केन्द्र पर पहुँचने पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. बी.डी. कल्ला का जिला विज्ञान समन्वयक एवं कार्यक्रम संयोजक भौतिक विज्ञानी करणीदान कच्छावा एवं उनकी विज्ञान टीम ने उनका भाव भीना स्वागत एवं सम्मान किया। नन्हीं बालिका शौर्या कच्छावा ने तिलक एवं अक्षत लगाकर मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय का अभिनंदन किया। बड़े भावपूर्ण क्षण थे ये। यह राजस्थान की 'अतिथि देवो भवः' परम्परा का ही प्रभाव था कि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के कार्यक्रम स्थल पर पहुँचने के साथ ही भावपूर्ण करतल ध्वनि शुरू हुई जो लगातार चलती रही। आखिर माननीय शिक्षामंत्री बीकानेर मूल के हैं, तो कई गुना हर्ष एवं जोश उपस्थित विज्ञान प्रेमियों में संचरित होना ही था। हर कोई माननीय डॉ. कल्ला साब तक पहुँचना तथा अपने मन में बसे उत्तम आत्मीय सम्मान भाव उन तक पहुँचाना चाहता था। उन्होंने स्टेज से सबका अभिवादन स्वीकार किया। उनकी सरलता सदैव सराहनीय एवं अनुकरणीय रही हैं।

भावपूर्ण उद्‌बोधन– अपने भावपूर्ण सम्बोधन में माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने कहा कि आज का युग विज्ञान एवं तकनीक का विस्मयकारी युग है। नए–नए प्रयोगों के कारण आज समूचा विश्व एक ग्लोबल विलेज के रूप में सिमट गया है। आपने कहा कि वैज्ञानिक आविष्कारों से वैचारिक आदान–प्रदान तथा समन्वय सस्ता, सुलभ एवं आसान हो गया है। आपने हर्ष प्रकट करते हुए फरमाया कि हमारा देश वैज्ञानिक विकास की दृष्टि से विश्व के अग्रिम देशों में शुमार है। वैज्ञानिक विकास के मूल में मानव कल्याण एवं सर्वजन हित का उत्तम भाव होना चाहिए। विज्ञान मानव विकास के लिए है न कि विनाश के लिए।

राजीव गाँधी का सपना– ज्ञान–विज्ञान की महान भारतीय परम्परा का जिक्र करते हुए माननीय शिक्षामंत्री महोदय ने कहा कि बीकानेर क्षेत्र के विद्यार्थी भी विज्ञान को कॅरियर के रूप में अपनाए तथा देश और दुनिया को नूतन वैज्ञानिक आविष्कार और सिद्धांत दें। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने देश के अलग–अलग क्षेत्रों में विज्ञान एवं अंतरिक्ष विज्ञान से सम्बन्धित शानदार राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किए तथा वहाँ नामचीन वैज्ञानिकों को काम करने का अवसर दिया। पं. नेहरु का ज्ञान–विज्ञान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान अप्रतिम है। राष्ट्र उनका ऋणी है। आज हम मंगल ग्रह पर जाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। कम्प्यूटर क्रांति के पुरोधा भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री रहे माननीय राजीव गाँधी ने 21वीं शताब्दी का स्वप्न देखा था। आज हम जितना भी वैज्ञानिक प्रचार–प्रसार देख रहे हैं, वह सब श्रद्धेय राजीव गाँधी जी की ही देन है।

अद्‌भुत पुष्प वृष्टि– कार्यक्रम स्थल पर पहुँचने पर क्षेत्रीय अनुसंधान अधिकारी श्री सुनील कुमार बोड़ा एवं जिला विज्ञान समन्वयक व समारोह के संयोजक करणी दान

Rajasthan Education Department

कच्छावा ने मुख्य अतिथि महोदय की भावपूर्ण अगुवाई की तथा वैज्ञानिक ढंग से अद्भुत पुष्प वर्षा की गई। चारों तरफ का वातावरण बहुत ही गरिमामय एवं खूशबूमय हो गया। उपस्थित महानुभावों के दिलों दिमाग में ये क्षण कभी विस्मृत नहीं हो सकेंगे।

व्यक्तित्व मुख्य अतिथि का– माननीय शिक्षामंत्री महोदय डॉ. बी. डी. कल्ला साब मूलतः शिक्षक हैं। राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था में उनके अहम योगदान से हर नागरिक परिचित हैं। शिक्षा विभाग उनके लिए नया एवं उनके लिए शिक्षा विभाग नया नहीं है। वे पूर्व में भी राजस्थान शिक्षा विभाग के मुखिया–शिक्षामंत्री रहे हैं। बीकानेर और राजस्थान ही नहीं बल्कि भारत की शिक्षा नीतियों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में उनका अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे जितने गहरे विचारक एवं अद्भुत विद्वान है, उतने ही सरल एवं मृदुभाषी भी हैं। शिक्षा विभाग की बागडोर डॉ. कल्ला साब के हाथ में होना अपने आप में सुखद है।

विज्ञान पार्क का प्रस्ताव– समारोह स्थल पर विज्ञान प्रेमी सज्जनों से बातचीत में आपने बताया कि राज्य सरकार द्वारा बीकानेर में विज्ञान उद्यान (Science Park) विकसित किया जाना प्रस्तावित है। जिला विज्ञान समन्वयक कच्छावा ने उनकी इस घोषणा के लिए आभार प्रकट करते हुए निवेदन किया कि शीघ्र ही इसे कार्य रूप दिया जाना चाहिए। बीकानेर की धरती भामाशाहों, सन्त–सूरमाओं एवं शिक्षक–शिक्षार्थियों की पावन धरा है। हम दिन–रात एक करके विज्ञान पार्क को यादगार स्वरूप प्रदान करने में कोई कसर नहीं रखेंगे। उपस्थित महानुभावों ने भी विज्ञान पार्क की बीकानेर में स्थापना किए जाने की घोषणा का जोरदार करतल ध्वनि से स्वागत करते हुए माननीय शिक्षामंत्री महोदय के प्रति आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि महोदय ने सुनियोजित कार्यक्रम एवं स्वागत सत्कार के लिए कार्यक्रम समन्वयक श्री करणीदान कच्छावा के प्रति प्रसन्नता एवं आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के क्षेत्रीय अनुसंधान अधिकारी श्री सुनील कुमार बोड़ा ने कहा कि विज्ञान और तकनीक का हमारे दैनिक जीवन पर गहरा प्रभाव

है। प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा सात जिलों में करवाई जा रही गतिविधियों की भी जानकारी दी।

आभार एवं धन्यवाद– और अब आया अवसर मुख्य अतिथि महोदय एवं आगन्तुक महानुभावों के प्रति आभार एवं धन्यवाद प्रकट करने का। मुख्य अतिथि महोदय को ऐसा कुछ भेंट करने का कि जिससे उन्हें इस क्षेत्रीय कार्यालय में आने की स्मृति सदैव बनी रहे। शब्दों में आभार प्रकट करते हुए जिला समन्वयक एवं कार्यक्रम संयोजक करणीदान कच्छावा ने मंत्री महोदय के द्वारा उनके अनुरोध को स्वीकार कर केन्द्र में पधारने एवं आत्मीय मार्गदर्शन के लिए विनम्र आभार प्रकट किया। श्री कच्छावा ने आशा प्रकट की कि भविष्य में भी मान्यवर उनका सम्बलन एवं मार्गदर्शन करने के लिए कृपा करते रहेंगे। श्री कच्छावा ने उपस्थित सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर स्व. नंदलाल जी कच्छावा परिवार, गंगाशहर की ओर से प्रीति सोलंकी ने डॉ. बी.डी. कल्ला साब का अपने हाथ से बनाया हुआ पोट्रेट भेंट किया। इस प्रकार बहुत ही खुशनुमा वातावरण में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इनका मिला सान्निध्य– विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सौजन्य से आयोजित इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में बीकानेर के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री राजकुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) श्री सुरेन्द्र सिंह भाटी, सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक श्री विजय शंकर आचार्य, सर्वश्री गिरिजा शंकर आचार्य, अनिल रंगा, खुशवंत सिंह भाटी, अजरा खान, विपिन स्वामी, जितेन्द्र सिंह, लतीफ पठान, रोहिताश कांटिया, विष्णु पुरोहित, प्रमोद शर्मा, बृजेश शर्मा, रजनीश भारद्वाज, प्रदीप जैन, रवि आचार्य, नीलम नौलखा, बंशीलाल भाटी, राज कुमार भट्ट, गिरधारी दरगन, नरोत्तम स्वामी, लक्ष्मीनारायण, कैलाश प्रजापत, रामनिवास कस्वां, अनिल दैया, मोहम्मद मुसा एवं बड़ी संख्या में विज्ञान प्रेमी महानुभाव एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

कुशल एवं प्रभावी संयोजन–संचालन– विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित इस समारोह की कार्य योजना एवं संयोजन जिला समन्वयक करणीदान कच्छावा एवं कुशल संचालन ज्ञानायाम के प्रधान संपादक तथा प्राइवेट एज्यूकेशनल इंस्टीट्यूट्स प्रोसपैरिटी एलायंस (पेपा) के प्रदेश समन्वयक श्री गिरिराज खेरीवाल ने किया। कार्यक्रम की मधुर स्मृतियाँ मन में बसाए माननीय अतिथि महानुभाव एवं आगन्तुक महानुभावों ने कार्यक्रम स्थल से प्रस्थान किया।

व्याख्याता (भौतिक शास्त्र)
राजकीय चौपड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)
मो: 9214633947

Rajasthan Education Department

जयंती विशेष

भारतीय संस्कृति के पुरोधा : स्वामी विवेकानंद

❒ कमलेश कटारिया

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य स्वामी विवेकानंद के विराट व्यक्तित्व से परिचित आज भारतवर्ष ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व है, भारतीय संस्कृति व सभ्यता के आदि पुरुष या पुरोधा कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकता (अब कोलकाता) में हुआ था; इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माँ का नाम भुवनेश्वरी देवी था। इनके बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस इनके गुरु थे। नरेन्द्र आध्यात्मिकता के प्रबल समर्थक थे। ये अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवों में परमात्मा का ही अस्तित्व है। इसलिए मानव अगर परमात्मा की सेवा करना चाहें तो इस धरती पर उपस्थित जीवों की सेवा करके परमात्मा की सेवा का पुण्य कमा सकता है। कहा भी गया है – नर सेवा नारायण सेवा।

बालक नरेन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। इनकी माँ ने उच्च कोटि के संस्कार प्रदान किए। इनका परिवार पाठ-पूजा व कथा वाचन में निपुण था, अतः नरेन्द्र का बचपन धार्मिक प्रवृत्ति अर्थात पुराण, रामायण, महाभारत व अनेक कथाओं के कारण उनमें भारतीय संस्कृति व सभ्यता के संस्कार गहरे होते गए।

ऐसे धार्मिक व आध्यात्मिक वातावरण के कारण बालक नरेन्द्र के मन में भी ईश्वर को जानने की लालसा व जिज्ञासा उत्पन्न हुई। नरेन्द्रनाथ दत्त को विवेकानंद नाम राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के खेतड़ी के राजा अजित सिंह ने दिया। राजा अजित सिंह ने स्वामी विवेकानंद को अपना गुरु माना। राजा अजीतसिंह ने शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी जी की वित्तीय मदद भी की थी।

स्वामी विवेकानंद ने मैकाले की शिक्षा पद्धति का विरोध किया और कहा कि ऐसी शिक्षा समाज को व राष्ट्र को उच्च शिखर पर नहीं

पहुँचा सकती है जो केवल बाबुओं का निर्माण करें। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक,आर्थिक व राजनीतिक रूप से विकास करें अर्थात बालक का सर्वांगीण विकास ही वास्तविक रूप में शिक्षा है।

स्वामी विवेकानंद दर्शन, धर्म, इतिहास, विज्ञान, कला और साहित्य के प्रकांड पंडित थे। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, महाभारत, रामायण व पुराणों के अलावा अनेक हिंदू धर्म ग्रंथों व शास्त्रों में इनकी गहन रुचि थी। स्वामी विवेकानंद भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी पूर्ण रुचि रखते थे।

स्वामी विवेकानंद के बारे में विलियम हेस्टी (महासभा संस्था के प्रिंसिपल) ने लिखा कि नरेन्द्र वास्तव में एक जीनियस है। मैंने काफी विस्तृत व बड़े-बड़े इलाकों में यात्रा की है लेकिन उनकी जैसी प्रतिभा वाला एक भी बालक कहीं नहीं देखा। यहाँ तक कि जर्मन विश्वविद्यालयों के दार्शनिक छात्रों में भी नहीं।

स्वामी विवेकानंद के मुख का तेज व अपनी भारतीय संस्कृति के विचारों व आयामों के लिए आज संपूर्ण विश्व कायल हैं। स्वामी विवेकानंद ने 1893 में अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया तथा वहाँ पर अपने भारतवर्ष का नाम व सिर गर्व के साथ ऊँचा किया। धर्म सम्मेलन में संबोधन के दौरान भारतीय संस्कृति व सभ्यता को जीवित रखने के लिए उनके श्रीमुख से पहले शब्द –'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों थे।'

स्वामी विवेकानंद जी के भारतीय ही नही वरन् विदेशी लोग भी उनके अनुयायी थे। एक बार की बात है कि एक विदेशी महिला स्वामी जी को देखकर दंग रह गई; कि ऐसे तेजस्वी व्यक्ति भी भारत में रहते हैं। वह स्वामी जी के पास आकर बोली कि आप मेरे से शादी कर लो जिससे मेरे भी आपके जैसा तेजस्वी पुत्र पैदा होगा। यह सुनकर स्वामी जी ने बड़े धैर्य व सहनशीलता से उत्तर दिया कि हे मात! आप मुझे पुत्र मान लो और मैं आपको माता मान लूं जिससे आपको तेजस्वी पुत्र मिल जाएगा और मुझे माँ मिल जाएगी। यह उत्तर सुनकर विदेशी महिला दंग रह गई। स्वामी जी के जन्म दिवस 12 जनवरी पर प्रतिवर्ष युवा दिवस व कॅरियर डे भी मनाया जाता है। विद्यालयों में इस दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाए जाते हैं तथा विद्यार्थियों को अपने कॅरियर संबंधी मार्गदर्शन दिया जाता है। स्वामीजी ने युवाओं के संदर्भ में कहा था कि युवा देश का भविष्य है। युवा अगर ठान ले तो पत्थर भी पानी बन जाता है। स्वामी जी ने युवाओं को यह संदेश दिया कि 'उठो जागो और अपने लक्ष्य प्राप्ति तक रूको मत।'

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को सदैव अपनी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रहित को सर्वप्रथम रखकर कार्य करने की प्रेरणा दी जिससे राष्ट्र का कल्याण हो। हम सब स्वामी विवेकानंद के आदर्शो व पदचिह्नों पर चलकर उनके सपनों का भारत और भारत को पुनः विश्वगुरु बनाएं, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उनकी जयंती पर हम सभी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) तिंवरी, जोधपुर (राज.)
मो: 9783182683

जयंती विशेष

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

❒ विजय सिंह माली

12 जनवरी 1863 पौष कृष्ण सप्तमी को 6 बजकर 33 मिनट पर ख्याति प्राप्त वकील विश्वनाथदत की धर्म पत्नी भुवनेश्वरी देवी की कोख से कलकता में जन्मे, दुर्गाचरण, वीरेश्वर, विदिषानंद, नरेन्द्र, बिले नाम से जाने गए, स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका में आयोजित सर्वधर्म परिषद में भाग लेकर हिन्दू धर्म संस्कृति का लोहा मनवाया। विवेकानंद एक साहित्यकार, उत्कृष्ट पत्र लेखक, गायक, वादक, प्रखर वक्ता, विद्वान पंडित, पाककला में निपुण थे। राजस्थान को अपना दूसरा घर मानने वाले इस योद्धा संन्यासी ने 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 वर्ष 5 महीने 22 दिन में इस जगत को अलविदा कह दिया।

स्वामी विवेकानंद एक महान शिक्षा शास्त्री, शैक्षिक चिंतक, विचारक थे। उन्होने शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हर बिन्दु पर अध्ययन कर अनुभव के आधार पर विचार दिया। विवेकानंद के अनुसार मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। ज्ञान चाहे वह लौकिक हो अथवा आध्यात्मिक, मनुष्य के मन में है। उनके अनुसार आत्मा में अनंत शक्ति है। बालक स्वयं अपने को सिखाता है। हम उसे अपने ही ढंग में आगे बढ़ने में सहायता दे सकते हैं। शिक्षक को शिक्षित करने की प्रणाली का केवल प्रबोधन की भूमिका निभानी है। लड़कों को ठोक पीटकर शिक्षित करने का अन्त कर देना चाहिए। माता-पिता के अनुचित दबाव के कारण बालकों को विकास का स्वतंत्र अवसर प्राप्त नही होता, स्वाभाविक विकास नही होता। हमें निषेधात्मक नही विधायक विचार रखने चाहिए। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बनें, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरौ पर खड़ा हो सके। सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य मनुष्य निर्माण ही हो। जिस प्रक्रिया से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम है शिक्षा।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता, मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण भार है। एकाग्रता के लिए ब्रह्मचर्य की आवश्यकता है। श्रद्धा ही सारी उन्नति का मूल है। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। मनुष्य का चरित्र उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों की समष्टि है, उसके समस्त झुकावों का योग है। गलतियों का कारण है अज्ञान। अपने चरित्र का निर्माण करो। सम्पूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य है व्यक्तित्व को गढ़ना। सारी शिक्षा का ध्येय है मनुष्य का विकास। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ है -'गुरु गृहवास'। शिक्षक अर्थात गुरु के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा नही हो सकती। शिष्य को बाल्यावास्था से ऐसे गुरु के साथ रहना चाहिए जिसका चरित्र जाज्वल्यमान अग्नि के समान हो, जिससे उच्चतम शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के सामने रहे। ज्ञान का दान मुक्त हस्त होकर, बिना कोई दाम लिए करना चाहिए अर्थात शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिए। शिक्षक को शास्त्रो का मर्म ज्ञात होना चाहिए, वह निष्पाप होना चाहिए, उसे स्वार्थ सिद्धि के लिए शिक्षा नही देनी चाहिए। इसी प्रकार शिष्य सत्य को जानने की इच्छा रखने वाला, इन्द्रियों को नियंत्रित करने में समर्थ, महान सहन शक्ति, स्वाधीनता प्रिय होना चाहिए। गुरु को शिष्य की प्रवृत्ति में अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिए। शिष्य को भी गुरु पर विश्वास होना चाहिए। गुरु के साथ वैसा ही सम्बन्ध हो जैसा पूर्वज के साथ वंशज का।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार धर्म तो शिक्षा का मेरुदंड है। यहाँ धर्म का आशय धार्मिक मत सें नही है। उन्होने महावीर श्री हनुमान के चरित्र को अपना आदर्श बनाने की बात कही। बल पुण्य है और दुर्बलता पाप। उपनिषद् का प्रत्येक पृष्ठ बल की महिमा बताता है। उपनिषद् शक्ति की खान है। हृदय को सुसंस्कृत बनाओ। हृदय से ईश्वर बोलता है। अनासक्त बनो। कठिनाई दूर करने के लिए अभ्यास करो। हम वही पाते हैं जिसके हम पात्र है। धर्मान्धता एक रोग है। साधनो की ओर उतना ही ध्यान देना आवश्यक है जितना साध्य की ओर।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार स्त्रियों की बहुत सी कठिन समस्याएँ है। शिक्षा ही स्त्रियों की समस्याओं को हल करेगी। स्त्री शिक्षा का विस्तार करना चाहिए। धार्मिक शिक्षा, चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन इन्हीं की ओर ध्यान देना चाहिए। भारतवर्ष की स्त्रियों को सीता के पदचिह्नों का अनुसरण करके अपनी उन्नति करनी चाहिए। स्त्रियों को त्याग की शिक्षा, लौकिक शिक्षा व आत्मरक्षा की शिक्षा दी जानी चाहिए। स्वामी जी के अनुसार देश उसी अनुपात में उन्नत हुआ करता है, जिस अनुपात में वहाँ के जनसमुदाय में शिक्षा और बुद्धि का प्रसार होता है। आध्यात्मिक सत्यों को सब की पहुँच के भीतर ला दो। मातृभाषा द्वारा शिक्षा दो। संस्कृत शिक्षा भी साथ-साथ चलनी चाहिए। शिक्षा का घर-घर प्रचार कर जीवन के हर पहलू को उन्नत बना दो। कर्म ही पूजा है। अपना कर्त्तव्य पालन करो। अनासक्त होकर कर्म करो।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सादड़ी,
पाली (राज.)
मो. 9829285914

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

जयंती विशेष

स्वाधीनता समर के नरसिंह : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

❒ डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'

जनजीवन का विष पीने वाले,
अमृत निर्झर बन जाते हैं।
वे सबके मानस मंदिर में,
चिरकाल सुशोभित होते हैं।।

मातृभूमि भारतवर्ष के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले अनगिनत महापुरुषों का आजादी के अमृत महोत्सव में सादर स्मरण समीचीन ही है। इनमें युगपुरुष सुभाषचन्द्र बोस अग्रगण्य हैं, जिन्हें गजब के नेतृत्व के कारण ही देश ने 'नेताजी' कहा। भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में आपका अप्रतिम योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा, देश की युवा पीढ़ी इनके बहुआयामी व्यक्तित्व से सदा प्रेरित होती रहेगी।

नेताजी का जन्म उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी, 1897 को हुआ। आपके पिताश्री जानकीलाल बोहरा सुप्रसिद्ध वकील एवं माँ प्रभावती देवी धार्मिक प्रकृति की थी। माता के प्रभाव से ही ये रामकृष्ण परमहंस एवं उनके अनन्य शिष्य विवेकानंद में अपार श्रद्धा रखते हुए विराट चरित्र के स्वामी बने। आत्मकथा में आप लिखते हैं-'स्वामी विवेकानंद के चित्र तथा शिक्षाओं ने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी।'

5 वर्ष की आयु में कटक के एंग्लो इंडियन स्कूल में भर्ती होकर आपने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। 1913 में मैट्रिक में प्रथम श्रेणी रहे, फिर कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में इंटर में प्रथम रहे। 1919 में बी. ए. ऑनर्स दर्शनशास्त्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर पिताज्ञा से इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। यहाँ से 1920 में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो, चौथे स्थान से आई. सी. एस. नामक विश्व की कठिनतम परीक्षा में चयनित हुए और अव्वल दर्जे के अधिकारी बने। किन्तु जन्मभूमि को 'स्वर्गादपि गरीयसी' मानने वाले नेताजी ने भारत माँ को पराधीनता के पाश से मुक्त कराने के लिए इस ऐशो आराम की जिंदगी को तिलांजलि दे दी और कूद पड़े राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम में। यहाँ उनके अदम्य साहस के आगे किसी अन्य की

क्या बिसात, स्वयं उन्हीं की अस्वस्थता भी नतमस्तक हो गई और यह माई का लाल राणा प्रताप की भांति अंतिम सांस तक मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहा।

'पूत के पग पालने' के अनुसार सुभाष बाबू शुरू से ही छात्रवृत्ति आदि प्रकरणों में एंग्लो इंडियन एवं भारतीय बच्चों में बढ़ते भेदभाव को बर्दाश्त नहीं करते थे। आप सारे देशवासियों को स्वजन मानते थे। इन्हीं की बनाई बालसेना ने कटक के हैजा पीड़ितों की बहुत सेवा की। टाटा कंपनी के मजदूर आंदोलन में आपकी सक्रिय भूमिका रही। ग्रीष्मावकाश में नेताजी कभी तो भारत भ्रमण कर आते और कभी संस्कृत के सैंकड़ों नीति श्लोक याद कर लेते। वर्तमान झारखंड की राजधानी रांची से सुभाष बाबू का गहरा नाता रहा, तभी तो उनकी याद में रांची में 'नेताजी नगर' बसाया गया है। रांची से वे अपनी माता को पत्र लिखते थे। एक अद्भुत पत्र में आपने लिखा-'हे जननी, क्या आज अभागी भारत माँ का एक भी सपूत ऐसा नहीं, जो स्वार्थरहित हो? ऐसे में देश व धर्म असुरक्षित है। वे आर्यवीर आज कहाँ हैं, जो भारत माँ के लिए सानन्द सर्वस्व बलिदान करते थे। प्रभु से प्रार्थना है कि मैं संपूर्ण जीवन दूसरों की सहायता में बिता सकूं।'

इस महानायक ने 1921 में आई. सी. एस. का परित्याग करते हुए कहा था-'नौकरशाही का सदस्य न होकर मैं सामान्य व्यक्ति रहूँ, तो अपने देश की सेवा और अच्छी तरह से कर सकता हूँ।' तब भारत लौटने पर महान नेता चितरंजनदास ने भव्य स्वागत कर इनको नेशनल कॉलेज का प्रिंसिपल बना दिया। इसी साल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से इन्हें छह माह की सजा मिली। आपने 1922 में बंगाल में बाढ़ पीड़ितों की तन, मन, धन से खूब मदद की। 1924 में ब्रिटिश सरकार ने बंगाल अध्यादेश पेश किया, जिससे बिना मुकदमा चलाए ही किसी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता है। इसी के तहत सुभाष अलीपुर जेल में रहे, जहाँ से आपको बरामपुर और फिर मांडले जेल में भेज दिया गया। यहाँ पर इन्होंने अनेक यातनाएँ सहीं, पर यह आजादी का परवाना लक्ष्य से नहीं डिगा। बीमार होने पर इनकी रिहाई के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र में हड़तालें हुई एवं रिहा होने पर आपका अभूतपूर्व अभिनन्दन हुआ। 1928 में सुभाष गाँधीजी से मिलने गए। इसी वर्ष आप कोलकाता के मेयर चुने गए। थोड़े समय बाद ही इन्हें पुन: जेल हो गई, जहाँ से ये 4 अप्रेल, 1931 के 'गांधी-इरविन समझोते' से मुक्त हुए। 1933 में क्षय रोग होने से इनको इलाज हेतु वियेना (ऑस्ट्रिया) भेजा गया। वहाँ पर भारतीय एसेंबली के प्रधान बिठ्ठल भाई पटेल आपसे इतने प्रभावित हुए की स्वाधीनता के प्रचारार्थ एक लाख रुपये का ट्रस्ट बनाकर नेताजी को इसका ट्रस्टी बना दिया।

जुलाई, 1933 में भारत माँ का यह सपूत प्राग (चेकोस्लोवाकिया) गया, लौटते ही 1936 में फिर गिरफ्तार कर लिया गया। एक बार पुन: इनके समर्थन में हड़तालें हुई। आपकी तबियत भी बिगड़ने लगी। तो मार्च, 1937 में इन्हें छोड़ दिया गया, फिर स्वास्थ्य लाभार्थ ये यूरोप चले गए। अगले वर्ष सुभाष को कांग्रेस अध्यक्ष चुना गया। कांग्रेस स्थापना के 51 वें वर्ष में 51 बैलों

की जोड़ी जूते रथ में नेताजी का जुलूस निकला। 20 जुलाई, 1939 को आप त्रिपुरा कांग्रेस अध्यक्ष बने। तब 106 डिग्री ज्वर होने से स्ट्रेचर पर लेटकर भी ये समारोह स्थल पर पहुँचे। ब्लेक हॉल स्मारक (कोलकाता) हटाने को आन्दोलन करने पर इन्हें नजरबंद किया गया। 15 जनवरी, 1941 को आप छद्मवेश में निकले तथा अफगान होते हुए मास्को व बर्लिन पहुँचे। मास्को में स्टालिन से मिले, तो बर्लिन में इन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के जयघोष के साथ 'आजाद हिन्द फौज' बनाई। इसी नाम से आजाद हिन्द कोष व आजाद हिन्द रेडियो भी आपने स्थापित किए। इसी नाम वाली जापान स्थित फौज को सुभाष बाबू ने कहा- 'सारे भारतीयों को भारत की मुक्ति हेतु सर्वस्व अर्पित कर देना चाहिए, भारत के मुक्त होने का दिन दूर नहीं।' दमकते चेहरे वाले ये नरसिंह लड़ाई में जाने से सैनिकों संग भोजन करते थे। राष्ट्रीय ऐक्य पर नेताजी ने कहा-'इसके लिए एक सी भाषा हिन्दी , एक सी वेशभूषा, एक सा आहार आदि को दृढ़ता से अपनाना होगा।' जनाधिक्य पर वे बोले-'जहाँ गरीबी, भूख, बीमारियाँ इत्यादि शिकार बना रही हैं, वहाँ एक दशाब्दी में तीन करोड़ आबादी बढ़ना हमें अस्वीकार्य है।' भारतीय नारी पर इनका विचार था-'मैं सर्वसमर्थ भारतीय नारियों की एक टुकड़ी बनाना चाहता हूँ, जो झांसी की रानी की तरह तलवार उठाए, मौत से जूझे।' युवाओं को आपने कहा-'आपके पास एक स्वस्थ शरीर, सुदृढ़ चरित्र एवं गतिशील मस्तिष्क होना चाहिए।' द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीयों को जेल होने से नेताजी ने जापान से समझौता किया, जिसके अनुसार जापान से जीते हुए दो द्वीप आजाद हिन्द फौज को सौंपे गए। 5 जुलाई, 1943 को सिंगापुर के टाउनहॉल के सामने विशाल परेड हुई, जहाँ आपने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। सहस्रों लोगों ने रक्तरंजित हस्ताक्षर कर प्रतिज्ञा-पत्र आप को सौंपे। 7 जनवरी, 1944 को आजाद हिन्द फौज ने कूच किया और कोहिमा पहुँची। विश्वयुद्ध में जापान के हार जाने से सुभाष रंगून से बैंकाक चले गए। सेल्युलर जेल, पोर्ट ब्लेयर अर्थात् कालापानी (संप्रति राष्ट्रीय स्मारक) के समक्ष 30 जनवरी, 1943 को नेताजी ने तिरंगा फहराया और फिर 23 अगस्त, 1945 को जापान रेडियो ने खबर दी कि 18 अगस्त, 1945 को विमान हादसे में भारत माँ का यह लाडला चल बसा। कुछ लोगों के अनुसार यह राष्ट्रभक्त लंबे अर्से तक जीवित रहा था।

सारतः भारत के स्वाधीनता समर में सुभाष बाबू का बहुविध सहयोग रहा। जन्मभूमि के मुक्त्यार्थ आपने अपना अशेष जीवन होम दिया। वे स्वयं के लिए नहीं जीए, इसीलिए तो गृहस्थ बने ही नहीं। स्वदेश में ही नहीं, परदेश में रहकर भी भारतमाता की स्वतंत्रता के लिए जतन करते रहे। वे सदा समष्टि के लिए व्यष्टि के बलिदान के हामी रहे। लक्ष्य प्राप्ति हेतु जीवनभर पिसते रहे। कितनी ही बार जेल में डाल दिए गए। अपने रूग्र तन के आगे चुस्त मन को कभी घुटने नहीं टेकने दिए। हम कभी नहीं भुला सकते नेताजी के दौड़धूप भरे कार्यों और वैचारिक आंदोलन को। उनके वैविध्यपूर्ण विचार भाषणों, पत्रों, रेडियो प्रसारणों इत्यादि में व्यक्त हुए हैं। तत्कालीन विश्व की श्रेष्ठत्तम परीक्षा में उच्च स्थान पर रहकर भी नौकरी त्यागने वाले सुभाष ने देशबंधु चितरंजनदास को लिखा-'मेरे पास भारतमाता की बलिवेदी पर चढ़ाने हेतु अधिक नहीं, बस मेरी अंतरात्मा व कृशकाया ही है। मंशा है कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्वतंत्रता प्रेरक साहित्य की छोटी-छोटी पुस्तकें मुफ्त बंटे।'

वस्तुतः भारत की आजादी के अमृत महोत्सव पर यहाँ एक महावतार की महागाथा का विहंगावलोकन करने का प्रयास किया है। नेताजी की स्मरणांजलि में हम संकल्प लें कि भारतवर्ष को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ाएंगे। एतदर्थ अचूक उपाय है कि हम सभी स्व-स्व दायित्वों को पूरी निष्ठा से पूर्ण करें। जैसा कि सुभाष बाबू की प्रतिमा 'एवरडीन स्मारक' (अंडमान निकोबार) पर पुष्पांजलि अर्पित करते समय उन्हीं की उक्ति बरबस याद आती है- 'वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं।'

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतहनगर,
उदयपुर (राज.)-313205
मो: 9602329966

गणतन्त्र

❒ जगदीश चन्द्र शर्मा

संविधान के बीजमंत्र से,
पल्लवित, पुष्पित है गणतंत्र।
भ्रातृभाव और लोकतंत्र से,
सतत् सुविकसित है गणतंत्र।।
आ गई ये छब्बीस जनवरी,
गणतंत्र का जश्न मनाने को,
भूले-बिसरे गीत, तराने,
फिर से याद दिलाने को।
नगर-नगर और गांव-शहर में,
कोई शक्ति जगाने को,
बच्चे, बूढ़े और जवानों में,
राष्ट्र-भक्ति जगाने को।
संविधान के बीजमंत्र.....
पुलकित बचपन, हर्षित यौवन,
नृत्यरत् शृंगार है,
बुढ़ापे के झर्झर तन में भी,
नवरक्त संचार है।
तिरंगे के तीन रंग से,
हम सब ये संकल्प करें,
त्याग, तपस्या और तर्पण से,
वतन का कायाकल्प करें।।
संविधान के बीजमंत्र......
आजादी के खुले आँगन में,
गणतंत्र का दर्शन होता है,
संविधान के हर पन्ने में,
लोकतंत्र का वर्णन होता है।
अनेकता में एकता के,
मूलमंत्र का पाठ करें,
आओ हम सब मिलकर,
''राष्ट्र प्रथम'' का नाद करें।।
संविधान की बीजमंत्र.....

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा.वि. महुआ (मांडलगढ़)
जिला-भीलवाड़ा (राज.)
मो. 9413863435

जयंती विशेष

दृष्टि दिव्यांगों की शिक्षा का आधार बनी ब्रेल लिपि

❒ हेमेन्द्र कुमार सोनी

दृष्टिबाधितों के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक उत्थान एवं पुनर्वास में यदि कोई महत्त्वपूर्ण पहलू है तो इनकी समकालीन शिक्षा व यथायोग्य प्रशिक्षण। इस हेतु उस सशक्त स्पर्श लिपि का नि:सन्देह योगदान है जिसे ब्रेल लिपि कहा जाता है, जिसके आविष्कारकर्त्ता फ्रांस के महान शिक्षाविद् तथा अन्वेषक लुई ब्रेल थे जो स्वयं दृष्टि बाधित थे। लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी 1809 में फ्रांस की राजधानी पेरिस से 20 किलोमीटर दूर एक छोटे से गाँव कुब्रे या कुप्रे में हुआ। इनकी माता का नाम मोनिस्यु तथा पिता का नाम साइमन ब्रेल था जो अपनी आजीविका चमड़े के व्यवसाय यथा घोड़ों के लिए काठी, जीन व चमड़े की वस्तुएँ आदि का निर्माण करते थे। लुई ब्रेल उनकी तीसरी संतान थी।

ये जन्मान्ध नही थे बल्कि तीन वर्ष में एक घटना के कारण उनकी नेत्र ज्योति जाती रही। पिता की कार्यशाला में बाल क्रीड़ा करते समय उनकी एक आँख में लोहे का नुकीला सुवा लगने के कारण एक आँख चोट से जख्मी हो गई जिसके उपचारार्थ अभिभावकों ने यथासम्भव उपचार के पूर्ण प्रयास किया किन्तु सभी चिकित्सीय प्रयास विफल होते रहे और लुई ब्रेल की एक आँख की ज्योति समाप्त हो गई। अब वे एक आँख से ही देख पाते थे लेकिन कुछ समय बाद संक्रमण के कारण शनै:-शनै दूसरी आँख की नेत्र ज्योति भी जाती रही। इस प्रकार से लुई ब्रेल आठ वर्ष की आयु तक आते-आते पूर्ण रूप से दृष्टि दिव्यांग हो गए। अब लुई का खुशहाल जीवन रंगहीन व अन्धकारमय हो गया जो संघर्ष और परिवर्तन की ओर अग्रसर हुआ। यह कोई साधारण बालक नही था। ये मेधावी छात्र थे। उनके मन में संसार से संघर्ष करने की प्रबल इच्छा शक्ति जाग्रत हुई। इनकी शिक्षा-दीक्षा अनौपचारिक रूप से घर पर आरम्भ हुई किन्तु औपचारिक शिक्षा हेतु वेलेन्टाइन हॉय द्वारा दृष्टिबाधितों के लिए स्थापित विद्यालय रायल इन्स्टीट्यूट फॉर ब्लाइन्डस पेरिस में उनका

1819 में प्रवेश हुआ। यहाँ पर वेंलटीन होऊ नामक लिपि से अध्ययन कराया जाता था जिसके माध्यम से लुई ने गणित, भूगोल और इतिहास का अध्ययन किया। सन् 1821 में संस्थान में एक पूर्व सेवानिवृत सैनिक कप्तान चार्ल्स बारबियर ने इनके विद्यालय का दौरा किया और उनके उद्बोधन से लुई को पता चला की शाही सेना के सैनिकों के लिए कूटलिपि का विकास किया गया जिसकी सहायता से सैनिक अंधेरे मे भी टटोलकर संदेशों को पढ़ लेते हैं। अंधेरे मे डॉट तकनीक से पढ़ी जाने वाली नाइट राइटिंग व सोनोग्राफी लिपि कहलाती थी। यह लिपि उभरी हुई तथा 12 बिन्दुओ पर आधारित थी। एक बार कप्तान के भाषण से लुई ब्रेल को दृष्टिबाधितों के लिए नई लिपि विकसित करने का विचार आया।

लुई ब्रेल ने सिद्ध किया कि प्रतिभा किसी की मोहताज नही होती है। लुई अब कप्तान चार्ल्स बारबियर की कूटलिपि में दृष्टिबाधितों के पढ़ने की संभावना ढूँढ़ रहा था। लुई ने कप्तान से मुलाकात के लिए पादरी वेलेन्टाइन के समक्ष अपनी इच्छा प्रकट की। मुलाकात के दौरान कप्तान उस समय दंग रह गए जब बालक ने उनकी बनाई कूटलिपि में कुछ संशोधन प्रस्तावित किए जिसे उन्होंने स्वीकार किया। आविष्कार व परिवर्तन दोनों धैर्य के परिणाम होते हैं। कालान्तर में लुई ब्रेल ने आठ वर्षों के अथक परिश्रम से इस लिपि में अनेक संशोधन किए और परिणामतः मात्र 16 वर्ष की आयु में बारह के स्थान पर छ: बिन्दुओं पर आधारित ऐसी लिपि बनाने में वे सफल हुए, जो विश्व में ब्रेल लिपि के नाम से प्रसिद्ध हुई। लिपि में 63 अक्षर और चिह्न बनाए गए और उसमें विराम, गणितीय और संगीत के नोटेशन लिखने की भी व्यवस्था तैयार की। लेकिन उनके जीवन काल में ब्रेल लिपि को मान्यता नही मिली जिसके लिए लुई संघर्ष करते रहे। ब्रेल लिपि को तत्कालीन शिक्षाशास्त्रियों ने मान्यता देना तो दूर उसका उपहास किया। कूटलिपि के साथ कप्तान चार्ल्स बारबियर का नाम जुड़े होने से इस लिपि पर खतरा मंडरा रहा था, क्योंकि इसे सेना की लिपि समझा गया परन्तु लुई ब्रेल ने हार नही मानी और पादरी वेलेन्टाइन के संवेदनात्मक, आर्थिक एवं मानसिक सहयोग से इन्होंने अपनी बनाई लिपि को दृष्टिबाधितों के मध्य लगातार प्रचारित किया। उन्होंने सरकार से प्रार्थना की कि वे इसे दृष्टिबाधित की भाषा के रूप मान्यता प्रदान करें। इन प्रयासों मे सफलता नही मिली। लेकिन उनके द्वारा छेड़ा संघर्ष रंग लाया और ब्रेल लिपि दिनों दिन प्रसिद्ध होती गई जिसे शिक्षाशास्त्रियों ने समझ कर मान्यता देना आरम्भ किया। अपने प्रयासों को सामाजिक एवं संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए संघर्षरत लुई का 43 वर्ष की आयु में अंततः 6 जनवरी 1852 में उनका देहान्त हो गया।

लुई ब्रेल के देहान्त पश्चात् 1854 में फ्रांस सरकार द्वारा विश्व में सर्वप्रथम ब्रेल लिपि को मान्यता प्रदान की और इन्हे 100 वर्ष बाद 20 जून 1952 को अपने देश में राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ। लुई ब्रेल द्वारा किए गए कार्य सम्पूर्ण विश्व के दृष्टिबाधितों के लिए था। सम्मान की शृंखला में भारत सरकार ने 2009 में इस महान लिपि आविष्कारक के सम्मान में डाक टिकिट जारी किया। ब्रेल लिपि के इस महान् आविष्कारक के जन्म दिवस पर याद करते हुए संकल्प लेवें की कोई भी दृष्टिबाधित बच्चा शिक्षा से वंचित न रहें।

जिला समन्वयक एवं संदर्भ व्यक्ति CWSN
समग्र शिक्षा, चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो: 9588873394

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

जयंती विशेष

प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा

❒ राजेश मुखीजा

सभी जानते हैं कि दुनिया में सबसे पहले यूरी गागरिन ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी। यह उड़ान 12 अप्रैल 1961 के दिन हुई थी। मानव जाति के इतिहास में इसे एक बेजोड़ घटना माना जाता है। इसने मानव को धरती की परिधि से बाहर झाँकने और ब्रह्माण्ड को देखने-समझने की राह दिखाई।

अपनी इस उड़ान से गागरिन दुनिया में मशहूर हो गए। इसके बाद वे भारत भी आए थे। तब नई दिल्ली की एक सभा में उन्होंने कहा था कि- वह दिन आएगा जब भारत और सोवियत संघ के अंतरिक्ष यात्री साथ-साथ उड़ान भरेंगे। वह अनजाने अंतरिक्ष की खोज करेंगे।

13 वर्ष बाद गागरीन की भविष्यवाणी सच साबित हुई। जब 3 अप्रेल 1984 को बेकानूर कॉस्मोड्रोम से शाम 6:38 पर सोयूज टी 11 यान में भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने उड़ान भरी। इस यान में उनके साथ दो यात्री और थे यूरी मालिशेव और गेननादी स्त्रेकालोव।

प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का जन्म 13 जनवरी 1949 को पंजाब के पटियाला शहर में हुआ। राकेश बचपन से विमान चालक बनने की सोचा करते थे। अपने चाचा की वर्दी पहन लेते और कल्पना करते कि विमान उड़ा रहे हैं। इनकी शिक्षा हैदराबाद में हुई। सन 1966 में वह खड़गवासला राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में भर्ती हुए। साढ़े 4 बरस बाद उन्हें भारतीय वायु सेना में कमीशन दिया गया। स्क्वाडर्न लीडर राकेश शर्मा भारतीय वायु सेना में कई स्क्वाडर्नों में काम करते रहे। भारत पाक युद्ध के दिनों में उन्होंने मिग लड़ाकू विमानों से 21 सफल उड़ाने की। वे हर तरह के विमान चला लेते थे। सोलह सौ घंटे विमान उड़ाने का उन्हें अनुभव था। इस दौरान उन्होंने मिग, कैनबरा, हंटर, किरण अजीत, मरुत विमान उड़ाए।

सोवियत संघ ने भारत सरकार से कहा कि यदि भारत चाहे तो एक भारतीय यात्री को

अंतरिक्ष यात्रा पर ले जाया जा सकता है। भारत ने इस सुझाव का स्वागत किया। यह काम वायु सेना को सौंपा गया। ऐसा आदमी होना जरूरी था जो बढ़िया हवाबाज हो। यानी वायुयान उड़ाने में कुशल हो। ढेरों आवेदन पत्र आ गए। उनमें से छांटकर डेढ़ सौ को चुना गया। इनके शरीर और मन की जाँच परख की गई। उनमें से केवल 4 सफल हुए। इन चारों को मास्को भेजा गया। वहाँ और भी कई तरह के परीक्षणों से इन्हें गुजारना पड़ा। आखिर में इस उपलब्धि के लिए स्क्वाडर्न लीडर राकेश शर्मा का चयन हुआ।

विमान के उड़ने से पूर्व तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने कहा- अंतरिक्ष यात्रियों की उपलब्धियाँ मानव के अदम्य उत्साह और महान कार्य करने के उसके अक्षय एवं दुर्दम साहस की प्रतीक है। भारतीय यात्री की उड़ान युवा पीढ़ी को प्रेरणा देगी। 4 अप्रैल 1984 को यह सोयूज टी 11 यान पृथ्वी की सतह की परिक्रमा कर चुका था। भारतीय समय से रात 2:30 बजे सोए सुबह 11:00 बजे जागकर मुँह हाथ धोने और नाश्ता करने में डेढ़ घंटा लगा। राकेश शर्मा ने 5 घंटे तक स्वास्थ्य के बारे में परीक्षण किए। उन्होंने योग का अभ्यास भी किया। उन्होंने नई दिल्ली से प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी से भी सीधी बातचीत की जब इंदिरा गाँधी ने पूछा कि आपको कैसा लग रहा है तो उनके शब्द थे- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।

राकेश शर्मा और उसके साथियों ने धातु विज्ञान, जैव चिकित्सा और दूर संवेदन के 50 प्रयोग किए। इसी बीच राकेश शर्मा ने भारत के बहुत से महत्त्वपूर्ण चित्र भी खींचे। उन्होंने सिल्वर, जर्मीनियम की मिश्र धातु से तैयार की। यह यात्री अपने साथ मीलों लंबी फिल्में चिकित्सा के प्रयोग के टेप तथा अंतरिक्ष के अनुभव लेकर लौटे। बेकानूर रवाना होने से पहले इन्होंने अपने यान पर अपने-अपने नाम लिखे।

बेहद ठंड थी, बर्फ गिरी हुई थी; फिर भी हजारों स्त्री पुरुष और बच्चे झंडिया हिला-हिला कर इन वीरों का स्वागत कर रहे थे। 11 अप्रैल 1984 को अरकाली कस्बे से 8 मील दूर भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा धरती पर सकुशल लौट आए।

राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष यात्रा से लौटने के बाद कहा कि- मुझमें यह यात्रा पूरी करने के बाद कोई अंतर नहीं आया। हालांकि मेरी एक हीरों की छवि बना दी गई है। पर मैं वही हूँ जो पहले था तथा राकेश शर्मा का कहना था कि हमारी यह यात्रा फायदेमंद रही। इससे भारत के युवकों को अंतरिक्ष में जाने की प्रेरणा मिलेगी। भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा को अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। उनके दोनों साथियों को भी अशोक चक्र दिया गया। पहली बार विदेशी नागरिकों को यह अलंकरण दिया गया।

अंतरिक्ष शोध कर्मी राकेश शर्मा को सोवियत संघ के हीरो की उपाधि, ऑर्डर ऑफ लेनिन और स्वर्ण तारा पदक से सम्मानित किया गया। अंतरिक्ष उड़ान की सफल पूर्ति के लिए तथा इस अभियान के दौरान उनके द्वारा प्रदर्शित साहस और वीरता के लिए यह पुरस्कार दिए गए।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मोडी भीमसागर, झालावाड़ (राज.)
मो: 9414459549

Rajasthan Education Department

नव वर्षाभिनंदन

नए वर्ष का नया उजाला

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

21 वीं शताब्दी के प्रारंभिक 21 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सदी के 22वें वर्ष का आगमन हुआ है। बीते दो सालों में विश्व मानवता ने महामारी का जो आलम देखा और जीया है, वह रह-रह कर आँखों के समक्ष प्रकट होना स्वाभाविक है। आगे क्या होगा, इसके बारे में कुछ भी कहना महज एक अनुमान होगा लेकिन जो पीछे हो चुका, उसके तो साक्षी हैं हम आज के लोग। एक सदी का 5वाँ भाग (1/5) बीत चुका है। समय की अपनी एक निश्चित चाल एवं चक्र है जिसके अनुशासन में वह चलता रहता है। न उसे कोई रोक सकता है और न ही उसकी चाल को कम बेसी कर सकता है। समय का एक-एक पल बेशकीमती, अमूल्य है। अतः उसका पूर्ण सदुपयोग किया जाना चाहिए। समय का उचित प्रबंधन कर चलने वालों के लिए समय की कोई कमी नहीं है। वे सारे काम भी कर लेते हैं और तरावली में भी दिखाई देते हैं। समय का सम्मान करना बहुत आवश्यक है। जो समय का आदर करते हैं, समय उनको फल देता है। समय का मूल्य नहीं पहचानने वालों के लिए हर समय 'समय की कमी' रहती है। वे कोई काम व्यवस्थित होकर नहीं कर सकते।

समय को धन कहा गया है, 'Time is wealth' धन का दूसरा नाम सुख-समृद्धि है। धन से समृद्धि, समृद्धि से साधन और साधनों से सुख मिलता है। सब सुखी रहना चाहते हैं। इस प्रकार सुख के मूल में समय है। सुखी रहने के लिए सही समय पर सही काम करना पड़ता है। अन्यथा समय तो निकल जाता है और पछतावा रह जाता है। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं-

का बरसा जब कृषि सुखाने।
समय चूक पुनि का पछताने।।

समय चक्र और उसकी गति के साथ लय मिलाकर चलने वालों के लिए समय वरदानी होता है। जो समय की प्रकृति को समझकर उसे अनदेखा करते हैं, उन्हें दुख और वेदना झेलनी पड़ती है। थोड़ा-सा समय और मिल जाता या मेरे तो समय कम रह गया है, जैसे तर्क देने वाले उपहास के पात्र भी बनते हैं। राजस्थानी में एक कहावत है-

'घर हाण अर जग हंसाई'

अर्थात स्वयं को हानि तथा लोगों में हंसाई/मजाक। समय और सागर की लहरें किसी का इंतजार नहीं करती। जैसे मुँह से निकले शब्द वापिस नहीं लौट सकते, वैसे ही बीत गए समय को वापिस प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः समय का समुचित उपयोग करना आवश्यक है।

समय का दर्शन (Philosophy of time) बहुत अद्भुत है। त्रिकाल (PPF) का बहुत सुन्दर उदाहरण है। समय चक्र वर्तमान (P), भूत (P) एवं भविष्य (F), समय की दृष्टि सदैव आगे की ओर रहती है। इसे समझने के लिए हम समय मापन की छोटी इकाई सैकण्ड को लेते हैं। वर्तमान सैकण्ड भूत में बदलते हुए भावी सैकण्ड वर्तमान में परिणित होते रहते हैं। यह सर्वथा सहज और स्वचालित है। घर की दीवार पर टंगी घड़ी को गौर से देखिए। वह यही तो सिखाती है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है, 'जीवन न तो भविष्य में है और न अतीत में। जीवन तो केवल इस क्षण में है यानी इस क्षण का अनुभव, उससे प्रीति, उसका सम्मान एवं उचित उपयोग ही जीवन है।' वास्तविक जीवन की यह कितनी खूबसूरत परिभाषा है।

समय के बारे में महात्मा बुद्ध ने बहुत सटीक कहा है-'जो समय बीत गया (Past), उसके लिए रोना पछताना बंद करें, जो समय अभी आया नहीं है (Future), उसके लिए चिंतित न होईए। वर्तमान (Present) आपके हाथ में है। उसे सार्थक एवं खूबसूरत बनाओ।' (Do not cry for the past. That has gave and stop worrying about the future, that has not come yet. Live in present, that is in your hands. Make it fruitful and beautiful.)

अपनी क्षमता एवं उपलब्ध साधनों के साथ तालमेल कर समय को सार्थक एवं खूबसूरत बनाना आपके हाथ में है। इसके लिए सम्पूर्ण ऊर्जा, उत्साह एवं क्षमता से पुरुषार्थ करना पड़ता है। यह आप ही को करना है। कोई और नहीं आएगा करने के लिए। एक ही कक्षा व सेक्सन में पढ़ने वाले तीन सहपाठियों में यदि एक अधिकारी, एक क्लर्क व एक बेरोजगार रह जाता है तो इसी अनुपात में उनके द्वारा पुरुषार्थ किया समझो। पढ़ने के लिए समान प्लेटफार्म (कक्षा व वर्ग), समान-शिक्षण अधिगम, एक जैसे शिक्षक, साधन एवं परिस्थितियों होने के बावजूद ये नतीजे उनके द्वारा की गई मेहनत एवं उपलब्ध संसाधनों के उचित उपयोग कम-बेसी (Low-high) करने के परिचायक है।

सफलता-असफलता को भाग्य से जोड़ना उचित नहीं है। राजस्थानी बोलचाल में भाग्य को भाग (Luck) कहते हैं। भाग्य या भाग को प्रभावी (Sharp) बनाने के लिए भागदौड़ यानी पुरुषार्थ जरूरी है। समय का समय पर सही उपयोग करना आवश्यक है। सफल हो गए तो स्वयं के द्वारा की गई मेहनत व साथ में भाग्य तथा असफल हो गए, तब 'मेरा तो भाग्य ही खराब था' अथवा 'समय ने साथ नहीं दिया' जैसे स्टेटमेंट देने वालों को पुरुषार्थ करना सीखना चाहिए। शेर जंगल का राजा है। सब उससे डरते हैं, मगर उसे भी भोजन के लिए शिकार (पुरुषार्थ) करना पड़ता है। हाथ-पैर मारने पड़ते हैं।' समय पर उचित कदम उठाने पड़ते हैं। भाग्य के भरोसे रहने अथवा 'मैं तो जंगल का राजा हूँ' जैसी भावना रखकर गुफा में ही आराम फरमाते रहने वाले जंगल के राजा को भूखा ही रहना पड़ेगा। इसमें कोई शक नहीं। कोई जंगली जानवर यह कहता हुआ उसका भोजन बनकर उसकी सेवामें उपस्थित नहीं होगा कि, 'हे! जंगलाधिपति राजन्, आप सुबह से भूखे हैं। मैं आपकी भूख मिटाने, आपका निवाला बनने आया हूँ। मेरी तरफ देखिए और मेरा भक्षण कर

Rajasthan Education Department

अपनी क्षुधा शांत कीजिए।' बल्कि भोजन के लिए किसी जंगली प्राणी की टोह लेते शेर से बचने के लिए हर प्राणी छिपता रहता है। सबको अपने प्राण प्यारे हैं। जानबूझकर मरना कोई नहीं चाहता। पुरुषार्थ की महत्ता को समझाने के लिए वेदवाणी संस्कृत में एक सुन्दर हितोपदेशक सुभाषितानि है-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि ना मनोरथे।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविष्यन्ति मुखे मृगा।।

भावार्थ यह है कि उद्यम करने यानी पुरुषार्थ से ही कार्य सिद्ध होते हैं। सिर्फ मन में इच्छा कर लेने से नहीं। जैसे आराम से नींद ले रहे शेर के मुँह में हिरण स्वयं प्रवेश नहीं करता बल्कि इसके लिए तो स्वयं उसे भागदौड़ करनी पड़ेगी।

भाग्य और कर्म का सीधा साक्षेप सम्बन्ध है। भाग्य उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं का साथ देते हैं। स्वयं का साथ देने का आशय उचित समय पर वांछित प्रयास और मेहनत करने से हैं। एक युवक ने हस्तरेखा शास्त्री को अपनी हस्त रेखाएँ दिखाकर उनमें छिपे भाग्य को जानना चाहा। शास्त्री महोदय ने चेहरे पर गंभीरता लाते हुए रेखाएँ देखी और कहा कि तुम्हारे तो भाग्य रेखाएँ है ही नहीं। युवक स्वाभिमानी था। मेहनत और पुरुषार्थ में यकीन करता था। हथेली में भाग्य रेखा कहाँ होती है, यह जानने के लिए उसने पंडितजी से निवेदन किया। यह क्या....पंडितजी महोदय के क्या हथेली में बताए स्थान पर युवक ने चाकू से रेखा खींच दी। खून की धारा बह निकली। हस्तरेखा शास्त्री एवं उपस्थित अन्य जिज्ञासु स्तब्ध रह गए। उस युवक ने समय का उचित प्रबंधन एवं सम्मान करते हुए सुनियोजित ढंग से कड़ी मेहनत की और अद्भुत सफलताएँ प्राप्त की। आप अपने भाग्य के स्वयं निर्माता है। सच्चा संकल्प और उसे पूरा करने के लिए ईमानदारीपूर्वक लगकर तो देखिए। कुछ भी नामुमकिन नहीं है। सब संभव है। असंभव शब्द मेरे शब्दकोश में नही है, जैसी उत्साहवर्धक उक्तियाँ ऐसे ही पौरुषशाली व्यक्तियों ने गढ़ी है।

प्रबंध शास्त्र में समय प्रबंधन (Time Management) का अध्ययन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस पर निरंतर अध्ययन, शोध एवं अनुसंधान होते रहते हैं। पाँच मिनट यों ही गंवाने वाले यह नहीं जानते कि उन्होंने 300 सैकण्ड्स बर्बाद कर दिए हैं। समय की 300 यूनिट्स। कितनी बड़ी मात्रा का अहसास कराता है नम्बर तीन सौ। हम तो सैकण्ड तक की ही बात कर रह रहे हैं। इससे भी लघु गणनाएं की जाती है।

उड़नपरी कहलाने वाली भारतीय एथलीट पीटी उषा वर्ष 1984 में लॉस एंजिल्स ओलम्पिक में 400 मीटर बाधा दौड़ फाइनल में एक सैकण्ड से भी कम समय से मेडल पाने से रह गई थी। पाँच-दस मिनट को कुछ नहीं समझने वालों को इस दृष्टांत से शिक्षा लेनी चाहिए। वर्तमान दौर में उच्च व्यावसायिक एवं तकनीकी पढ़ाई हेतु प्रवेश एवं नौकरी हेतु होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में एक सही अथवा एक गलत जवाब से हजारों अभ्यर्थी सफल अथवा असफल घोषित हो जाते हैं। कट ऑफ मेरिट जारी होने के साथ ही ऐसी प्रसन्नता या मायूसी भरे उनके चेहरे आप देख सकते हैं। 'मैं तो बस एक/दो अंक से रह गया।' जैसे स्टेटमेंट जिंदगी भर सालते रहते हैं। यह समय की नब्ज को पहचानकर काम करने वालों के साथ नहीं होता।

महाभारत के समय का महत्त्व बताते हुए कहा गया है, जिस प्रकार नदी बहकर चली जाती है, फिर लौटकर नहीं आती। इसी प्रकार रात और दिन (यानी समय) मनुष्य की आयु (और अवसर) लेकर चले जाते हैं, फिर कभी लौटकर नहीं आते।' रात-दिन समय के प्रतीक हैं अर्थात जो समय चला जाता है, वह फिर लौटकर नहीं आता। उसकी तो बस कहानियाँ (इतिहास) रह जाती है। प्रकृति ने मनुष्य के लिए करणीय कार्यो एवं उन्हें करने के लिए समय उचित अनुपात में दिया है। उसके विश्राम करने, सोने जैसी क्रियाओं के लिए भी प्रबंधन उपलब्ध कुल समय में से अच्छे से हो जाता है। पश्चिमी विचारक मि. ब्रूयर कहते हैं-'जो अपने समय का सबसे अधिक दुरुपयोग करते हैं, वे ही समय की कमी की सबसे ज्यादा शिकायत करते हैं।' समय का सदुपयोग करने वाले बेहतर कार्य करते हैं, दूसरों की अपेक्षा ज्यादा कार्य करते हैं और समय की कमी जैसी बात कभी भी उनके मुँह से सुनी नहीं जाती। वे सदैव प्रयत्न और भारमुक्त दिखाई देते हैं।

समय प्रबंधन कला और विश्राम दोनों हैं। समझदार व्यक्ति विज्ञान के सिद्धांतों की तरह क्रमबद्ध ढंग से उपलब्ध समय का नियोजन कर कला की तरह उसे खूबसूरत (कलात्मक) बना देता है। उसके समस्त कार्य मिनट-टू-मिनट पैटर्न पर होते चले जाते हैं और उसे किसी तरह का तनाव नहीं रहता। इस प्रकार बचने वाला समय उसकी समय बचत (Time Saving) है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं। एक जैसा और एक जितनी ही मात्रा में कार्य एक जैसी योग्यता वाले दो व्यक्तियों को एक जितने समय में एक साथ करने के लिए दिया जाता है। कार्य मिलते ही उसकी प्रकृति एवं गंभीरता को समझकर समय प्रबंधन का कार्य करने वाला व्यक्ति उसे अपेक्षित गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा कर लेगा। इसके विपरीत बिना योजना के 'अभी क्या है....कर लेंगे' थ्योरी में यकीन करने वाला लापरवाह व्यक्ति अतिरिक्त समय की मांग करता है। स्वयं दुखी रहता है और दूसरों को दुखी करता है। उसके द्वारा वांछित प्रतिमान के साथ रिजल्ट नहीं दिया जा सकता।

माना कि उपर्युक्तवत सौंपा गया कार्य एक घंटे में होने वाला था। पहले ने 50 मिनट में कार्य कर 10 मिनट बचा लिए जबकि दूसरे ने 10-15 मिनट अतिरिक्त लेकर अपनी अकुशलता व अयोग्यता का परिचय दिया। पहले के मुखमंडल पर प्रसन्नता तैरती है जबकि दूसरे के मायूसी। कहना न होगा कि उच्च अधिकारियों एवं नियोक्ताओं के मन में इन दोनों के बारे में वैसी ही तस्वीर बन जाती है। पहले वाला सराहना प्राप्त करता है जबकि दूसरा तिरस्कार। यह है समय नियोजन एवं त्वरित क्रियान्वयन का महत्त्व। आप सर्वे करके दिखला दीजिए। परीक्षाओं में मेरिट में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों द्वारा सम्बन्धित प्रश्न पत्र को समय से पहले हल कर लिया जाकर वे शांतिपूर्वक बैठ जाते हैं। वे संतुलित रहते हैं और प्रसन्नता सदैव उनका दामन थामे रहती है।

समय चक्र का वार्षिक मोड़ नए वर्ष के रूप में आया है। वर्ष दो हजार बाइस। 21वीं सदी का 22वाँ शानदार वर्ष। ग्यारह-इक्कीस, इक्यावन, एक सौ एक हमारे यहाँ शुभ कहे गए हैं। 21वें वर्ष में मानवता की महामारी पर विजय हुई। 2020 की तुलना में लाख बेहतर रहा। वर्ष

Rajasthan Education Department

2021... वर्ष 2022 आमुख है 2021का। यह उससे भी अच्छा और शुभ फलदायी सिद्ध हो, इसके लिए हमें समय का आत्मीय आदर करते हुए अनुशासन में रहना और कड़ी मेहनत, परिश्रम करना होगा।

आइए, हम स्वागत करें नव अवतरित वर्ष 2022 का। उसे विश्वास दिलाएं कि हम एक-एक क्षण का सदुपयोग करेंगे। ईमानदारी एवं प्रामाणिकता के साथ मेहनत करते हुए कर्त्तव्य पथ के अनुगामी बनेंगे। जीवन अनुशासित रखेंगे। निष्ठा, प्रतिबद्धता एवं सच्चे समर्पण भाव से देश व समाज के उत्थान हेतु अपनी पूर्ण क्षमता एवं उत्साह से सतत संलग्न रहेंगे। शिक्षा विभाग तो ज्ञान का विभाग है। शिक्षक ज्ञान के पुंज, ज्ञान दूत हैं। शिक्षक का महत्त्व सदैव रहा है। वह समाज का अग्र पुरुष है। वह तेजस्वी है। मुझे लग रहा है कि नए साल के शुभागमन अवसर पर एक शिक्षक समय एवं संसाधनों का महत्त्व बताता हुआ शिक्षा दे रहा है-

ये क्षण हर साल उपयोगी,
ये मन हर ताल उपयोगी,
जमाना-जर-जगत-जनता,
नित्य सब पाल उपयोगी।
भुलाकर भूत को पाया,
सनातन काल उपयोगी,
कान में ज्ञान कहता है,
यहाँ हर चीज उपयोगी।।

आइए, नए साल के शुभारंभ के मुबारक अवसर पर इसी गीतिका के साथ अपनी कर्त्तव्य सारणी को अद्यतन करते हुए कुछ नया कर गुजरने के संकल्प के साथ अपनी चाल को तेज करें। अन्त में परमात्मा से प्रार्थना है कि-

नए वर्ष का नया उजाला,
नई रोशनी लाए,
इस धरती से आधि-व्याधि के
सब संकट मिट जाए।
नया साल सारे सुख लाए,
लाए नूतन हर्ष,
दे धरती पर मात स्वर्ग को
मेरा भारत वर्ष।।

संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव जी रोड,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
मो: 9414060038

लोकार्पण समारोह

पुस्तकों से दोस्ती करना सीखें विद्यार्थी : डॉ. कल्ला

❐ राज कंवर आचार्य

बीकानेर-माननीय शिक्षा मंत्री महोदय डॉ. बी.डी. कल्ला ने 9 दिसंबर 2021 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमीसर, बीकानेर में समग्र शिक्षा द्वारा पी.ए.बी. योजनान्तर्गत 25.99 लाख रुपए की राशि से निर्मित 3 हॉल मय बरामदों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर माननीय शिक्षामंत्री महोदय डॉ. बी.डी. कल्ला ने विद्यालय की चार दीवारी के जीर्णोद्धार व दो कमरे बनवाने की भी घोषणा की। माननीय शिक्षा मंत्री ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ अपने माता-पिता व गुरुजनों का सम्मान भी करें। उन्होंने कहा कि पुस्तकें विद्यार्थी की सबसे अच्छी मित्र तथा ज्ञान की भंडार होती है। विद्यार्थी, पुस्तकों से मित्रता करें और टेलीविजन व मोबाइल से दूरी रखते हुए अध्ययनशील रहें। माननीय मंत्री महोदय ने बच्चों को खानपान में जंक फूड से दूर रहने पर जोर दिया। माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा जिला स्तर पर महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोले गए हैं। इसके सकारात्मक परिणाम मिलने पर ब्लॉक स्तर पर भी ऐसे विद्यालय प्रारंभ किए गए तथा अब 5 हजार से अधिक आबादी वाले गाँवों में भी महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोले जाएँगे। इससे अब ग्रामीण विद्यार्थियों को भी अंग्रेजी माध्यम में अत्याधुनिक शिक्षा मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि स्कूलों के बुनियादी ढांचे का विकास व स्कूल प्रबंधन को मजबूत किया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों को और अधिक लाभ हो सके। शिक्षा मंत्री ने कहा कि सभी विद्यालयों में कोविड गाइडलाइन की पालना सुनिश्चित करवाई जाए, इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही ना हो। संयुक्त निदेशक बीकानेर मण्डल, बीकानेर श्री तेजासिंह ने स्वागत उद्बोधन दिया और शिक्षा विभाग की विभिन्न गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया। राजकीय उच्च

माध्यमिक विद्यालय करमीसर की प्राचार्य राज आचार्य ने माननीय शिक्षा मंत्री का आभार जताया। सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री आनंद व्यास ने शिक्षा मंत्री डॉ. कल्ला को श्रीमद्भागवत की आनंद पुस्तक भेंट की। इस दौरान राज्य स्तरीय टीम में भाग लेने वाले विद्यालय के बास्केटबॉल खिलाड़ी घनश्याम व क्रिकेट खिलाड़ी हीरालाल को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के ही कबड्डी व क्रिकेट में राज्य स्तर पर चयनित खिलाड़ियों तथा जिला स्तर पर प्रतियोगिताओं में शामिल रहे विद्यार्थियों को भी पुरस्कार दिए गए। विद्यालय के श्रेष्ठ कार्मिकों का सम्मान करते हुए अपने संबोधन के दौरान माननीय मंत्री महोदय ने बच्चों को खेलकूद में ज्यादा से ज्यादा हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राजकुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) श्री सुरेंद्र सिंह भाटी, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक (समसा) श्री हेतराम सारण, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुनील बोड़ा सहित विद्यालय स्टाफ, स्थानीय नागरिक और विद्यार्थीगण मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री ज्योति प्रकाश रंगा ने किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमीसर,
बीकानेर (राज.)
मो. 7357996318

Rajasthan Education Department

मकर संक्रांति महापर्व

❐ राजीव अरोड़ा

किसी भी राशि में जब सूर्य का प्रवेश होता है, तब वह राशि 'संक्रांति' शब्द से जुड़कर व्यवहृत होती है अर्थात सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश ही 'संक्रांति' कहलाता है। इस दृष्टि से सूर्य का मकर राशि में प्रवेश ही 'मकर संक्रांति' कहलाता है। सूर्य प्रायः प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करता है इसलिए प्रतिवर्ष 14 जनवरी को 'मकर संक्रांति' का महापर्व मनाया जाता है।

भारतीय ज्योतिष में मकर संक्रांति महापर्व के दिन सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। मकर संक्रांति महापर्व से दिन बढ़ने लगता है और रात्रि की अवधि कम होती जाती है अर्थात् दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा और रात्रि छोटी होने से अंधकार की अवधि कम होगी।

मकर-संक्रांति के दिन सूर्य दक्षिणायन काल से उत्तरायण काल में प्रवेश करता है अर्थात् इस दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाता है। इस दिन से सूर्य दक्षिण से क्रमशः उत्तर की ओर आता है और शीत ऋतु धीरे-धीरे समाप्त होकर ग्रीष्म ऋतु में बदलने लगती है। मकर-संक्रांति के पूर्व के 6 माह की अवधि दक्षिणायन और बाद के 6 माह की अवधि उत्तरायण कहलाती है। पुराणों के अनुसार उत्तरायण की अवधि को देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन की अवधि को देवताओं की रात्रि कहा गया है। इस तरह मकर संक्रांति एक प्रकार से देवताओं का प्रभातकाल है। हिन्दु शास्त्रों की मान्यता के अनुसार दक्षिणायन काल अर्थात देवताओं के रात्रिकाल में कोई भी शुभ कार्य करना अच्छा नहीं होता है तथा उत्तरायण काल अर्थात् देवताओं के दिन का प्रारम्भ होने पर सभी शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।

उत्तरायण काल का महत्त्व दर्शाती एक कथा का उल्लेख शास्त्रों-पुराणों में मिलता है जिसमें भीष्म पितामह को अपने पिता से इच्छानुसार मृत्यु वरण का वरदान प्राप्त था। महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह के शरीर में इतने अधिक बाण लगे थे कि उनके लिए बाणों की शैय्या बन गयी थी। असहनीय पीड़ा के दौरान वे चाहते तो अपने वरदान के अनुसार अपना शरीर त्याग सकते थे किन्तु उन्होंने मकर संक्रांति के शुभ मुहूर्त के लिए असहनीय पीड़ा सहन की और सूर्य के उत्तरायण काल में आने पर ही उन्होंने अपना शरीर त्याग किया।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और मकर संक्रांति का महापर्व कृषि उत्पाद से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यह पर्व पंजाब में 'लोहड़ी' के नाम से जाना जाता है। पूर्वांचल में यह महापर्व 'बीहू' तथा दक्षिणांचल में यह 'पोंगल' के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र में इसे 'मकर संक्रांति' कहते हैं तो उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में यह महापर्व 'तिल' या 'खिचड़ी संक्रांति' नाम से जाना जाता है। अतः यह एक सार्वजनिक पर्व है।

पंजाब और जम्मू कश्मीर में 'लोहड़ी' के नाम से मकर संक्रांति महापर्व मनाया जाता है। लोहड़ी वास्तव में अग्नि पूजा का ही पर्व है। लोहड़ी के दिन लोहड़ी की अग्नि से वंश (कुल) वृद्धि के लिए प्रार्थना की जाती है। अग्नि में तिल डालकर पुत्र के लिए वर माँगे जाते हैं इसलिए नवजात शिशुओं और नव-विवाहित पुत्र की खुशी में लोहड़ी जलाई जाती है। लोहड़ी में गुड़ और तिल प्रसाद स्वरूप बांटे जाते हैं इसलिए लोहड़ी को 'तिलोड़ी' अर्थात तिल और रोड़ी (गुड़) का पर्व भी कहा जाता है।

असम में 'माघी बीहू' मकर संक्रांति महापर्व पर मनाया जाता है। इस समय धान की फसल कटकर नया धान घर पर आता है इसलिए नए चावलों से अनेक प्रकार के व्यंजन और मिठाइयाँ बनाते हैं। ये लोग एक विशेष प्रकार की मिठाई बनाते हैं जिसे पीठा कहते है। यह नए चावलों से ही बनाई जाती है। तमिलनाडु में मकर संक्रांति महापर्व 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। पोंगल का अर्थ है खीर-दूध में पकाए गए चावल। इस दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनाई जाती है। नई फसल का चावल, दाल, तिल के भोज्य पदार्थ से पूजा करके कृषि देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। तमिल पंचांग का नया वर्ष पोंगल से ही प्रारंभ होता है। महाराष्ट्र में मकर-संक्रांति महापर्व में ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति से सूर्य की गति तिल-तिल बढ़ती है, इसलिए इस दिन तिल के विभिन्न मिष्टान्न बनाकर एक-दूसरे को वितरित करते हुए शुभकामनाएँ देकर यह पर्व मनाया जाता है। उत्तरप्रदेश में मकर संक्रांति महापर्व को 'खिचड़ी' कहा जाता है। इस दिन खिचड़ी खाने तथा खिचड़ी-तिल दान देने का विशेष महत्त्व है।

मकर संक्रांति महापर्व को 'तिल संक्रांति' भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि तिल संक्रांति के दिन जो तिल युक्त पानी से स्नान करता है, तिल का उबटन करता है, शरीर में तिल के तेल की मालिश करता है, तिल का पानी पीता है, तिल खाता है और तिल का दान करता है, ऐसे छः प्रकार से तिल का प्रयोग करने वाले व्यक्ति कभी दुःख के भागी नहीं बनते। इस प्रकार मकर संक्रांति महापर्व में तिल की बड़ी महिमा मानी गई है।

मकर संक्रांति में पर्व और व्रत दोनों का योग पाया जाता है। इसमें जहाँ एक ओर खाने-पीने, मौजमस्ती आदि की छूट पायी जाती है, वहीं दूसरी ओर जप, श्राद्ध, अनुष्ठान, उपवास, पवित्र नदियों या गंगा सागर (संगम), दान-पुण्यादि का भी विधान है।

मकर संक्रांति महापर्व के दिन पवित्र सरोवरों, नदियों एवं तीर्थस्थलों में स्नान करने का विशेष महत्त्व है। ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति महापर्व के दिन पवित्र सरोवरों, नदियों एवं तीर्थस्थलों आदि पर स्नान करने से मनुष्य के समस्त पाप कट जाते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है। इस दिन प्रयाग की त्रिवेणी में स्नान का विशेष माहात्म्य है। ऐसा कहा जाता है कि गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम पर प्रयाग में मकर संक्रांति महापर्व के दिन सभी देवी-देवता अपना स्वरूप बदल कर स्नान के लिए आते हैं। अतएव वहाँ मकर संक्रांति महापर्व के दिन स्नान करना अनन्त पुण्यों का एक साथ प्राप्त करना माना जाता है। श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित

Rajasthan Education Department

बालकाण्ड में वर्णित है कि 'माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।। देव दनुज किंनर नर श्रेनीं। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।' अर्थात माघ में जब सूर्य मकर राशि पर आते हैं तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग को आते हैं। देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं। राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर तथा राजधानी जयपुर में स्थित गलता जी आदि पवित्र तीर्थस्थलों पर स्नान कर लोग पुण्य प्राप्त करते हैं।

मकर संक्रांति महापर्व के दिन दान करने का भी विशेष महत्त्व है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन जो भी दान किया जाता है, वह अगले जन्म में प्राप्त होता है। इस दिन पितरों का श्राद्ध, तिल दान और वस्त्र दान किया जाता है। इस दिन लोग गायों को चारा डालते हैं। स्कन्द पुराण में मकर संक्रांति महापर्व के दिन तिल दान के साथ ही गौ-दान का भी उल्लेख मिलता है।

मकर संक्रांति महापर्व के दिन कहीं-कहीं स्थान विशेष में पतंगे भी उड़ायी जाती है। मकर संक्रांति महापर्व के दिन बच्चे, बूढ़े और जवान सभी ब्रह्म मुहूर्त में घरों की छतों पर चढ़कर पतंगे उड़ाते हैं। परिवार की महिलाएँ भी पतंगबाजी का आनन्द लेती हैं। पूरा आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से पट जाता है। लोग घरों की छतों पर लाउडस्पीकर लगाकर गानों को सुनने के साथ-साथ पतंगबाजी का भी भरपूर आनन्द प्राप्त करते हैं। मकर सक्रांति महापर्व का यह दिन पवित्र तीर्थों में स्नान, दान, खान-पान, मौजमस्ती और पतंगबाजी आदि में व्यतीत हो जाता है।

कुल मिलाकर समय चक्र और शिशिर ऋतु में भावी कृषि उत्पाद की संभावनाओं से आशान्वित होकर एवं अनेक पौराणिक कथा-विश्वासों से अनुप्राणित बना रहकर आज भी भारत का जन-मानस अपनी संकल्पशीलता में मकर संक्रांति का महापर्व मनाता है इसीलिए हमारी संस्कृति में मकर संक्रांति महापर्व मनाने का विशेष महत्त्व है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक,
समग्र शिक्षा अभियान, जयपुर (राज.)
मो: 7742131000

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा शिविर

❐ भवेन्द्र कुमार गोयल

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 6 से 8 तक तीन दिवसीय एवं कक्षा 9 से 10 तक पाँच दिवसीय 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाजसेवा' (SUPW and C.S.) शिविरों का प्रावधान किया गया है। इन शिविरों के आधार पर विद्यार्थियों के कार्यों का आकलन एवं मूल्यांकन किया जाता है। बोर्ड कक्षा 10 के लिए शिविर में भाग लेना अनिवार्य है। विद्यालयों में प्रतिवर्ष नवम्बर माह से पूर्व इन शिविरों का आयोजन करवाया जाना आवश्यक होता है। प्रवेश के समय कक्षा 9, 10 के प्रत्येक विद्यार्थी से 50/- रुपये का शुल्क भी छात्र निधि कोष के अन्तर्गत लिया जाता है। जिसका उपयोग समाजोपयोगी गतिविधियों हेतु किया जाता है। विद्यालय का संस्थाप्रधान शिविराधिपति होता है एवं इस गतिविधि के संचालन हेतु एक प्रभारी अध्यापक की व्यवस्था की जाती है। कोरोना लॉकडाउन के कारण उक्त गतिविधि भी काफी हद तक प्रभावित हुई है। इस वर्ष विद्यालय में पाँच दिवसीय गैर आवासीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविरार्थियों द्वारा श्रमदान करके संपूर्ण विद्यालय परिसर की सफाई, झाड़ियों को काटकर परिसर का समतलीकरण, विद्यालय वाटिका की सफाई, जल वितरण, सार्वजनिक स्थानों की सफाई जैसे कार्य करवाए गए। कार्य का सरलीकरण करने एवं प्रभावी कार्य परिणाम प्राप्त करने हेतु दल प्रभारियों की नियुक्ति कर विद्यार्थियों के दल बनाए जाकर उनको प्रत्येक दिवस के कार्य का विभाजन कर दिया जावे। दोपहर में कार्य की संवीक्षा अवश्य की जाए। शिविर के दौरान अनेक प्रकार की उपयोगी वार्ताओं, बैंकिंग कार्यप्रणाली, खाते खोलने की प्रक्रिया, ऑनलाइन कार्य, चिकित्सा विभाग, पशुपालन विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों की वार्ताओं का आयोजन किया जाता है, इन वार्ताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को अनेक उपयोगी जानकारी मिलती है जो उनके व्यावहारिक जीवन में काफी उपयोगी साबित होती है।

सार्वजनिक स्थानों यथा गौशाला, पब्लिक पार्क, देवस्थान, सार्वजनिक कुआँ इत्यादि की सफाई करने से विद्यालय एवं विद्यार्थियों का समाज के साथ भी भावनात्मक जुड़ाव बना रहता है। शिविर में अनेक उत्पादक कार्यों जैसे टमाटर सॉस, चॉक बनाना, अमृतधारा, साबुन बनाना, टायर पंक्चर निकालना आदि कार्य प्रायौगिक रूप से करवाए जाते हैं इससे विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने एवं स्वरोजगार हेतु सहायता एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है। शिविरार्थियों के माध्यम से अपने आसपास की जलवायु, फसलों, पेड़-पौधों, कृषि उपजों, मिट्टी आदि से संबंधित सर्वे कार्य भी करवाया जा सकता है। अलग-अलग ग्रुप बनाकर उनसे सर्वे कार्य करवाकर उनका मूल्यांकन अपेक्षित है। शिविर में प्रत्येक विद्यार्थी एक डायरी का संधारण करें, जिसमें शिविर के अनुभवों एवं कार्यों का उल्लेख हो, उसके आधार पर भी मूल्यांकन संभव है। विद्यालयों में इन शिविरों की उपादेयता ये है कि विद्यार्थी अपने विद्यालयी जीवन में ही श्रमदान, उत्पादक कार्यों के प्रति रुचि लेने लगता है जो उसके भावी जीवन में उत्तरदायित्वपूर्ण भावना का आधार बनती है। विद्यालय का समाज के विभिन्न वर्गों एवं समूहों के साथ जुड़ाव रहने से विद्यार्थियों में सामाजिकता की भावना का विकास होता है। विद्यालय परिसर में सफाई, स्वच्छता, श्रमदान, रंग-रोगन के माध्यम से भवन को आकर्षक, सुन्दर बनाया जा सकता है। कक्षा-कक्षों की सजावट भी की जा सकती है।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा शिविरों की विद्यालयों एवं विद्यार्थियों के लिए उपादेयता एवं आवश्यकता है। प्रत्येक प्रकार का उत्पादक कार्य शिविर के माध्यम से करवाया जा सकता है। कृषि एवं श्रम प्रधान भारत देश में सहकारिता एवं सामाजिकता की भावना का विकास इन समाजोपयोगी शिविरों द्वारा संभव है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू, सिणधरी,
बाड़मेर (राज.)
मो: 9414529861

Rajasthan Education Department

युवा दिवस विशेष

युवा और राष्ट्र निर्माण

❒ हीराराम चौधरी

भारतीय महान मनस्वी पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अपने संदेश में कहा था कि, 'यह जीवन फूलों की सेज नहीं, वरन रणभूमि है, जहाँ हमें प्रतिक्षण दुर्भावनाओं, दुष्प्रवृत्तियों और आपत्तियों से निडर होकर जूझना है। विपत्तियाँ केवल कमजोर, कायर, डरपोक और निठल्ले व्यक्तियों को ही डराती, धमकाती और पराजित करती है और उन लोगों के वश में रहती हैं जो उनसे जूझने के लिए कमर कसकर तैयार रहते हैं। अतएव हमेशा खतरों से भरा जीवन जिओ। बिना संकटों के मनुष्य का जीवन निखर नहीं सकता।'

उक्त वाक्यांश युवाओं को जीवन की महत्ता का वास्तविक बोध कराता है और जीवन के सपने को साकार करने की नव अभिप्रेरणा प्रदान करता है। यह सही है कि जीवन उन्हीं का निखरा है जिन्होंने जीवन की वास्तविकता को समझा है। जीवन की वास्तविकता है-जीवन फूलों की सेज नहीं, रणभूमि है। जीवन एक संघर्ष है। जीवन एक तप-तपस्या और साधना है। युवा अपने अंतर्निहित साहस व संकल्प शक्ति से ऐसे जीवन को जिए और आगे बढ़े। युवा ऊर्जा का अथाह भंडार है। युवाओं के मन-मस्तिष्क में संकल्प शक्ति की दिव्य शक्ति विराजमान है। बस, जरूरत इस बात की है कि हर युवा अपनी अंतर्निहित शक्ति, सामर्थ्य और ऊर्जा को पहचाने और उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग कर अपने भविष्य को संवारने और राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम अर्पण करने में लगाए। जो युवा अपनी ऊर्जा, शक्ति और सामर्थ्य का सही, श्रेष्ठ व उचित सदुपयोग कर लेता है, उसके जीवन के सपने पूर्ण हो जाते हैं और उनका जीवन स्वर्णिम व स्वप्निल बन जाता है। जो युवा ऐसा नहीं कर पाते वे ताउम्र पश्चाताप करते हैं और वे अपने ही हाथों अपनी जिंदगी को कष्ट पूर्ण बना जाते हैं अतः हर युवा को चाहिए कि वह अपने जीवन के उद्देश्य का निर्धारण करें और उसकी प्राप्ति के लिए अपनी सम्पूर्ण मानसिक व शारीरिक ताकत व क्षमता को अर्पित कर देवें। जीवन के उद्देश्य निर्धारण करने मात्र से ही जिंदगी नहीं संवरती। वह तो बेहतर संकल्प, सच्ची लगन, अटूट विश्वास और श्रेष्ठ पुरुषार्थ से संवरती है। समझदार व बुद्धिमान युवा अपनी अंतर्निहित शक्ति का सर्वश्रेष्ठ सदुपयोग अपने सपनों को साकार करने तथा राष्ट्र-समाज के नव निर्माण में लगाता है। एक युवा जब अपने जीवन के ध्येय को प्राप्त कर जाता है अर्थात अपने सपने को साकार कर जाता है जैसे अध्यापक, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, चिकित्सक, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी, सैनिक, खिलाड़ी, नेता, अभिनेता, कलाकार, चित्रकार, उत्तम कृषक इत्यादि बन जाता है तो वह अपनी कर्त्तव्य परायण सेवा से राष्ट्र के नव निर्माण में महती भूमिका निभाता है। एक युवा अपने ध्येय की प्राप्ति के बाद पूर्ण ईमानदारी, लगन व निष्ठा से अपनी सेवाएँ राष्ट्र को अर्पित कर देता है तो राष्ट्रीय विकास को गति को नव पंख लग जाते हैं और राष्ट्र तेज गति से आगे बढ़ने में सफल हो जाता है।

जो युवा ऐसी ही विराट सोच को लेकर आगे बढ़ते हैं, वे जीवन में खूब यश-कीर्ति पाते हैं। एक बालक जो मूंगफली व अखबार बेचकर अपने पिताजी की आजीविका में योगदान कर पढ़ाई करता था, उस बालक ने अपने पुरुषार्थ के बल पर वह मुकाम हासिल किया जिसकी परिकल्पना कोई भी नहीं कर सकता है। गरीबी से उठकर भारत के महान वैज्ञानिक बने, भारत को मिसाइलों की तकनीकी से समृद्ध किया और फिर भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति को सुशोभित किया। ऐसे महापुरुष थे-भारत के महान वैज्ञानिक, भारत रत्न और पूर्व राष्ट्रपति स्व. श्रीमान ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब। जिन्होंने अपनी संकल्प शक्ति से युवाओं को नव प्रेरणा दी।

हर युवा को ऐसे महापुरुषों के संघर्षमयी जीवन से सीख जरूर लेनी चाहिए। जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है। युवा असंभव को संभव करने का सामर्थ्य रखता है। बस, हर युवा को चाहिए कि वे अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने आपको झोंक देवे। मार्ग में आने वाली विकट व विषम परिस्थितियों से तनिक भी विचलित नहीं होवे बल्कि दुगुने उत्साह-उमंग और दृढ़ निश्चय से सतत प्रयत्नशील होकर कर्म करते रहे। ऐसे दृढ़ निश्चयी युवा नया इतिहास बना जाते हैं।

टोक्यो ओलम्पिक 2020 में हमारे राष्ट्र के युवा नीरज चौपड़ा ने जेवलिन थ्रो (भाला फेंक) प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर नया इतिहास बनाया। यह सब उनके श्रेष्ठ पुरुषार्थ का सुखद परिणाम है। अपनी महान सफलता से सम्पूर्ण राष्ट्र को उल्लासित कर दिया। जीवन में एक बात सदा याद रखे कि संघर्ष से ही जीवन का उत्कर्ष है। संघर्ष में ही जीवन का हर्ष है। जीवन है तो संघर्ष है। संघर्ष है तो सफलता है।

इस लेख के माध्यम से युवाशक्ति को एक संदेश है कि वे अपनी अंतर्निहित ऊर्जा, शक्ति और सामर्थ्य का सदुपयोग अपने भविष्य निर्माण, विकासात्मक सद्कार्यों के लिए करे और राष्ट्र के नव निर्माण में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर श्रेष्ठ सुनागरिक होने का परम दायित्व निभाए।

हर भारतीय युवा को इस प्रेरणादायी मुक्तक को आत्मचिंतन कर आगे बढ़ना है-

एक लक्ष्य बाँध लें
जीवन चलते जाना है,
जिंदगी के सफर में
ना कोई अपना, ना कोई बेगाना है,
डगर कठिन मंजिल है दूर
फिर भी अपना मुकाम पाना है।
सितारों की भीड़ में,
चंद्रमा बन जगमगाना है।
मंजिल अपनी पा-कर,
खुद की पहचान बनाना है,
जीवन के तय लक्ष्य को
हर हाल में तुझे पाना है।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोडावास,
पाली (राज.)

Rajasthan Education Department

नए युग के कर्णधार हैं युवा

❒ बिग्रेडियर करण सिंह चौहान

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तेज गति से हो रहे मूल्य ह्रास को स्पष्ट देखा जा सकता है। बहुत से क्षेत्रों में तो गिरावट, हमारे पूर्वजों के अनुभव व दर्शन के पैमाने की सीमा को भी लाँघ चुकी है। हम भी अपना समय कहीं खो न दें, इसलिए भूल का अहसास होते ही सुधार के लिए ठोस कदम उठाना आवश्यक है। आज हम अपने ऐतिहासिक अभिनंदन 'नमस्कार' से कोसों दूर होकर आधुनिक 'हाय' का प्रयोग करते हुए वास्तविक आदर खोते जा रहे हैं। 'पिताश्री' एवं 'माताश्री' जैसे आदरणीय सम्बोधनों को छोड़ 'डैड' एवं 'मॉम' के प्रयोग को आधुनिकता का चिह्न समझने लगे हैं। चाहे हम इन उत्कृष्ट मूल्यों को प्राचीन कह कर नकार दें, परन्तु इनके बारे में गहनता से विचार करना अति आवश्यक प्रतीत होता है।

युवा वर्ग असीमित ऊर्जा एवं महत्त्वपूर्ण आकांक्षाओं का एक सतत स्रोत है। इन्हें आने वाले काल में नायक की भूमिका निभानी है और इसी दिशा में युवा वर्ग को दिशा-निर्धारित करने के लिए ये चार स्तंभ है-माता-पिता, शिक्षक, वातावरण एवं स्वयं। लेकिन दुर्भाग्यवश सही मार्गदर्शन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता का अभाव, उचित अवसर एवं लक्ष्य निर्धारण में एकाग्रता की कमी, स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता के कारण वे वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं और इन कर्णधारों के सहयोग से समाज वंचित होते हुए हताश हो उठता है। परिणामवश 'इसाक ऐसीमोव' का यह कथन सत्य हो जाता है-'सात करोड़ में से मात्र एक व्यक्ति ही समय की बालू रेत पर अपने पदचिह्न छोड़ पाते हैं, बाकी तो कीड़े-मकोड़ों की तरह जीवन यात्रा पूरी करते हैं।'

माता-पिता एवं शिक्षक जीवन में पुलों की भूमिका निभाते हैं, जिन पर युवा पीढ़ी अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होती है। अपना दायित्व निभाने के उपरान्त परिवारजन एवं शिक्षक यह संदेश देते हुए कि युवा अब अपने स्वयं पुलों का निर्माण करें एवं समाज के प्रति अपना दायित्व निभाएं, समय के कालचक्र में विलीन हो जाते हैं। काश! इस आत्मीय संदेश को गंभीरता से लिया जाता। अगर आज हम हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण करें, तो उस समय के दिशा-निर्देश आज भी उतने ही प्रासंगिक नजर आएंगे, जितने कि हजारों वर्ष पूर्व थे। जैसे शिक्षा समाप्ति पर गुरु की सीख-सदा सत्य बोलना, गुणों का अनुसरण करना, ग्रंथों का अध्ययन करना कभी नहीं छोड़ना, अपने कल्याण का सदा ध्यान रखना, अपनी सम्पन्नता की कभी अनदेखी मत करना, अपने माता-पिता की पूजा करना और जो भी देते हो, अपनी इच्छा से यथाशक्ति तथा सहानुभूति से देना आदि। अगर उक्त सीख का अनुसरण किया जाए तो वर्तमान की कई प्रकार की समस्याओं का निराकरण हो जाएगा।

हमारे देश की प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951-1956 में शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना रखा गया था। लेकिन आज हम कहाँ पर पहुँच चुके हैं। यह रोजमर्रा के उदाहरणों से स्पष्ट होता है जैसे दूरभाष पर पूछने पर अपने पुत्र/पुत्री से कहते हैं-'कह दो मैं घर पर नहीं हूँ।' मित्र की शादी के निमंत्रण पर-'वैसे मेरा अभी कोई अवकाश तो शेष नहीं है, परन्तु आप की शादी में बीमारी का अवकाश लेकर आ जाऊँगा, ऐसी स्थिति में अब हमें एक ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है, जो केवल मस्तिष्क को शक्ति नहीं, अपितु मस्तिष्क, हाथ व हृदय तीनों के समन्वय पर आधारित हो, जिससे जीवन मूल्यों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। यह शिक्षा पद्धति हमें अपने स्वयं द्वारा ही परिवार से शुरू कर बच्चों को इसके प्रति प्रेरणा प्रदान करनी होगी।

एक अत्यंत ही व्यस्त व्यापारी थका हुआ घर आया और आते ही समाचार-पत्र पढ़ने लगा। उसका छोटा पुत्र उससे बात करने का प्रयास करता रहा। उसे दूर भेजने के प्रयोजन से उस व्यापारी ने समाचार-पत्र के एक पृष्ठ को फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए तथा बच्चे को उस फटे पृष्ठ को जोड़ने के लिए कहा तो थोड़ी देर बार उसका पुत्र वापस आया और जुड़ा समाचार-पत्र अपने पिता को थमा दिया। कैसे? उस समाचार-पत्र के पृष्ठ के पीछे एक बच्चे का चित्र छपा था। उसने उस चित्र की मदद से ही फटे हुए पृष्ठ को फिर जोड़ दिया। यदि बच्चे को सही तरह से विकसित होने का अवसर प्रदान किया जाए तो संसार फिर से व्यवस्थित हो जाएगा।

आज हम दो राहों पर खड़े हैं और निर्णय करने में गंभीर त्रुटियाँ करते हैं। हम अपनी समझ-बूझ और ज्ञान के अहंकार के आधार पर दूसरों के लिए निर्णय करते रहते हैं। एक बच्चे ने अपने पिता से कहा कि कक्षा में उसे ब्लैक बोर्ड नजर नही आता। पिता ने उसकी आँखों की बहुत से नेत्र चिकित्सकों से जाँच करवाई। सभी चिकित्सकों ने यही कहा कि उसके नेत्र ठीक हैं। जब उस बच्चे से पूछा गया, तो उसने कहा, 'मेरे आगे एक लम्बा लड़का बैठता है इसलिए मुझे ब्लैक बोर्ड नजर नहीं आता।'

जीवन मूल्यों के अतिरिक्त हमें सार्वभौमिक मूल्यों के बारे में सजग रहना आवश्यक है, जैसे-अहिंसा, नम्रता, मानवता, प्रसन्नता, दान देने की प्रवृत्ति आदि। सार्वभौमिक मूल्यों के आधार पर ही अन्य आवश्यक मूल्यों का निर्धारण करते हैं जैसे-गरीबों के प्रति दयाभाव, धर्म-निरपेक्षता, हर एक से स्नेह, उत्कृष्टता, सहभागिता, दूसरों के विचारों का आदर, उत्तरदायित्व, सहानुभूति आदि। जीवन मूल्यों के निर्धारण के लिए स्वावलंबी होना, नियमों पर आधारित जीवन जीना एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

स्वावलंबी होना क्यों महत्त्वपूर्ण है, इसे यूं समझें। एक व्यक्ति को एक तितली की चक्रपट्टी (कोकून) मिली। एक दिन उसे चक्रपट्टी में एक छोटा छिद्र दिखाई दिया। उसने देखा की तितली उसमें से बाहर आने का प्रयत्न कर रही है, मगर छिद्र से निकल नहीं पा रही है। उसने कोकून का छेद बड़ा कर दिया और तितली बाहर आ गई। परन्तु उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस तितली के शरीर पर सूजन थी और उसके पंख बहुत छोटे थे। वह तितली को कई दिनों तक देखता रहा, मगर न तो कभी उसके पंख बढ़े और न ही सूजन मिटी। वह जीवन पर्यन्त उसी अवस्था में रही तथा कभी भी उड़ान नहीं भर सकी। आखिर ऐसा क्यों हुआ? अपनी दयादृष्टि व जल्दबाजी से उस व्यक्ति ने प्रकृति के नियमों को तोड़ दिया था। कोकून से निकलने के प्रयास से ही तितली के अंगों का तरल कैमिकल पंखों में जाता है और पंख पूर्ण रूप से विकसित होकर उसे स्वतंत्र होने एवं उड़ान भरने में मददगार होते हैं। प्रकृति के नियमों के अनुसार संघर्ष कर स्वावलंबी होना एक आवश्यक

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

प्रक्रिया है।

प्रकृति के ये उदाहरण उस शिक्षक की ही भांति है जो अपने विद्यार्थियों को सिर्फ विवेक एवं ज्ञान के भवन में ही प्रवेश नहीं दिलाते बल्कि स्वयं के लिए मनन करने की शक्ति प्रदान करते हैं, ताकि जीवन में संघर्ष की शक्ति प्राप्त हो सके।

हम स्वयं के लिए नियम बनाने में आनन्द का अनुभव करते हैं और उससे भी अधिक आनन्द हम उन नियमों को तोड़ने में प्राप्त करते हैं। ऐसी स्थिति में मूल्य आधारित जीवन का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि क्या नियम के बिना एक सैनिक युद्ध कर सकता है? क्या एक कैप्टन अपने जहाज को उड़ा सकता है? क्या एक खिलाड़ी खेल सकता है? क्या संगीतकार वाद्य बजा सकता है, नहीं। तो फिर अपने जीवन में क्या हम सांस्कृतिक, वित्तीय, शिक्षा, व्यवसाय, वातावरण, सामाजिक दायित्व आदि पहलुओं का दायित्व बिना नियमों के निभा सकते हैं?

रोशनी को लेकर चलने से छाया पीछे रह जाती है। यह रोशनी आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाने से सहज प्राप्त हो जाती है। रूडयार्ड किपलिंग की पंक्तियों में एक व्यावहारिक आध्यात्मिक जीवन का सुन्दर चित्रण है-'अगर आप समूह में रहकर भी अपने गुणों को सुरक्षित रख सकें, अगर राजाओं के साथ रहकर भी अपना सामान्य व्यवहार न छोड़े, अगर तुम्हे तुम्हारे शत्रु या मित्र कभी पीड़ा न पहुँचा सकें और अगर सब व्यक्ति आपके साथ हों, मगर कोई भी अधिक नजदीक नहीं हो, तो ही यह वसुंधरा और इसमें जो कुछ है तुम्हारा होगा।'

आध्यात्मिक दृष्टिकोण सदैव कोई चमत्कार प्रदान नहीं करता, लेकिन धारणा में बदलाव अवश्य प्रदान करता है, जिससे समता की स्थिति प्राप्त होती है एवं हर परिस्थिति में जीवन जीने की कला निहित होती है। मूल्यों पर आधारित जीवन से हम अव्यवस्था को व्यवस्था और चिन्ता को आनंद में बदल सकते हैं तथा ज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर हो सकते हैं। हम यह करने में सक्षम हैं, परन्तु हमने यदि इस दिशा में कदम उठाने में विलम्ब किया तो प्रकृति जो सर्वशक्तिमान है, इस कार्य को संपादित करने के लिए ठोस कदम उठाएगी।

गाँव-श्रीसेला, पोस्ट- तह. बाली,
पाली (राज.)-306701
मो: 9460877333

NCC लेफ्टिनेंट जनरल हुए कैडेट से रूबरू

❑ तनवीर सिंह डऊकिया

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खड़ीन (बाड़मेर) के कैडेट से मुखातिब होने के लिए विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त महानिदेशक एनसीसी लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह; निदेशक राजस्थान एनसीसी एयर कमाडोर ललित जैन; जोधपुर ग्रुप डिप्टी कमांडर कर्नल शरद श्रीवास्तव; 16 राज बटालियन बाड़मेर कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल आर एस कुशवाह; लेफ्टिनेंट कर्नल मधुसूदन; लेफ्टिनेंट कर्नल पंकज गुरंग ने शिरकत की। स्वागत रस्म एवं स्वागत नृत्य से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विद्यालय के कैडेट से बात करते हुए सिंह ने कहा कि एनसीसी आपके जीवन का एक स्वर्णिम अवसर है जहाँ से आप आगे बढ़कर देश की सेवा कर सकेंगे। सीमावर्ती जिले के इस विद्यालय में आप सभी कैडेट से मिलकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। आप सभी एकता एवं अनुशासन से आगे बढ़े, अवश्य सफल होंगे। सिंह ने आश्वासन दिया कि जूनियर विंग के साथ-साथ सीनियर विंग की स्वीकृति प्रदान करने का भी मेरा प्रयास रहेगा। कार्यवाहक प्रधानाचार्य तनवीर सिंह डऊकिया ने आभार व्यक्त करते हुए बताया कि हमारे जिले एवं विद्यालय के साथ-साथ एनसीसी कैडेट के लिए महानिदेशक महोदय ने अपना अमूल्य समय प्रदान किया इससे विद्यालय एवं कैडेट को एक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिली, सरपंच श्री हेमाराम एवं विद्यालय स्टाफ की मौजूदगी में मेहमानों को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए विद्यालय की उपलब्धियों से परिचित करवाते हुए मंच संचालन व्याख्याता श्री सिमरथाराम चौधरी ने किया।

बाड़मेर जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित खड़ीन ग्राम आजादी से पहले एवं बाद में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी ग्राम रहा है। बाड़मेर जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर स्थित यह ग्राम शिक्षा ,खेलकूद व समाज सुधार के लिए जिला एवं राज्य स्तर पर अपना नाम स्थापित किए हुए हैं।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खड़ीन-बाड़मेर जिले के प्रतिष्ठित विद्यालयों में शुमार खड़ीन विद्यालय की स्थापना 1954 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में हुई, 1967 में उच्च प्राथमिक, 1984 में माध्यमिक एवं 2002 से उच्च माध्यमिक के रूप में संचालित है। वर्तमान में विद्यालय में कला एवं विज्ञान दोनों संकाय संचालित है जिसमें 203 छात्राएँ एवं 302 छात्र अध्ययनरत हैं। विद्यालय से अध्ययन कर वर्तमान में 425 से अधिक पूर्व विद्यार्थी केंद्र व राज्य सरकार के विभिन्न पदों को सुशोभित कर रहे हैं। खड़ीन विद्यालय बालिका हैंडबॉल खेलकूद में 2011 से 2019 तक लगातार जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्य स्तर पर जिले का नेतृत्व करता रहा है। अब तक 70 से अधिक बालिकाएँ राज्य स्तर पर भाग ले चुकी है। 12 बालिकाओं ने नेशनल स्तर पर भाग लिया एवं 6 बालिकाएँ गोल्ड मेडलिस्ट रह चुकी है। विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा भी कक्षा 9 से 12 के लिए संचालित है।

विद्यालय में सत्र 2020-21 से NCC की शुरुआत हुई जिसमें प्रथम वर्ष में 25 जूनियर डिवीजन एवं 25 जूनियर विंग तथा सेकंड ईयर में 25 जूनियर डिवीजन एवं 25 जूनियर विंग कुल मिलाकर 100 कैडेट NCC में शामिल है। NCC में शामिल होने से विद्यालय में एवं कैडेट के विचारों, आचरण, अनुशासन, एकता में बहुत परिवर्तन आया है। विद्यार्थी ऊर्जा व जोश के साथ NCC में शामिल होकर इसमें अपने भविष्य निर्माण के लिए उत्साहित है।

महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह के आगमन से कैडेट अत्यधिक उत्साहित व अपने आप को ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। कैडेट में इससे भारतीय सेना में शामिल होकर देश सेवा की भावना जाग्रत हुई है।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खड़ीन
ब्लाक-रामसर, बाड़मेर (राज.)

Rajasthan Education Department

शिक्षा और सिनेमा

❐ डॉ. गोमती साँखला

शिक्षा सामाजिक व्यवस्था का एक आवश्यक अंग है। सामाजिक मूल्यों में यदि किसी प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता हो तो शिक्षा प्रणाली को सुनियोजित करना होता है। जिस शिक्षा प्रणाली में समाज की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं के लिए स्थान नहीं हो, वह निश्चित ही न समाज को लाभ पहुँचा सकती है और न उसके द्वारा राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है। जिस समय भारत में अंग्रेजों के शासन का प्रारंभ हुआ, उस समय यहाँ एक देशी शिक्षण प्रणाली प्रचलित थी जो देश की आवश्यकताओं के सर्वथा अनुरूप थी। बहुत बड़ी संख्या में देशी विद्यालय थे। अंग्रेजों ने इस शिक्षा पद्धति को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया। यदि इसका विकास किया जाता तो देश में इतनी अशिक्षा व बेरोजगारी नहीं होती जितनी अंग्रेजी शासन काल के अंत में थी। ब्रिटिश शासनकाल में सार्वभौमिक शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। अंग्रेजों की तो यह नीति थी कि भारत में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना चाहिए जो भारतीय संस्कृति का गला घोंट दे। वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो सदा-सर्वदा अंग्रेजों का भक्त बना रहे। आधुनिक भारतीय शिक्षा की आधारशिला ब्रिटिश शासकों के हाथों रखी गई थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न शिक्षा-आयोग जैसे- विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग (राधाकृष्णन आयोग), माध्यमिक शिक्षा-आयोग (मुदालियर आयोग) और भारतीय शिक्षा-आयोग (कोठारी आयोग) इत्यादि ने भारतीय शिक्षा के उद्देश्य के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। सन् 1948 में प्रसिद्ध दार्शनिक एवं विचारक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में नियुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अनुसार प्रजातंत्र सामान्य, व्यावसायिक एवं जीविकोपार्जन संबंधी शिक्षा के उच्च स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा का प्रसार नए ज्ञान की प्राप्ति की आकांक्षा में वृद्धि, जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयत्न, समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जीविकोपार्जन की सुविधा की व्यवस्था करना विश्वविद्यालयों का कार्य होना चाहिए। इस आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा का उद्देश्य जीवन एवं ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में समन्वय करना बताया है, इसलिए यह आवश्यक है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में जो विषय पढ़ाए जाए वे जीवन से संबंधित हो तथा उनमें सभी तत्वों का समावेश हो। माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था की आदतों, प्रवृत्तियों एवं चारित्रिक गुणों के विकास के लिए अपना योगदान देना चाहिए ताकि यहाँ के नागरिक योग्यतापूर्वक लोकतंत्रात्मक नागरिकता के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने की क्षमता प्राप्त कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा-आयोग अथवा कोठारी आयोग (1966) के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक उन्नयन की जो प्रणाली अपनायी गयी है, वर्तमान शिक्षा प्रणाली उसके ठीक विपरीत है। शिक्षा में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक सुधार यह अपेक्षा रखता है कि उसे व्यक्तियों के जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबद्ध कर दिया जाए, जिससे यह सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली साधन बन सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने प्रजातंत्र को जीवन-दर्शन के रूप में अपनाया, किंतु प्रजातंत्र की मांग के अनुरूप राष्ट्रीय एकता के विकास हेतु आज भारतीय शिक्षा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तनों की नितांत आवश्यकता है अन्यथा उसके भयंकर परिणाम हमें भुगतने पड़ेंगे। समय-समय पर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने वाले राष्ट्रीय महत्त्व की फिल्मों, आकाशवाणी-कार्यक्रमों, नाटक, वाद-विवाद कार्यक्रम, विचार संगोष्ठियों का विद्यालयों में आयोजन किया जाना चाहिए। कोठारी शिक्षा-प्रतिवेदन ने भी इन बातों की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि शिक्षा को समाज एवं व्यक्तित्व के जीवन की आवश्यकताओं तथा महत्त्वाकांक्षाओं से जोड़ने की तीव्रतम आवश्यकता है, जिससे देश में शीघ्र ही उचित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन संभव हो सके। पर यह दुर्भाग्य ही है कि स्वतंत्रता के इतने वर्ष पश्चात भी हमारी शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बन पाई है। बॉयड एच. बोड का कथन है-'समाज और शिक्षा का एक-दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का संबंध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है।'

जनसंचार साधन जैसे- सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र इत्यादि भी व्यक्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनमें कुछ प्रमुख रूप से मनोरंजन, शिक्षण, सूचना, उपभोक्ता व्यवहार और समाजीकरण है। वेब्स्टर शब्दकोश के आधार पर शिक्षण का संबंध ज्ञान, योग्यता, विकास, औपचारिक स्कूल, प्रशिक्षण सीखना, पढ़ाना और अध्ययन की विधियों से है। सामान्य रूप से कहें तो शिक्षा का संबंध विस्तृत तथ्यों से है-

- सांस्कृतिक विरासत शिक्षा से ही हस्तांतरित होती है।
- शिक्षा से ज्ञान के संचय में वृद्धि होती है।
- समाज की प्रकृति और उसे समझने में मदद मिलती है।
- समाजीकरण होता है।
- नए विचारों की खोज होती है।
- शैक्षणिक प्रक्रिया मूलतः औपचारिक और अनौपचारिक, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, सकारात्मक और नकारात्मक आधार से जुड़ी होती है।

आज सूचना व संचार प्रौद्योगिकी ने जीवन के हर क्षेत्र को अपने प्रभाव संरक्षण कार्य क्षेत्र में ले लिया है, जिसमें शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित किया है। भारतीय सिनेमा के जन्मदाता दादा साहेब फाल्के ने कहा था कि फिल्म मनोरंजन का उत्तम माध्यम है लेकिन वह ज्ञानवर्धन के लिए भी अत्यंत बेहतरीन माध्यम है।

प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह का मानना है कि सिनेमा शिक्षा देने में मदद का निम्न कार्य कर सकता है-

- सिनेमा द्वारा सीखने की परिस्थिति को प्रेरणा व उत्तेजना मिलती है।
- सिनेमा जटिल तथ्यों को सरल तरीके में बता सकता है।
- ज्ञान को एक सही दिशा में बताता है।
- ज्ञान के सार्वभौमिकीकरण में (Universalization) सहायता मिलती है।
- शिक्षा के विकास में एवं नए संदर्भ जानने में मदद दिलाता है।

सिनेमा क्लास रूम की भूमिका भी निभाती है। इसकी दो मूल विशेषताएं भी हैं-

1. सिनेमा किसी भी विषयवस्तु को दिखा सकता है। सूक्ष्म जानकारी को विस्तृत में बताता है, जैसे- आंदोलन, विकास, इतिहास व वृद्धि आदि।
2. फिल्म कक्षा के उस वातावरण को उपलब्ध करा सकती है जो आसानी से उपलब्ध नहीं है, जैसे- अफ्रीका की जनजातियाँ।

W/o श्री नवीन सैनी A-64 A भास्कर एन्कलेव 2nd,
मार्ग नं.-04, मानसरोवर, जयपुर
मो: 9694080765

Rajasthan Education Department

समूह गीतों की उपादेयता

❐ प्रमोद दीक्षित मलय

गीत जीवन्त समाज के परिचायक होते हैं। समाज, जीवन एवं लोक व्यवहार में गीत रचे-बसे हैं। समाज में धार्मिक संस्कारों का अनिवार्य हिस्सा होते हैं गीत। गीत बेजान नहीं होते, उनमें समय का स्पंदन होता है। गीत हृदय से हृदय के मिलन का सुरीला सायुज्य पथ है। गीत मलय बयार का शीतल झोंका है। राग की मधुरिम सुखद यात्रा है। गीत स्वयं में खो जाने की, समाधिस्थ हो जाने की भावभूमि है। सुर, लय, ताल, आरोह-अवरोह और गीत बोलने की गायक कलाकार की एक विशेष शैली एवं भाव भंगिमा हर व्यक्ति को अपनी ओर खींचती है। गीत सबको पसंद होते हैं। गीतों के माध्यम से किसी विषयवस्तु को सरलता से न केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है बल्कि कहीं अधिक बोधगम्य भी बनाया जा सकता है। गीत वातावरण की नीरसता, एकरसता, ऊब, जड़ता और भारीपन को दूर कर सरस, समरस, उमंगित, गतिशील और उत्साही परिवेश का निर्माण करते हैं।

व्यक्ति के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गीत रोचक और ऊर्जावान बना देते हैं। गीत केवल शब्दों का कोरा समुच्चय भर नहीं है, बल्कि इनमें माटी की महक है, लोकजीवन की गमक है और सामाजिक प्रवाह का कलरव भी। ये समकालीन संस्कृति की धड़कन है, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। गीतों में खुशी, करुणा, स्नेह-प्रेम, आशा-विश्वास, ममता-समता, आत्मीयता, हर्ष, ललक, वात्सल्य, मिलन के मनोहारी चित्र अंकित हैं तो दुःख, दर्द, पीर, कसक, निष्ठुरता, निराशा, विषमता, अलगाव, आंसू, बिछोह भी प्रतिबिम्बित हैं। गीतों में अगर भौगोलिक सीमाएँ, नदी, तालाब, पर्वत, घाटी, जंगल, कोहरा, जाड़ा, गर्मी, वर्षा, पवन, फूल और पशु-पक्षी प्राणवान हो उठते हैं तो इतिहास भी अपने पात्रों, पुरा प्रस्तर औजारों, मुहरों-मुद्राओं, सन्धि-पत्रों, युद्धों और हार-जीत के साथ प्रत्यक्ष होने को लालायित हो उठता है। इतना ही नहीं फाग, हौरी, चैती, बिरहा, सावनी, कजरी के साथ-साथ कहरई, कुम्हरई, धोबी, बैलही, दिवारी, उमाह आदि विभिन्न जाति समूहों के अपने-अपने गीत हैं, जिनमें उनकी जिजीविषा, पहचान, अस्तित्व एवं अस्मिता, गौरव-बोध और सांस्कृतिक वैभव समाया है। गीत राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को भी पुष्ट करते हैं। शैक्षिक गतिविधियों में भी गीत सहायक सामग्री के रूप में अपनी सशक्त भूमिका निर्वहन करते हैं। किसी गोष्ठी, समारोह में मुख्य वक्ता के पूर्व विषयवस्तु से जुड़े गीत की प्रस्तुति एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण कर वक्ता की अभिव्यक्ति संप्रेषणीयता में वृद्धि कर श्रोता समूह के ध्यानाकर्षण करने में समर्थ होती है।

शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गीतों का महत्त्व निर्विवाद स्वीकार्य है। यह देखने में आया है कि प्रातः विद्यालय में प्रवेश करते हुए उत्साह-उल्लास से भरे पूरे हँसते-खिलखिलाते फूल से सुकोमल चेहरे घर जाते समय मुरझाए और निर्जीव से दिखाई पड़ते हैं। इन 6-7 घण्टों में बच्चे विद्यालय में आनंद रहित परिवेश में जीने को विवश होते हैं। वे समय-सारिणी के अनुकूल व्यवहार करने को मजबूर होते हैं। घण्टी बजती है, घण्टे बदलते हैं, विषय बदलते हैं, शिक्षक बदलते हैं लेकिन नहीं बदलता तो वह बच्चों को मुँह चिढ़ाता डरावना बोझिल वातावरण और पारम्परिक शिक्षण का तरीका। परिणामस्वरूप बच्चे निष्क्रिय रहते हैं और उनका सीखना बाधित होता है। बालमन के पारखी कुशल शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान माहौल को रुचिपूर्ण एवं आनन्ददायी बनाने के लिए बीच-बीच में प्रेरक चेतना गीतों का प्रयोग करके न केवल बच्चों का मन जीत लेते हैं बल्कि प्रस्तुत विषयवस्तु को उनके लिए सहज ग्राह्य बना देते हैं। हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन तथा नन्हा-मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ। बोलो मेरे संग जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद। ये गीत किस प्रकार बालमनों में आशा और विश्वास का संचार करते हैं, किसी से छिपा नहीं है।

इसी प्रकार प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी सत्रों के बीच-बीच में प्रशिक्षक समूह द्वारा गीतों का प्रयोग करके प्रशिक्षण को जीवंत और सक्रिय बनाया जा सकता है। एक अच्छा प्रशिक्षक संबंधित विषय की भूमिका के रूप में उसी भाव एवं विचारों से ओतप्रोत गीत का सामूहिक गायन कर न केवल वातावरण तैयार कर लेता है बल्कि प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए अपना प्रभाव भी जमा लेता है। यदि हम बच्चों की पढ़ाई के सम्बन्ध में शिक्षकों, अभिभावकों या विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक आयोजित करें तो संवाद से पूर्व गीत का सामूहिक गायन वैचारिक वातावरण का निर्माण कर देता है, बच्चों की पढ़ाई पर विचार होना चाहिए। जिसकी जिम्मेदारी उससे बात होनी चाहिए या फिर, ले मशालें चल पड़े हैं, अब लोग मेरे गाँव के। अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में विद्यालयी परिवेश एवं कक्षा-कक्षों का वातावरण प्रजातांत्रिक, बाल मैत्रीपूर्ण तथा दण्ड एवं भयमुक्त बनाने पर बल दिया गया है। खेलकूद, गीत-कहानी और बाल आधारित अन्यान्य शैक्षिक गतिविधियों/क्रियाकलापों के प्रयोग से विषयवस्तु की प्रस्तुति सरल हो जाती है जिसको बच्चे अर्थ समझते हुए ग्रहण करते हैं। स्वानुशासन के लिए प्रेरित होते हैं तथा कक्षा में भी सक्रिय सजीव रहते हैं। बच्चों में आत्मविश्वास, मौलिक चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास होता है। शिक्षक भी प्रसन्न मन और उमंग से भरे रहते हैं। बच्चों के पढ़ना-लिखना सीख सकने में गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी गीत में पिरोए वर्णों और शब्दों से बच्चे खेलते हैं, जीते हैं और उनसे अपनेपन का एक रिश्ता जोड़ लेते हैं। अगर भाषायी कौशलों, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के विकास की बात करें तो गीत सहायक सिद्ध होते हैं। पढ़ना बल्कि यह कहें कि सीखने की पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए नीरस थकाऊ और कष्टदायी न होकर रोचक, सरस और आनन्ददायी हो जाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बच्चों के मन, उसकी इच्छा-आकांक्षा, सपनों, भावनाओं को समझें। हम यह जानने की कोशिश करें कि वह क्या चाहता है। हम उसको उस तरीके से पढ़ाए जिस तरीके से वह पढ़ना चाहता है, न कि जिस तरीके से हम पढ़ाना चाहते हैं। गीतों का प्रयोग बच्चों को प्रेरित करता है। वास्तव में गीत शीतल निर्झर की भाँति चरैवेति-चरैवेति का ललित लोक संदेश देते हुए व्यक्ति में सत्साहस, सामर्थ्य, सहनशीलता, सहकारिता, सामूहिकता एवं सर्वमांगल्य के दैवीय भाव जाग्रत करते हैं। गीतों के शब्दों में ऊर्जा का अक्षय स्रोत होता है और पंक्तियों में सम्मोहन। गीत कुंठित मन की प्रेरणा हैं, प्रदर्शन का पुरस्कार हैं और मन का परिमार्जन भी। आइए, जीवन में गीतों को सहयात्री बना लें, सांसों का साथी बना लें तो हर राह आसान हो जाएगी, जीवन उपवन सा सौरभमय सुवासित हो जाएगा।

शास्त्री नगर, अतर्रा-210201
बाँदा (उ.प्र.)
मो: 9452085234

Rajasthan School Education Department

शैक्षिक नवाचारों के साथ बढ़ते कदम : ब्लॉक सागवाड़ा

❒ राजेन्द्र कुमार पंचाल

शिक्षक राष्ट्र शिल्पी होता है वह अपने चिन्तन से सम्पूर्ण समाज को जाग्रत व लाभान्वित करता है। वह समाज की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सभ्यता और संस्कृति का संवाहन करता है। वही शिक्षक विद्यार्थियों में राष्ट्र देवो भवः का प्रबोध देता है। यदि राष्ट्र के उत्कर्ष का प्राण है तो वह है- शिक्षा। इस शिक्षा के मायने समय के साथ तीव्र गति से बदल रहे हैं। ऐसे बदलते परिवेश में राजस्थान के दक्षिणी अंचल के जिले डूँगरपुर का ब्लॉक सागवाड़ा अपने नवाचारों और विविध उपायों के कारण अपनी अलग पहचान रखता है।

इस ब्लॉक में राजकीय व निजी विद्यालय सहित कुल 507 विद्यालय है। जिसमें 44 PEEO (पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी) हैं और प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक सहित 350 राजकीय विद्यालय हैं।

विगत दो सत्रों में कोरोना काल के कारण शैक्षिक गतिविधियाँ काफी प्रभावित रही फिर भी ब्लॉक अपने निर्धारित कार्यों को पूरा करते हुए अनवरत बढ़ता रहा है, सागवाड़ा ब्लॉक ने ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम को भी पूर्ण मनोयोग से पूरा करते हुए स्माइल-2.0 व स्माइल-3.0 की अभिनव योजना द्वारा घर-घर, ढाणी-ढाणी शिक्षा पहुँचाई और इन प्रयासों से विद्यार्थियों को हो रहे नुकसान की काफी हद तक भरपाई भी की। राजस्थान समग्र शिक्षा परिषद् की संयुक्त निदेशक महोदया ममता दाधीच ने अपने तीन दिवसीय यात्रा के दौरान यहाँ पर शैक्षिक, सहशैक्षिक व भौतिक गतिविधियों के संदर्भ में भी अवलोकन कर कई सारे नवाचारों को देखा और सागवाड़ा ब्लॉक के कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की।

इस ब्लॉक के प्रत्येक विद्यालय के शिक्षकों में कार्य करने का अनोखा अंदाज, समर्पण भाव और परिश्रम की पराकाष्ठा है, जिसके कारण वातावरण निर्माण होने से सागवाड़ा ब्लॉक एक शिक्षा का केन्द्र (एजुकेशन हब) बनकर उभर रहा है। किसी भी ब्लॉक के शैक्षिक-सहशैक्षिक व भौतिक विकास के आंकलन का पैमाना शाला दर्पण रैंकिंग पर निर्भर करता है, जिसमें सागवाड़ा ब्लॉक सबसे अग्रणी व सिरमौर रहा है जिसका प्रदर्शन जिले के साथ-साथ पूरे संभाग में श्रेष्ठ रहा है। इस ब्लॉक के सभी विद्यालयों के नामांकन में भी आशातीत वृद्धि हुई। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार गार्गी पुरस्कार व स्कूटी प्राप्त करने वाली बालिकाओं की संख्या तीन गुना बढ़ी। 2019-20 में डूँगरपुर जिले के 10 ब्लॉक में इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार 38 बालिकाओं को प्राप्त हुआ जिससे 18 बालिकाएँ सागवाड़ा ब्लॉक की रही जो कुल चयन की 48 प्रतिशत रही। 2020 तक 99 विद्यालय 4 व 5 स्टार बन चुके हैं।

प्रतियोगिता के इस युग में अगर विद्यालयों में कुछ अलग करने का जुनून पैदा हो जाए तो क्या नहीं किया जा सकता है? कुछ ऐसा ही हुआ इस ब्लॉक में, प्रत्येक विद्यालय ने अपने विद्यालय में रंगरोगन व सौन्दर्यकरण कर एक नया कीर्तिमान बनाया और ब्लॉक के लगभग 327 से अधिक राजकीय विद्यालयों में एक साथ रंगरोगन किया गया। जिससे ब्लॉक का हर विद्यालय चमक उठा और नवीन वातावरण निर्माण हुआ। ज्ञान संकल्प पोर्टल पर ब्लॉक को भामाशाहों के माध्यम से वर्ष 2019-20 में 350 विद्यालयों को दान स्वरूप 1375018 रुपये (तेरह लाख पिचहत्तर हजार अठारह रुपये) की राशि प्राप्त हुई जो पूरे जिले की कुल उपलब्धि का 44 प्रतिशत है। ब्लॉक ने आनंददायी शिक्षा के तहत प्राथमिक शिक्षा वर्ग में प्रत्येक विद्यालय में खिलौना बैंक की स्थापना करते हुए एक विशेष नवाचार किया जो काफी सराहनीय रहा।

पंचायत में पीईईओ क्षेत्र के प्रत्येक शिक्षक के लिए कॉमन ड्रेस कोड तय किया जिसे प्रत्येक सोमवार व गुरुवार को विद्यालय में सभी शिक्षक पहनते हैं जो एक अद्वितीय उदाहरण बना है, जिससे ब्लॉक की एक नई पहचान बनी।

नवाचारों के विशेष प्रयोगों में इस ब्लॉक में प्रत्येक शिक्षक एक पौधारोपण साथ ही ट्री-गार्ड लगाकर एक नई मिसाल पेश की और ब्लॉक के हर विद्यालय में गायत्री परिवार के सहयोग से 2500 से अधिक वृक्ष वितरण करवाकर ब्लॉक को हरित ब्लॉक बनाया, साथ ही ब्लॉक में 6648 नवीन प्रवेश के विरुद्ध 9500 पौधारोपण कर हरित पाठशाला बनाई जिसमें सभी वृक्ष आज भी जीवित है। विगत समय में हर विद्यालय में जहाँ भी जगह एवं सुविधा युक्त स्थान उपलब्ध हुआ वहाँ वृक्षारोपण व बगीचा अवश्य बनाया गया है।

ब्लॉक के प्रत्येक विद्यालय में प्रति शिक्षक द्वारा एक बालक को गोद लेकर पूण्यार्जन भाव रखकर आर्थिक दृष्टि से कमजोर बालकों की आवश्यकताओं को पूरा करने व सहयोग करने की पहल शुरू की जिससे बालकों को अच्छा संबलन मिल रहा है। इस ब्लॉक ने गत वर्ष 80 प्रतिशत पंचायतों को उजियारी पंचायत बनाया जो यह दर्शाता है कि ब्लॉक अब पूर्ण रूप से हर वंचित बालक को शिक्षा से जोड़ने में कामयाब हो रहा है। सागवाड़ा ब्लॉक के बढ़ते कदमों के पीछे यहाँ के प्रत्येक कार्मिक, हर शिक्षक, हर संस्थाप्रधान व PEEO के साथ ही रचनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री भेमजी खांट व उनकी पूरी टीम को जाता है। आपने इस ब्लॉक के हर विद्यालय तक पहुँच बनाई और सामूहिक सोच-सामूहिक कार्य का नारा देकर एक टीम भावना पैदा की। महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले कार्मिकों को समय-समय पर बैठकों के माध्यम से अभिप्रेरित किया जो नित नवीन ऊर्जा का संचार करती रही। सचमुच सागवाड़ा ब्लॉक के कार्यों से न केवल विभाग बल्कि अभिभावक अपने बच्चों में शिक्षा, संस्कार एवं नवाचार की त्रिवेणी बहने से अति प्रसन्न है इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि इन विद्यालयों में नामांकन बढ़ रहा है और यह सिलसिला अनवरत जारी है तब याद आती है जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ-

इस पथ का उद्देश्य नहीं श्रांत भवन में टिक जाना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करियाणा,
डूँगरपुर (राज.)
मो: 8239869911

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2022

1. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 31.01.2022

2. वर्ष 2019-20, 2020-21 एवं 2021-22 में नव क्रमोन्नत विद्यालयों (जिन्हें आईएफएमएस आईडी आवंटित हो चुकी है) को ई-ग्रास के यूजर आईडी व पासवर्ड जारी किए जाने के सम्बन्ध में।

1. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 31.01.2022

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हिनि/28129/2021-2022 दिनांक : 20.12.2021 ● समस्त संयुक्त निदेशक ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● समस्त प्राचार्य डाइट ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ। ● विषयः हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 31.01.2022

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के अन्तर्गत शिक्षा विभाग में राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त वर्ग के शिक्षा अधिकारियों/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/अध्यापकों/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारियों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनार्थ वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप-पत्र में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किए जावेंः-

1. यह योजना राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत समस्त वर्ग के कार्मिकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. **व्यावसायिक शिक्षा** : इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं मैनेजमेंट, बी.एड., सी.ए., एस.टी.सी., नर्सिंग फार्मेसी पाठ्यक्रम में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार हैः-

(अ) **इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (चार वर्ष)**-(आठ सेमेस्टर) : डिसिपलिन ऑफ सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेली-कम्यूनीकेशन, कम्प्यूटर साईन्स एण्ड इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, आर्केटैक्चर, टैक्सटाइल, माईनिंग, रबर टैक्नोलोजी, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्स्ट्रुमेन्टेशन एण्ड कंट्रोल, प्रिन्टिंग, केमिकल टैक्नोलोजी, मेटेलर्जीकल इंजीनियरिंग, एरोनोटिकल इंजीनियरिंग, प्रोडेक्शन टेक्नोलोजी, शिप बिल्डिंग एण्ड फेब्रिकेशन टैक्नोलोजी, नेवल आर्किटेक्चर, पैट्रोलियम इंजीनियरिंग।

(ब) मेडिकल (एलोपेथी), होम्योपेथी, आयुर्वेदिक फार्मेसी ऑफ मेडिसन्स एवं पशु आयुर्विज्ञान।

(स) उपर्युक्त पैरा (अ, ब) में उल्लेखित डिग्री (4 वर्ष), डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी-फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात मैनेजमेंट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(र) बी. एड. तथा एस.टी.सी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की मान्य है।

3. प्रार्थना-पत्र की सभी प्रविष्टियाँ स्वयं कर्मचारी/संस्थाप्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 12 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटो स्टेट प्रतियां स्वीकार्य नहीं होगी। समेकित भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा।
5. सत्र 2021-22 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता राशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। राज्य कर्मचारी के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र 2021-22 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।
8. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
9. यह सहायता राशि वर्ष 2021-22 के लिए मान्य होगी, जिन्होंने इस सत्र में प्रवेश लिया हो उन्हें ही सहायता दी जाएगी।
10. प्रार्थना-पत्रों के आधार पर पात्रता की जांचोपरांत एवं हितकारी निधि कोष में राशि उपलब्ध होने पर सहायता देय होगी। प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर दिए जाने से यह तात्पर्य नहीं है कि आपको सहायता मिल जाएगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

11. राज्य कर्मचारी, हितकारी निधि का नियमित अंशदाता वर्ष 2018-19 से होना चाहिए। यदि अंशदान जमा करवाया हुआ है तो कटौती शिड्यूल एवं ई.सी.एस. की प्रति वर्ष 2018-19 एवं 2019-20, 2020-21 तथा 2021-22 की संलग्न करें।
12. सहायता राशि पाठ्यक्रम हेतु रुपये 10,000/- निर्धारित है।
13. प्रार्थना पत्र निर्धारित सीमा तक प्राप्त नहीं होने की सूरत में शेष प्रार्थना पत्रों पर विचार किया जा सकेगा।
14. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र, शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना-पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जाएगी। सहायता राशि 500 कार्मिकों के प्रार्थना पत्रों पर दी जानी है जिसे वरीयता के आधार पर प्रदान की जाएगी।
15. प्रार्थना पत्र के साथ वर्ष 2018-19, 2019-20, 2020-21 तथा 2021-22 की ई.सी.एस. एवं शिड्यूल की प्रति संलग्न की जानी है तथा जिन कार्मिकों का वेतन पी.डी. हैड से आहरण होता है उन्हें CBEO (आहरण एवं वितरण अधिकारी) से ECS एवं शिड्यूल की प्रति प्राप्त कर संलग्न करनी होगी, इसके अभाव में प्रार्थना पत्र पर विचार नहीं किया जाएगा।

कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ विद्यालयों/कार्यालयों में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक कर्मचारीगण इसका लाभ उठा सके। अतः निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को पाबन्द करावे कि प्रार्थना पत्र सीधे नहीं भेजे, प्रार्थना पत्रों को अपनी अनुशंसा सहित दिनांक 31.01.2022 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता को पद नाम से भिजवाने की व्यवस्था करें। तत्पश्चात प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतः अग्रेषण अधिकारी अंतिम तिथि के पश्चात अनावश्यक प्रार्थना-पत्र अग्रेषित न करें। विज्ञप्ति जारी होने से पूर्व में प्रेषित प्रार्थना पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा तथा उक्त अवधि से पूर्व आवेदन करने वालों को पुनः इस आदेश के अनुसरण में आवेदन करना होगा।

● संलग्न : निर्धारित प्रार्थना-पत्र

● **(दयाशंकर अरडावतिया)** उप निदेशक प्रशासन एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

हितकारी निधि

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/ व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (माध्यमिक/ प्रारंभिक शिक्षा) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम.....
2. पद एवं पदस्थापन स्थान.....
3. कर्मचारी का स्थायी पता.....
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.....
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण :

   1. कार्मिक का बैंक खाता संख्या (पासबुक की प्रति) या निरस्त चैक.....
6. अध्ययनरत छात्र/छात्रा का नाम.....
7. छात्र/छात्रा से सम्बन्ध.....
8. छात्र/छात्रा के व्यावसायिक (शिक्षा का नाम ✓ करें) मेडिकल/ इंजीनियरिंग/मैनेजमेंट/बी.एड/एस.टी.सी./नर्सिंग/सी.ए.).....
9. पाठ्यक्रम की अवधि.....
10. महाविद्यालय में प्रवेश तिथि.....
11. महाविद्यालय का नाम एवं पता जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है..... .....(✓ करें) (संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
12. व्यावसायिक विषय के लिए भुगतान की गई राशि की मूल रसीदें संलग्न करें:-

    संलग्न कुल रसीद संख्या.....राशि.....
13. छात्र/छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है : (हाँ/नहीं)
14. हितकारी निधि का कार्मिक आई.डी.सं. (अंशदान कटौती शिड्यूल/ई.सी.एस. वर्ष 2018-19 से 2021-22 तक संलग्न करें, 2018-19 से नियमित अंशदाता होना चाहिए।)

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर
(पद एवं कार्यरत स्थान)

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी एवं संस्थाप्रधान द्वारा अग्रेषित करवाया जाना आवश्यक है।

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती.....पद एवं पदस्थापन स्थान.....जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्र/पुत्री.....जो (महाविद्यालय) का नाम .....में अध्ययनरत है एवं मेडिकल/इंजीनियरिंग/ मैनेजमेंट/बीएड/एस.टी.सी./नर्सिंग सत्र.....में प्रवेश लिया है को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी
(हस्ताक्षर मय सील)

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
(मोहर)

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

.....

अध्ययनरत महाविद्यालय का प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है श्री/श्रीमती/सुश्री..... पुत्र/पुत्री/श्रीमती.....जो (महाविद्यालय का नाम) .....में अध्ययनरत है। इनके पुत्र/पुत्री इस महाविद्यालय का नियमित छात्र/छात्रा है।

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार है–

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि (सेमेस्टर सहित)	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत है	उत्तीर्ण/ अनुत्तीर्ण	विशेष विवरण

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
मय मोहर

2. वर्ष 2019–20, 2020–21 एवं 2021–22 में नव क्रमोन्नत विद्यालयों (जिन्हें आईएफएमएस आईडी आवंटित हो चुकी है) को ई–ग्रास के यूजर आईडी व पासवर्ड जारी किए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा–माध्य/बजट/बी–4/25600/2021–22/114 दिनांक : 22.12.2021 ● समस्त आहरण वितरण अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा विभाग ● विषयः वर्ष 2019–20, 2020–21 एवं 2021–22 में नव क्रमोन्नत विद्यालयों (जिन्हें आईएफएमएस आईडी आवंटित हो चुकी है) को ई–ग्रास के यूजर आईडी व पासवर्ड जारी किए जाने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि वर्ष 2019–20, 2020–21 एवं 2021–22 में राज्य सरकार के आदेशानुसार उप्रावि से मावि एवं मावि से उमावि में क्रमोन्नत वे सभी विद्यालय जिन्हें आईएफएमएस आईडी का आवंटन कर दिया गया है को ई–ग्रास के यूजर आईडी व पासवर्ड जारी किए जाने हैं। अतः इस पत्र के साथ ई–ग्रास आईडी एवं पासवर्ड जारी करवाने का प्रपत्र संलग्न कर आदेशित किया जाता है कि इस प्रपत्र में दी गई सभी प्रविष्टियों को पूर्ण कर इस कार्यालय को डाक द्वारा प्रेषित करें ताकि ई–ग्रास के यूजर आईडी व पासवर्ड जारी किए जा सके।

वर्ष 2018–19 तक क्रमोन्नत सभी विद्यालयों के लिए ई–ग्रास का लॉगिन आईडी संबंधित कार्यालय का DDO Code / IFMS ID है तथा पासवर्ड Sun@123 हैं। अतः तद्नुसार कार्यवाही की जा सकती है।

● संलग्न–उपर्युक्तानुसार

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

ई–ग्रास आईडी एवं पासवर्ड जारी करवाने हेतु प्रपत्र

क्र.सं.	विवरण	संस्थाप्रधान द्वारा की जाने वाली प्रविष्टि
1.	ट्रेजरी का नाम	
2.	ऑफिस आईडी	
3.	ऑफिस का नाम	
4.	संस्थाप्रधान का नाम	
5.	संस्थाप्रधान की जन्मतिथि	
6.	ई–मेल आईडी	
7.	विद्यालय का पता	
8.	जिला का नाम	
9.	ब्लॉक का नाम	
10.	मोबाइल नम्बर	
11.	पिनकोड	

हस्ताक्षर
संस्थाप्रधान मय मोहर

नोटः– सभी कॉलम की प्रविष्टि अंग्रेजी के कैपिटल लैटर में करें।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

शिविरा पञ्चाङ्ग

जनवरी-2022

रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

जनवरी 2022 ● कार्य दिवस–26, रविवार–05, अवकाश–00, उत्सव–05 ● 09 जनवरी–गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश–उत्सव)। 08 जनवरी–PTM-II का आयोजन। 08 से 10 जनवरी–राज्य स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (तीन दिवसीय) (RSCERT)। 11 से 14 जनवरी–राज्य स्तरीय विज्ञान मेला (चार दिवसीय)। 12 जनवरी–स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस–उत्सव), ''कॅरियर डे''। 14 जनवरी–मकर सक्रान्ति (उत्सव)। 21–22 जनवरी–राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन (कोरोना गाइडलाइन के अनुसार)। 23 जनवरी–सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। 26 जनवरी–गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य)। 30 जनवरी–शहीद दिवस (प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन) (महात्मा गाँधी पुण्य तिथि)। नोट–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। ● कोविड–19 की परिस्थितियाँ अनुकूल रहने की स्थिति में माह जनवरी–फरवरी–2022 में विद्यालयों में वार्षिक समारोह के साथ एल्युमिनाई मीट (सखा–संगम) का आयोजन किया जाएगा। ● प्रत्येक सोमवार–WIFS नीली गोली (कक्षा 6–12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1–5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

माह : जनवरी, 2022	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
01.01.22	शनिवार	उदयपुर			गैर पाठ्यक्रम
03.01.22	सोमवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	परीक्षामाला
04.01.22	मंगलवार	जोधपुर	8	हिन्दी	परीक्षामाला
05.01.22	बुधवार	बीकानेर	10	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला
06.01.22	गुरुवार	कोटा	12	अंग्रेजी अनिवार्य	परीक्षामाला
07.01.22	शुक्रवार	जयपुर	10	गणित	परीक्षामाला
08.01.22	शनिवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम No Bag Day	
10.01.22	सोमवार	बीकानेर	5	गणित	परीक्षामाला
11.01.22	मंगलवार	कोटा	8	अंग्रेजी	परीक्षामाला
12.01.22	बुधवार	उदयपुर	5	हिन्दी	परीक्षामाला
13.01.22	गुरुवार	जयपुर			गैरपाठ्यक्रम लोहड़ी
14.01.22	शुक्रवार	जोधपुर			गैरपाठ्यक्रम संक्रांति
15.01.22	शनिवार	बीकानेर			गैर पाठ्यक्रम No Bag Day
17.01.22	सोमवार	जयपुर	8	गणित	परीक्षामाला
18.01.22	मंगलवार	जोधपुर	12	रसायन विज्ञान	परीक्षामाला
19.01.22	बुधवार	उदयपुर	10	संस्कृत	परीक्षामाला
20.01.22	गुरुवार	बीकानेर	12	इतिहास	परीक्षामाला
21.01.22	शुक्रवार	कोटा	8	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला
22.01.22	शनिवार	जयपुर			गैर पाठ्यक्रम No Bag Day
24.01.22	सोमवार	जोधपुर	5	अंग्रेजी	परीक्षामाला
25.01.22	मंगलवार	जोधपुर			गैरपाठ्यक्रम गणतंत्र दिवस
27.01.22	गुरुवार	उदयपुर	12	भौतिक विज्ञान	परीक्षामाला
28.01.22	शुक्रवार	बीकानेर	8	संस्कृत	परीक्षामाला
29.01.22	शनिवार	कोटा			गैर पाठ्यक्रम No Bag Day
31.01.22	शनिवार	जयपुर	12	जीव विज्ञान	परीक्षामाला

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

● **(इन्द्रा सोनगरा)** प्रभारी अधिकारी, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर।

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

–वरिष्ठ संपादक

विद्यार्थी जीवन : स्वर्णिम काल

❐ कृष्णचन्द्र टवाणी

विद्यार्थी जीवन में ज्ञानवान, गुणवान, बुद्धिमान, प्रतिभावान तथा बलवान बनने के लिए महत्त्वपूर्ण अवसर प्राप्त होता है। जो विद्यार्थी इस समय पूर्ण लगन, उत्साह एवं परिश्रम से विद्याध्ययन करते हैं वे ही एक आदर्श विद्यार्थी बनकर अपने विद्यालय, परिवार, प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करते हैं। योग्य एवं कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र-छात्राएँ ही परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। उनको रोजगार प्राप्त होने में कठिनाई नहीं होती है, उन्हें सम्मान एवं यश की प्राप्ति होती है तथा उनका भविष्य भी उज्ज्वल होता है।

भविष्य की आशा है विद्यार्थी : विद्यार्थी ही राष्ट्र के भविष्य हैं, देश का उत्थान एवं विकास विद्यार्थियों पर ही निर्भर करता है। अतः उन्हें सदैव शिक्षा के साथ-साथ अपने आचरण एवं चरित्र को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए। वास्तव में जो छात्र-छात्राएँ अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं, वे ही भविष्य में ऊँचाई की ओर अग्रसर होते हैं। वैसे देखा जाए तो विद्यार्थी काल ही मनुष्य के जीवन का स्वर्णिम काल होता है। विद्यार्थी जीवन में शिक्षा के साथ-साथ उन्हें स्कूल व कॉलेज स्तर की सांस्कृतिक गतिविधियाँ यथा संगीत, नृत्य, नाटक, मोनोएक्टिंग आदि में भाग लेने का प्रचुर अवसर मिलता है। विद्यार्थी जीवन में ही छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के खेलकूदों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर मिलता है। साहित्य के क्षेत्रों में भाषण (वक्तव्य कला), काव्य-पाठ, वाद-विवाद आदि के आयोजनों में भाग लेकर अपनी रुचि को उजागर करने का अवसर मिलता है। सेवाकार्यों में भाग लेने के लिए भी विद्यालयों में अनेक प्रकल्प जैसे एन.सी.सी., रेडक्रॉस, स्काउटिंग आदि होते हैं। इन राष्ट्रीय योजनाओं द्वारा विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन, समाज सेवा, नेतृत्व, निडरता आदि गुणों का बीजारोपण कर प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जिस विद्यार्थी की जिस योजना में अभिरुचि होती है वह उसमें अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करके राज्य, राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार भी प्राप्त कर सकता है, आवश्यकता है लगन, उत्साह, सतत अभ्यास और कुशलता की। विद्यार्थी अवस्था जीवन की सबसे सुन्दर एवं उत्तम अवस्था होती है। क्योंकि इस अवधि में विद्यार्थी को कमाने, गृहस्थी के कार्य आदि की कोई चिंता नहीं होती है। केवल अध्ययन, मनन द्वारा जीवन को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने का यह सुनहरा अवसर होता है। अतः ऐसे सुनहरे अवसर का पूरा सदुपयोग अवश्य करना चाहिए।

आदर्श विद्यार्थी :

- विद्यार्थी जीवन में तपश्चर्या, तत्परता और संयम भावना जाग्रत की जाए। विद्याध्ययन एक प्रकार का योगाभ्यास है-पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य।
- एक आदर्श विद्यार्थी वही होता है जो अपनी कक्षा में नियमित उपस्थित रहकर अपना अध्ययन कार्य एकाग्रतापूर्वक करता है।
- अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का आदर-सम्मान करता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है एवं सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करता है।
- अपने सहपाठियों, मित्रों के साथ शिक्षक व माता-पिता द्वारा बताई गई बातों पर विवेक एवं विनम्रतापूर्वक विचार-विमर्श करता है।
- अपने समय का पूर्ण सदुपयोग करता है। दैनिक दिनचर्या बनाकर उसका पूरा पालन करता है तथा सोते समय यह आकलन करता है कि कौनसा कार्य पूर्ण नहीं हुआ? उसे दूसरे दिन प्राथमिकता देकर पूरा करता है। जिन कार्यों में व्यर्थ ही समय बर्बाद होता हो उन निरर्थक कार्यों को छोड़ देना चाहिए। फुरसत के समय महापुरुषों के जीवन चरित्र का साहित्य पढ़ना चाहिए। अपने गृहकार्य (होमवर्क) को समय पर पूरा करना चाहिए।
- नियमित खेलकूद, मनोरंजन के लिए तथा विद्यालय की अन्य विविध योजनाओं के लिए समय देता है।
- हमारे आचार्यों ने विद्यार्थी में निम्न पाँच गुणों का होना आवश्यक बताया है-

काकचेष्टा बकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम्।।

अर्थात् विद्यार्थी को कौवे की तरह चेष्टा करने वाला बगुले की तरह एकाग्रता से ध्यान करने वाला, स्वान (कुत्ते) की तरह निद्रा में सदैव चौकन्ना रहने वाला, कम तथा हितकारी भोजन करने वाला अर्थात मांसाहारी, जंक फूड एवं ज्यादा चटपटे भोजन नहीं करने वाला तथा गृहत्यागी से तात्पर्य यह है कि उसे अपना अध्ययन कोलाहल से दूर शांति युक्त वातावरण में करना चाहिए। घर से दूर जाने की व्यवस्था न हो तो घर में ही एकांत में अध्ययन करना चाहिए। जो पढ़े उसे अच्छी तरह सोच समझकर कंठस्थ करना चाहिए।

- शुद्ध शाकाहारी भोजन करने तथा नशीली चीजों का सेवन नहीं करने वालों का ही स्वास्थ्य ठीक रहता है।
- टेलीविजन तथा मोबाइल से गाने सुनने, फेसबुक, यूट्यूब, वाट्सएप में चित्रों को देखने के लिए रात्रि में ज्यादा नहीं जगना चाहिए। जल्दी सोने की आदत होनी चाहिए तथा सूर्योदय से पूर्व उठकर शौचादि कार्यों से निवृत्त होना चाहिए। अंग्रेजी में कहावत है- **'Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise'**
- सुबह की बेला को अमृत बेला कहा गया है। जो सुबह जल्दी उठकर विद्याध्ययन करते हैं, वो कंठस्थ हो जाती है तथा दिन भर प्रसन्नता के साथ स्वस्थ रहते हैं।
- महात्मा गाँधी का कहना है कि 'विद्यार्थियों को दलबन्दी, गंदी राजनीति में कभी भाग नहीं लेना चाहिए। विद्यार्थी राजनैतिक हड़तालें नहीं करे।'
- विद्यार्थी जीवन में पान, सिगरेट या शराब की आदत डालता है तो वह आत्मघात के समान है।

विद्यार्थी को स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अपने कमरे, कपड़े, पुस्तकों, कॉपियों आदि को सदा साफ-सुथरा तथा व्यवस्थित रखना चाहिए। विद्यार्थी को स्वाभिमानी होना चाहिए। स्वस्थ एवं स्वच्छ रहने पर वह अपना अध्ययन अच्छी तरह कर सकेगा। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विद्यार्थियों को कभी भी बुरी संगत नहीं करनी चाहिए। अच्छे व्यक्तियों को ही मित्र बनाकर उनके अच्छे गुणों को ग्रहण करना चाहिए। संक्षेप में एक आदर्श विद्यार्थी को शिष्टाचार, चरित्र, विनम्रता, शालीनता, स्वच्छता, खान-पान एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

परीक्षा के समय सावधानियाँ: जो विद्यार्थी अपने विषयों का नियमित अध्ययन एवं

Rajasthan Education Department

अभ्यास करता है वो परीक्षा के दिनों में भयभीत नहीं होता है। प्रतिदिन नियमित अध्ययन करने वाले विद्यार्थी को परीक्षा के दिनों में रातभर जागकर पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती है। केवल मुख्य बिन्दुओं (नोट्स) को ही दोहराना पड़ता है। परीक्षा के समय रात्रि में ज्यादा जगकर अध्ययन करने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी तो नेत्र ज्योति भी कम हो जाती है तथा अन्य बीमारियाँ जैसे सिर दर्द आदि भी हो जाता है। परीक्षा के दिनों में खान-पान पर विशेष ध्यान देना बहुत जरूरी है। सात्विक तथा कम भोजन करना चाहिए। फलों के जूस तथा पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करना चाहिए। परीक्षा भवन पर निश्चित समय से पूर्व पहुँचना तथा प्रश्न पत्र को पहले अच्छी तरह पढ़कर फिर प्रश्नों का उत्तर लिखना प्रारंभ करें। प्रश्न पत्र कठिन हो तो घबराना नहीं चाहिए। बल्कि सोच समझकर उत्तर देना चाहिए। जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, सभी प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट तथा सुन्दर लिखावट में दें ताकि अच्छे अंकों की प्राप्ति हो सके। सभी प्रश्नों के उत्तर लिखने के बाद यदि समय मिले तो उत्तर पुस्तिका को दुबारा अवश्य पढ़ना चाहिए। परीक्षा के समय अन्य कार्यों में अपनी ऊर्जा, शक्ति को नष्ट नहीं करें तथा अपने आत्मविश्वास को दृढ़ बनाए रखें।

कॅरियर चयन : विद्यार्थी को अपना कॅरियर बहुत सोच-समझकर निश्चित करना चाहिए। जिस क्षेत्र में रुचि हो उसकी तह में जाकर उसके लाभ हानि का आकलन करना चाहिए। अभिभावकों को चाहिए कि वह बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार ही कॅरियर चुनने दें। अपनी रुचि उन पर थोपे नहीं। बच्चों के असफल होने पर उनमें भय पैदा नहीं करें एवं उनकी आलोचना न करें। अपने बच्चों की दूसरे के बच्चों से तुलना ना करें। ज्यादा दबाव डालने पर उसका गलत प्रभाव पड़ सकता है। जो कॅरियर चुना है उसी पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए तथा पूर्ण योजनापूर्वक उसकी पढ़ाई करनी चाहिए। कॅरियर बनाने में कुछ समस्याएँ भी आ सकती है किन्तु उसकी चिंता नहीं करना चाहिए। समस्याओं के लिए समाधान ढूँढ़ना चाहिए। समस्याओं से भयभीत होने के बजाए अनुभवी शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन लेना चाहिए।

प्रधान संपादक (अध्यात्म अमृत)
सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर
(राज.)-305801
मो: 9252988221

सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल स्काउटिंग

❐ अनुकम्पा अरडावतिया

हमारे मनीषियों का वेद वाक्य है, ''सा विद्या या विमुक्तये''- अर्थात् विद्या वह है जो मुक्त करती है अज्ञानता से।

अतः हम कह सकते हैं कि मात्र शैक्षिक गतिविधियों के द्वारा हम बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान देकर जीविकोपार्जन के योग्य बनाने में सक्षम है लेकिन बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सुयोग्य नागरिक बनाने में सक्षम नहीं है। ऐसी शिक्षा एकांगी होगी। अतः बालक के सर्वांगीण विकास एवं सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु विद्यालय में सह शैक्षिक गतिविधियों का संचालन आवश्यक है।

इन प्रवृत्तियों के माध्यम से बालक में निहित विभिन्न शक्तियों को बाहर निकालने के अवसर मिलेंगे साथ ही मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक मूल्यों का विकास भी करने में सक्षम होंगे। यूं तो विद्यालय में संचालित सह शैक्षिक गतिविधियाँ अनेक हैं जिनमें मुख्य रूप से विद्यालय में संचालित प्रवृत्तियाँ यथा- खेल कूद, बालसभा, संगीत, गायन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, सामान्य ज्ञान, उत्सव एवं जयन्तियाँ, वृक्षारोपण, एन.एस.एस., एन.सी.सी., स्काउटिंग-गाइडिंग आदि।

ऊपर वर्णित समस्त प्रवृत्तियाँ स्काउटिंग गाइडिंग में समाहित है। अतः स्काउटिंग गाइडिंग को इन सभी प्रवृत्तियों की जननी कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। स्काउटिंग के अतिरिक्त अन्य प्रवृतियाँ किसी एक उद्देश्य को पूरा करती है लेकिन स्काउटिंग गाइडिंग बालक की समस्त क्षमताओं को विकसित कर सर्वांगीण विकास कर विभिन्न विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला सीखाती है साथ ही अनुशासित रह कर सेवा का पाठ भी पढ़ाती है।

इस गतिविधि द्वारा अनुशासन का प्रशिक्षण, नेतृत्व का विकास, चरित्र निर्माण, समानता, सहनशीलता की भावना, श्रम के प्रति निष्ठा, स्वावलंबन, राष्ट्रीय एकता की भावना, पर्यावरण व पशु पक्षी प्रेम आदि गुण बच्चों में समाहित किए जा सकते हैं।

स्काउटिंग विश्व आकाश पर फैली ऐसी संस्था है जो मानव मात्र ही नहीं पशु पक्षियों के

कल्याण की प्रत्येक विषय वस्तु को गंभीरता से लेती है। स्काउटिंग शिक्षा का पूरक कार्यक्रम है। शिक्षा मात्र सूचनात्मक है जबकि स्काउटिंग उसे व्यावहारिक रूप प्रदान कर न्यूनतम साधन सुविधाओं में उच्च स्तरीय जीवन की कला प्रदान करती है। इतना ही नहीं जहाँ कबिंग, स्काउटिंग व रोवरिंग आयु वर्ग के अनुसार युवाओं तक मनोवैज्ञानिक व्यवहार आधारित व्यक्तित्व विकास की शिक्षा देने हेतु तत्पर व सक्रिय है वहीं ब्लू वर्ल्ड अर्थात बुलबुल, गाइडिंग व रेंजरिंग बालिकाओं को भी समानांतर प्रणाली से ही सुनागरिकता की शिक्षा के द्वारा व्यवहारिक ज्ञान देने हेतु नारी सशक्तीकरण की दिशा में क्रियाशील है।

अतः विद्यालय में अध्ययनरत बालक बालिकाओं के समग्र विकास के लिए देश के सुयोग्य, सेवाभावी, अनुशासित नागरिक तैयार करने के लिए स्काउटिंग गाइडिंग से जुड़ना आवश्यक है।

स्काउटिंग व गाइडिंग का संक्षिप्त इतिहास

स्काउटिंग के जन्मदाता लॉर्ड बेडेन पावेल है जिन्होंने अपने सैन्य जीवन में विभिन्न पदों पर रहते हुए सैनिकों की कमी महसूस की और विचार किया कि क्यों न बच्चों व नवयुवकों को, जिनमें असीम शक्ति तथा साहस है उन्हें इकट्ठा कर जासूसी, चौकीदारी, प्राथमिक सहायता, पोस्टमैन, पायनियरिंग आदि से प्रशिक्षित किया जाकर सेना को सीमित क्षेत्र से खींच कर जनसाधारण के बालक बालिकाओं तक लाने

Rajasthan Education Department

का प्रयास किया जाये? और उसमें सफलता भी प्राप्त की।

इस प्रकार 1907 में 20 बालकों को लेकर पहला कैंप ब्राउन सी आईलैंड में संचालित किया और सफल हुए। 1910 मे उन्हीं की बहन एग्नेस ने सात लड़कियों से गर्ल गाइडिंग की शुरुआत की।

भारत में स्काउटिंग की शुरुआत

1909 में केटी और डेकर द्वारा भारत में बेंगलुरु से स्काउटिंग का श्रीगणेश किया गया।

1911 में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा भारत में भी गाइडिंग की शुरुआत की गई। 1916 में संपूर्ण भारत में स्काउटिंग की शुरुआत हो गई।

आज पूरे विश्व में 216 देशों में स्काउटिंग संचालित है यह विश्व स्तर का आंदोलन है और विश्व का सबसे बड़ा युवा संगठन है जो यूनिफॉर्म में रहता है और प्राकृतिक आपदाएं हो या अन्य अवसर अपनी व दूसरों की सहायता करता है। विकट परिस्थितियों में जीवन जीने की कला सिखाता है। यह शैक्षिक आंदोलन है और स्वैच्छिक संगठन है। इसमें उत्तम नागरिकता का पाठ पढ़ाया जाता है खाली समय का सदुपयोग सिखाया जाता है तथा यह प्रकृति से तालमेल भी सिखाता है।

एक सरकारी कर्मचारी अपनी सेवा के निश्चित 60 वर्ष पूरे करने पर सेवा से निवृत्त हो जाता है लेकिन इस सेवा संगठन से जुड़ा कार्मिक या सामान्य व्यक्ति आजीवन सेवा कार्य कर सकता है।

इस सेवाभावी संगठन से छात्र-छात्राएँ ही नहीं जोड़े जाते बल्कि एक शिक्षक, संस्थाप्रधान अपने पदों के अनुरूप प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करता है और विभिन्न उपाधियों को प्राप्त करता है।

संस्थाप्रधान के लिए बेसिक कमिश्नर कोर्स है जिसका प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करते हुए एडवान्स कोर्स करते हैं। एक बेसिक कोर्स, स्काउटर गाइडर एडवांस कोर्स, हिमालय वुडबेज, ए.एल.टी., एल.टी. उपाधियाँ प्राप्त करता है और प्रशिक्षक के रूप में कार्य करता है।

विद्यालय स्काउटिंग का संचालन कैसे?

इसके लिए विद्यालय में ग्रुप का निर्धारण कर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है जो स्थानीय स्तर पर ब्लॉक लेवल अधिकारियों द्वारा किया जाकर राज्य स्तर पर अनुशंसा की जाकर चार्टर जारी किया जाता है। विद्यालय में स्काउटिंग गतिविधि चलाने के लिए किसी अध्यापक अथवा अध्यापिका का प्रशिक्षित होना आवश्यक है। प्रशिक्षण हेतु समय-समय पर प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं और ग्रुप संचालन के लिए सभी आवश्यक प्रशिक्षण दिए जाते हैं। प्रशिक्षित स्काउटर गाइडर द्वारा जिला मुख्यालय द्वारा जारी वार्षिक कैलेंडर के अनुसार निर्धारित प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं जिसमें बालक बालिकाओं की रुचि और उत्साह के अनुसार, आयु वर्ग के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है।

आज अधिकांश विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक कक्षाएं संचालित है और लगभग अध्ययनरत बच्चों की आयु 5 से 18 वर्ष तक होगी। उनको आयु वर्ग के अनुसार प्रशिक्षित किया जाता है। 5 से 10 वर्ष तक आयु वाले बालक-बालिका को कब व बुलबुल के रूप में प्रशिक्षित कर भरसक प्रयत्न करो का मूल मंत्र दिया जाता है। 10 से 18 वर्ष तक आयु वाले बालक-बालिकाओं को स्काउट और गाइड के रूप में प्रशिक्षित कर तैयार रहो का मूल मंत्र सिखाया जाता है। 16 से 25 आयु के बालक-बालिकाओं को रोवर रेंजर के रूप में प्रशिक्षित कर सेवा का मूल मंत्र दिया जाता है। तीनों आयु वर्ग के कब-बुलबुल, स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर को विभिन्न चरणों व निश्चित अवधि में प्रशिक्षित किया जा कर प्रमाण पत्र, बेज, अलंकार, पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। कब बुलबुल के लिए सर्वोच्च पुरस्कार गोल्डन एरो हीरक पंख है। स्काउट गाइड और रोवर रेंजर के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार सर्वोच्च पुरस्कार है जिस पर महामहिम राष्ट्रपति महोदय स्वयं हस्ताक्षर करते हैं। इतना ही नहीं स्काउटिंग विश्व का ऐसा संगठन है जो सभी स्तर के क्रियाशील कार्मिकों को भी धन्यवाद बेज, बार टू मेडल ऑफ मेरिट, मेडल ऑफ मेरिट सिल्वर स्टार, सिल्वर एलीफेंट जैसे राष्ट्रीय स्तर के अलंकरण से अलंकृत करता है।

राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण व गतिविधियों हेतु राशि भारत स्काउट गाइड द्वारा ही वहन की जाती है। अन्य गतिविधियों शिविरों आदि में भाग लेने वाले स्काउट गाइड के लिए राशि छात्र कोष से खर्च की जाने की अनुमति विभाग द्वारा दी हुई है। एसडीएमसी से भी प्रस्ताव लेकर व्यय किया जा सकता है।

भविष्य में स्काउट गाइड के लिए संभावनाएं

स्काउट गाइड का राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त स्काउट गाइड रेलवे भर्ती के लिए आवेदन करने हेतु पात्र हैं। स्काउट/गाइड के लिए विभिन्न जोन में स्पेशल भर्ती निकाली जाती है जिसमें स्काउट गाइड ही आवेदन कर सकते हैं। सर्कल ऑर्गेनाइजर जो हमारे जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं उनकी नियुक्ति भी राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त स्काउट गाइड और स्नातक की डिग्री है वही छात्र पात्र होता है।

स्काउटिंग गतिविधि जिस विद्यालय में संचालित हैं और प्रशिक्षित स्काउटर गाइडर नियुक्त है, वहाँ स्काउटर गाइडर को सामान्यीकरण से प्रथक रखा जाता है यदि हटाया जाना आवश्यक है तो उन्हीं विद्यालय में पदस्थापन किया जाता है, जहाँ पर यह गतिविधि संचालित हो रही हो।

बच्चों में प्रारंभिक शिक्षा से ही अच्छा स्काउट गाइड बनाने के लिए जयपुर के जगतपुरा में बालचर आवासीय विद्यालय भी खोला गया है जिसमें राज्य के सभी जिलों के बाल चर अध्ययनरत हैं। कक्षा 6 मे प्रवेश लेकर यहाँ अध्ययनरत बच्चे यूनिफॉर्म में अध्ययन के साथ-साथ सेवा कार्य या स्काउट गाइड से जुड़ी हुई सभी गतिविधियों में भाग लेते हुए अध्ययनरत हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि स्काउटिंग उत्तम नागरिकता की पाठशाला है, एक शिक्षाप्रद खेल है, खाली समय का सदुपयोग है। यह प्रसन्नतादायक वातावरण प्रदान कर प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देती है।

जय भारत जय स्काउट

प्रधानाचार्य
(प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर गाइड)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
खानपुर मेहराना, झुंझुनूं
मो: 9799682560

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

सूरज में तारों की तलाश

कवि: राजेन्द्र जोशी; **प्रकाशक** : इंडिया नेटबुक्स, नई दिल्ली; **संस्करण** : 2020; **मूल्य** : ₹ 200; **पृष्ठ** : 127

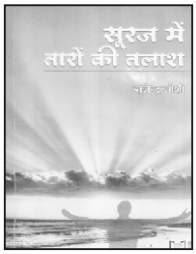

कविता विचार और संवेदनाओं को प्रस्तुत करने का एक बेहतरीन मंच है। अधिकांशतः कविताएँ अनुभव से उपजी संवेदनाएं होती है जो कवि मन में छटपटाती है बाहर आने के लिए। कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है। इसमें देश, समाज, काल, जीवन से जुड़ी सभी बातें होती है। समाज से पृथक इंसान का जीवन नामुमकिन सा है। हर इंसान अपने जीवन या आसपास घटने वाली घटनाओं से दुःखी, संवेदनशील बनता जाता है। कुछ लोग इन घटनाओं को देखकर अनदेखा कर देते हैं और कुछ इन्हें शब्दों में ढाल कर अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

ऐसे ही अनुभवों से साक्षात्कार करवाता है राजेन्द्र जोशी का काव्य संग्रह 'सूरज में तारों की तलाश'। इस कविता संग्रह में मानव जीवन से जुड़े सभी पहलूओं पर कवि राजेन्द्र जोशी की कलम चली है। प्रेम, संवेदनाएँ, सामाजिक विसंगतियाँ और विविध मनोभाव इस कविता संग्रह में दिखाई देते हैं। कविता में आसान शब्दों में गहरी बात कही जाती है और कई बार सरल शब्दों में भी शब्दों की गहराई दिखती है। ऐसे ही धरातल पर सटीक बैठता 'सूरज में तारों की तलाश' कविता संग्रह इंडिया नेटबुक्स नई दिल्ली से प्रकाशित है जो तीन खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड: उजाले की साखी, द्वितीय खण्ड: रात के पिछले पहर और तृतीय खण्ड: वक्त अभी शेष है। यह कविता संग्रह विमला-सुभाष जोशी, संगीता-गिरिराज जोशी, प्रेरणा-सुरेन्द्र जोशी के साथ राजेन्द्र जोशी ने अपनी अर्धांगिनी श्रीमती आशा जोशी को समर्पित किया है और इसी संग्रह में 'प्यार की आशा' कविता से अपने प्रेम को दर्शाया भी है-

'बिना सुगबुगाहट के/आज भी रम रहा
हूँ/आशा के प्यार में।'

राजेन्द्र जोशी की कविताएँ पाठक के भीतर को झकझोर देती है। कवि अपने भीतर की उथल-पुथल को कविता का जामा पहनाने में शब्दों के साथ कोई पहलवानी नहीं करते, वे अपने पाठक की भाषा में अपनी बात कह देते हैं। राजेन्द्र जोशी की एक कविता से भी ये ज़ाहिर हो जाता है कि शब्दों की जादूगिरी इनको भी बहुत खूब आती है।

''मौन रहकर/सुनता/सत्ता की मायावी बातें/मादक गंध के सहारे/उन बंगलों में/बदलते चेहरे

कलंकित चरित्र/छद्म सत्ता का साक्षी वह/यात्री को/अपनी छाया तले बिठाकर/सुकून से थपथपाता है/कभी-कभी''

मन में हिलोरें लेने वाले जज़्बात और अनुभव ही आजकल कविता में देखने को मिलते हैं परन्तु राजेन्द्र जोशी की कविताओं में जीवन के सभी रंग दिखाई देते हैं। इनकी कविताओं में भावों की लय है, जो पाठक को इनसे बांधे रखती है। इन्होंने अपनी कविताओं में आशावाद, हौंसला, तर्कशीलता का बहुत प्रभावी तरीके से संप्रेषण किया है। बल्कि ये तो ईश्वर से तर्क करने में भी संकोच नहीं करते हैं-

''अहसास तो/तुम्हें भी होगा/भक्त वह भी है/गर भूख शांत हो/उसकी/दर्शन नहीं/साथ चाहिए/ तुम नहीं/रोटी चाहिए/ईश्वर।''

एक कवि का सामर्थ्य केवल इतना भर नहीं होता कि वह जो देखता है उसे संवेदनशीलता के साथ सशक्त भाषा के साथ प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर सकता है और उसके उस अर्थ को रचता एवं परिभाषित करता है। उसके सामर्थ्य की परीक्षा एक से अधिक मोर्चों पर होती है। उसे विचारों, संवेदनाओं और संप्रेषण हर प्रतिमान पर खरा उतरना होता है। कविता केवल कौतूहल या खुशनुमा एहसास ही पैदा नहीं करती बल्कि पाठक के अंदर एक बेचैनी को भी पैदा करती है। वर्तमान को अतीत और भविष्य से भी जोड़ती है। राजेन्द्र जोशी लम्बे समय से मातृभाषा राजस्थानी की मान्यता हेतु प्रयासरत हैं और इनकी कविता 'हुंकार मातृभाषा की' में यह पीड़ा साफ देखी जा सकती है-

''जन्म से पहले ही भरी हुंकार/कैसे आऊं कोख से बाहर/न बोल पाऊंगा न लिखना होगा/गंगा बनकर रहना/मेरी फितरत में नहीं/माँ तुम ही बताओ/तुम्हारी कोख कब तक रख सकेगी/क्या तुम अबोला बच्चा पैदा करना चाहोगी?''

राजेन्द्र जोशी एक सशक्त कवि है क्योंकि ये लगातार साहित्य में कर्मरत है। यह इनका चौथा कविता संग्रह है जो इनकी सशक्तता का प्रमाण भी है। एक कवि के रूप में राजेन्द्र जोशी की काव्य यात्रा नए मार्गों का अन्वेषण करते हुए निरंतर आगे बढ़ रही है। जोशी अपने कविता-कर्म में कल्पनाशील होते हुए भी काल्पनिकता से अधिक यथार्थ पर अवलंबित कविताएँ रचते हैं। 'काले आँसू' कविता में यथार्थता का सजीव चित्रण दिखता है-

''वीरान पड़े खेतों की सघनता में/तलभंवरे से हो गए/पानी के कुएँ/रात ठहर गयी/दिन की दूरियाँ बढ़ रही है/सब कुछ देख रहा/नीला आकाश''

हिंदी साहित्य वसंत ऋतु के गुणगान से भरा पड़ा है। वसंत को ऋतुराज कहा गया है और उसकी शान में बहुत कुछ लिखा गया है। मगर 'सूरज में तारों की तलाश' का रचयिता वसंत का इंतज़ार करता नज़र आता है-

''इंतज़ार था इस बार/वसंत का/दर्द बहुत है /पेड़ होने का।''

राजेन्द्र जोशी की कविता में स्त्री पीड़ाओं का मुखर है। इनकी कविताओं में समाज में लंबे समय से चली आ रही स्त्री भूमिका को शोषण और समर्पण के तराजू पर तोलती है। कविता 'केवल भोग्या हूँ' में नारी व्यथा साफ झलकती है-

''नारी हूँ! भोग्या हूँ/पीड़ा के साथ रहना/नियति है मेरी/मेरा अपना क्या है''

कवि मन स्त्री घावों से संवेदनशील भी हो उठता है जिसकी बानगी कविता 'रीतने न दूंगा तुम्हें!' में सहज दिखाई देती है-

''तुम्हारी पीड़ा से/विचलित था मन/समझौता न कर बैठो/इन घावों से''

राजेन्द्र जोशी प्रतिरोध की सैद्धांतिकी को गढ़ते हुए दिखते हैं। यह कहना शायद ज़्यादा

Rajasthan Education Department

सही हो कि उनकी कविता में विचार तो है मगर इससे ज़्यादा कहीं उनके विचारों के अंदर कविता अवस्थित है। ये प्रच्छन तौर पर नहीं है और न ही नारेबाज़ी के रूप में ही। यह एक चेतना संपन्न कवि का जागरूक हस्तक्षेप है। शब्द न हो तो आदमी गूंगा है। शब्द ज़िन्दगी के साथ और ज़िन्दगी के बाद भी साथ चलते हैं। शब्दों की महत्ता भी जोशी की कविताओं में स्पष्ट दिखाई देती है-

''बुरे दिनों का सहारा/आदमी की हैसियत बनाते हैं/झूठे नहीं होते कभी/आदमी की ताकत होते हैं शब्द।''

पानी की क़ीमत तो आज किसी से छुपी हुई नहीं है। भविष्य वक्ताओ ने तो यहाँ तक कह दिया है कि पानी के लिए युद्ध भी आने वाले समय में देखने को मिल सकता है। पानी बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कवि मन राजेन्द्र जोशी ने आज के इस मुद्दे को भी अछूता नहीं छोड़ा है। बल्कि अपनी कविता 'पहरे में पानी' में साफ बताया है कि पानी दिनों दिन महंगा होता जा रहा है।

''ठहर गया पानी/बोतल की भेंट चढ़ गया/दूध से भी महंगा हो गया''।

पेड़ों का हमारे जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है यह किसी से छिपा नहीं है और कवि राजेन्द्र जोशी ने भी पेड़ों की महत्ता का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। 'सूखा पेड़-1' कविता में कवि कहता है-

''साथ नहीं होगा/जब पत्तों का/काट दिया जाएगा/वह सूखा पेड़/उड़ते हुए पत्ते/मृत्यु की/घोषणा करेंगे/दूर तक/दूसरे पेड़ों को''।

राजेन्द्र जोशी की कविताओं में सकारात्मक सृजन है। इनकी कविताएँ नकारात्मकता को चीरती हुई नई रोशनी से भरपूर सूरज में शीतलता की छांव तलाशती है। इस काव्य संग्रह में बिम्ब रूप में बारिश, बादल, चांद, पेड़, पत्ते, रेत आदि का प्रयोग किया गया है। बल्कि इन सबके साथ इनकी कविताएँ आज के यथार्थ की परत-दर-परत खोलती पड़ौसी देश चीन की चालों को उजागर भी करती नज़र आती है। 'ओ चीन सुन' में कवि ने कहा है कि-

''तुम मौत के कीटाणु हो/जहरीली हवा में लिपटे हो/तुम्हारे नगर-गाँव/ढेर हो जाएंगे/धुंध में डूबकर/ यदि नहीं रूके तुम।''

राजेन्द्र जोशी की कविताएँ लीक से हटकर है। इनकी कविताएँ कल्पनालोक से विचरते हुए यथार्थ का परिचय करवाती है। छोटी-छोटी कविताएँ बड़ा और गहरा संदेश देने में प्रभावी रही है। भावनाओं के अलावा काव्य सृजन के मामले में भी कविताएँ उत्कृष्ट है। कवि राजेन्द्र जोशी को अच्छे से मालूम है कि उन्हें अपनी भावनाओं को किन शब्दों में और किन बिम्बों के माध्यम से प्रकट करना है। संग्रह में चिंतन और विचारों को सहज और सरल तरीके से पेश किया गया है जिससे कविता का अर्थ पाठक को सहजता से समझ आ जाता है। संग्रह का कवर आकर्षक है। काव्य प्रेमियों के लिए एक अच्छा कविता संग्रह है। इसके लिए राजेन्द्र जोशी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

समीक्षक: संजय जनागल
गली नं. 6, रामपुरा बस्ती, लालगढ़,
बीकानेर (राज.)
मो: 7597743310

द केसानोवा

लेखक: मनोज कुमार स्वामी; **अंग्रेजी अनुवाद** : डॉ. मोनिका गढ़वाल व भूपिन्द्र नायक; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर; **प्रथम संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹ 200; **पृष्ठ** : 116

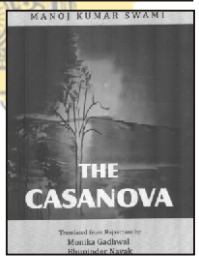

सूरतगढ़ टाइम्स के संपादक श्री मनोज कुमार स्वामी के लिए यदि यह कहा जाए कि पानी रे पानी तेरा रंग कैसा? जिसमे मिलाए उसके जैसा तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि स्वामी पत्रकार, नाटककार, रामलीला के मंचन के सूत्रधार, कुशल संपादक व सशक्त प्रतिनिधि राजस्थानी कहानीकार हैं। राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता के लिए संघर्षरत व समर्पित है।

उनकी कहानियों के संग्रह मनगत का 'The Filthy propio' शीर्षक सें भूपिंद्र नायक ने अंग्रेजी भाषा में श्लाघनीय अनुवाद किया था। अब 'किंयां'!! कहानी संग्रह का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद मोनिका गढ़वाल व भूपिन्द्र नायक ने 'The Casanova' शीर्षक से किया है। बोधि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस कहानी संग्रह की पुस्तक में स्वामी की 15 कहानियाँ अंग्रेजी में अनूदित हुई है। राजस्थानी में लिखी गई कहानियों के मूल शीर्षक है- अट्टो-सट्टो, किंयां !!, भायला, कैदी, भींत सूं काठी, सात लाख रो पाणी, च्यार टाबरां री मा, बोट फोरणा है, सुवाल, कागोळ, हारग्यो, आली चामड़ी, बेटो- बहू अर झाड़ागर।

अनुवादक के रूप में मोनिका गढ़वाल, लोहसाना, जिला चूरू राजस्थान की है। उनके शब्दों में- जब मैंने मूल कहानियों को पढ़ा तो मुझे अनुवाद कार्य करना सुविधाजनक तथा आत्मविश्वास युक्त लगा, ये कहानियाँ आत्मा को छूती हुई कहानियाँ है ।

समाज का वह छिपा हुआ, अंधेरे युक्त पक्ष जिसे केवल स्वामी की आँख की नजर देख सकी व शब्दों में कहानी के रूप में ढाल सकी वह अनुपम, अद्वितीय, मौलिक व पूर्णत: संवेदनात्मक यथार्थ सत्य है। अनुवादिका को परिवेशगत संस्कृति, पृष्ठभूमि, भाषा, कहावतें, रीति-रिवाज, मुहावरों व प्रचलित सामाजिक, राजनीतिक प्रवृत्तियों की जानकारी व समझ होने के कारण कोई असुविधा नहीं हुई। जिस शब्द को मूल स्वरूप में ही रखना था रखा गया क्योंकि कथ्य पात्र की आत्मा जीवित रखनी चाहिए। "What would you 'roti' in english?" इसका उदाहरण है। दैनिक जीवन के सामान्य-असामान्य, संगत-विसंगत, घटनाक्रमों से जुड़ा कथानक, ग्रामीण औरतों के जीवन की दुखद त्रासद स्थितियाँ, उलझी हुई विकृत राजनीति, चुनावी चाले, पनपता भ्रष्टाचार, जातिवाद का जहर, घातक जख्म की तरह ग्रामीण-शहरी में विभाजित करते समाज की विचित्र स्थितियाँ, संदेह दोगलापन, लोक जीवन की झाँकी इत्यादि सब कुछ आधारभूत रूप में रहे हैं। कहानियों में, अनुवाद की पृष्ठभूमि में।

आलोच्य पुस्तक की भूमिका लेखक डॉ. सत्यनारायण स्वामी के अनुसार आठवीं अनुसूची में प्राप्ति के लिए मिशन कार्य में सक्रिय स्वामी बहुचर्चित हस्ताक्षर हैं। उनकी जीवन यात्रा व अनुभव संसार लेखकीय जीवन व समाज का दर्पण है। अट्टो-सट्टो- द मेरीज ऑफ एक्सचेंज एक्सचेंज, में लड़की को देकर पुत्र वधू प्राप्त करना एक समझौता वादी प्रथा है । जिसमें

Rajasthan Education Department

लड़की को कूमेल विवाह के कारण ही समझौता कर अपने जीवन का बलिदान करना पड़ता है। एक युवा और दूसरी बाल्यावस्था वाली लड़कियाँ वृद्ध, विकलांग के भेंट चढ़ा दी जाती है।

'किंयां कहानी 'द केसानोवा' शीर्षक से समाज में बढ़ती कामुकता की प्रवृत्ति पर नियंत्रण की आवश्यकता को रेखांकित करती है। कानूनी सख्ती की पुरजोर दरकार दर्शाती है। एक चिड़ी लेग्यो, होटल वाले को पहले बता देता हूँ टाइम पास करना है तो पहले बता देता हूँ। टैम पास करणो है। होटल वाले को पहले बता देता हूँ। गुमिड़यो, भायला, कैदी जैसी कहानियों का अनुवाद संवेदनात्मक भाषा युक्त हुआ है। कैदी जीवन की व्यथा कथा सबके लिए एक जैसी है। सच्चाई भींत से भी मजबूत होती है। सात लाख रो पाणी, सामाजिक बेमेल, च्यार टाबरां री मा भ्रष्टाचार के पर्दाफाश का अंकन है। च्यार बच्चों की माँ और पंचायत चुनाव शोषण और राजनीतिक कदाचार, पुलिस व्यवस्था की सच्चाई को व्यक्त करती है। नेता, अधिकारी सब लीपापोती में संलग्न दिखाई देते हैं। मेघवाल, नायक, चौधरी, ब्राह्मण, स्वामी, सुथार जातिवाद के झगड़े, शराबखोरी, कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार, दहेज-तलाक, गरीबी की मार, सामाजिक स्थितियों पर सवाल दर सवाल उठाने वाली ये कहानियाँ हृदय द्रवित करने में समर्थ है। सुवाल, कागोल, हारग्यो, आली चामड़ी के कथानक त्रासद संवेदनात्मक प्रचुरता लिए हुए है। ये सभी कहानियाँ मजबूत यर्थाथपरक सत्य पर आधारित है।

लेखक और अनुवादक दोनों ने संवेदनात्मक अनुभूतियों का दर्द झेला है, तब कहानियों का ताना-बाना बुना जा सका। आश्चर्य चकित कर देने वाली स्थितियाँ कहीं बाहर की कल्पना नहीं है, हमारे ही इर्द-गिर्द संसार का कटु यथार्थ है। गेडिया, साडू, काकी, आँगणां, किंयां, पूजा, भतुळियो, चिड़कल्यां, मायका, ग्यारस इत्यादि शब्दों को मूल रूप में रखने से मौलिकता का लालित्य बना रहा है।

मेरी विनम्र सम्मति में इस अंग्रेजी में अनुदित कहानी संग्रह के माध्यम से राजस्थानी साहित्य की लोकप्रियता का विस्तार हुआ है। भाषा-संस्कृति-साहित्य समृद्ध हुआ है तथा मनोज कुमार की कहानियों को प्रभावी असरदार स्थान मिला है। उनका यह कार्य लेखन क्षेत्र में एक स्वागत योग्य-शानदार उपलब्धि माना जाना चाहिए।

समीक्षकः **डॉ. रमेश मयंक**
B-8, मीरा नगर चित्तौड़गढ़ (राज.)-312001
मोः 70 2364 4777

सवाई हुवै कविता

लेखक : कमल रंगा; **प्रकाशक** : सुषमा प्रकाशन, नत्थूसर गेट के बाहर, बीकानेर; **प्रथम संस्करण** : 2019; **मूल्य** : ₹ 200; **पृष्ठ संख्या** : 96

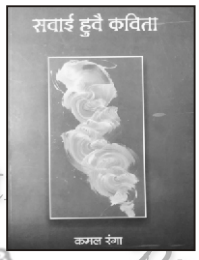

राजस्थानी भाषा के वरिष्ठ कवि-कथाकार कमल रंगा पिछले चार दशकों से राजस्थानी भाषा में निरन्तर उत्कृष्ट सृजन कर रहे हैं। आपको मायड़ भाषा राजस्थानी से असीम प्रेम है जो किसी से छुपा हुआ नहीं है। कमल रंगा की कविताएँ गहरे भाव बोध वाली कविताएँ हैं, जो सीधे पाठक के दिल में उतर जाती हैं। रंगा की कविताओं की भाषा सहज एवं बोधग्मय होने की वजह से पाठक और श्रोता उन कविताओं से आसानी से जुड़ जाते हैं। आप अपनी कविताओं में जन-जीवन की आम-सी दिखने वाली वस्तुओं को भाषा, शिल्प एवं बिम्ब विधान से सजाकर उसके सौन्दर्य में कई गुना वृद्धि कर देते हैं। आप जन-जन के प्रिय रचनाकार है, इसलिए आपको जनकवि कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होती।

राजस्थानी कविता संग्रह 'सवाई हुवै कविता' आपका चौथा राजस्थानी कविता संग्रह है। इससे पूर्व आपके 'तिरस री तासीर' (2009), 'बसंत म्हारी दीठ में' (2016) एवं 'अदीठ साच' (2018) राजस्थानी कविता संग्रह काफी चर्चित रहे हैं। प्रस्तुत कविता संग्रह 'सवाई हुवै कविता' भी आपका एक और बेहतरीन राजस्थानी कविता संग्रह है। इस संग्रह में आपकी विभिन्न भाव भूमि की 62 कविताएँ शामिल की गई हैं, जिन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है। जिसका प्रथम खण्ड साव-सखरी अगन है जो आपने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा रंगा को समर्पित किया है। इस भाग में कुल 28 कविताएँ सम्मिलित हैं। संग्रह का दूसरा खण्ड आखर री काया है, जिसे आपने राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए संघर्ष कर रहे समस्त शब्द साधकों को समर्पित करके राजस्थानी भाषा से अपने असीम स्नेह को प्रकट किया है। इस खण्ड में 34 कविताएँ हैं। संग्रह की भूमिका वरिष्ठ कवि-आलोचक डॉ. मदन सैनी ने लिखी है। आपने कमल रंगा की कविताओं की गहरी विवेचना करते हुए एक आलोचकीय दृष्टि से कविताओं के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

कमल रंगा को काव्य के संस्कार अपने पिताजी हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के वरिष्ठतम साहित्यकार आदरणीय लक्ष्मीनारायण रंगा जी से विरासत में मिले। आपने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति, मेहनत, लगन एवं अपनी योग्यता में निखार पैदा करके इन्हें द्विगुणित कर दिया और आज वो ही संस्कार आप अपने बाद वाली पीढ़ी में भी बीजारोपित कर रहे हैं। आपको राजस्थानी भाषा में सृजन करने के लिए आपकी माताजी स्व. कमलादेवी रंगा ने प्रेरित किया और माताजी की प्रेरणाओं की वजह से ही आप सिर्फ और सिर्फ राजस्थानी भाषा में ही निरन्तर सृजन करने लगे जो आज चार दशकों की गौरवमयी यात्रा पूर्ण होने पर भी जारी है।

सवाई हुवै कविता संग्रह पढ़ना एक आत्मिक आनन्द के सागर में गोते लगाने की अनुभूति कराने वाला एहसास लगा। संग्रह की कविताओं की रोचकता की वजह से पाठक संग्रह को एक बार में ही पूरा पढ़ने को विवश हो जाता है और ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ।

'साव सखरी अगन' भाग की 28 कविताओं में 'थे मा सा' (पेज-28) एवं 'बाबूजी' (पेज-32) कविताएँ माता और पिता के रिश्तों की गहरी पड़ताल करती है। इन कविताओं में जहाँ एक तरफ जीवन संघर्ष करते हुए एक पिता के अन्तर्द्वन्द की इन्तेहा नज़र आती है, वहीं माँ का स्नेह-प्यार और धैर्य भी बड़ी खूबी के साथ दिखाई देता है। इन कविताओं में भारतीय संस्कृति की चारित्रिक विशेषताएँ पाठक और श्रोता को अन्तर्मन तक सोचने पर मजबूर कर देती है। कवि कमल रंगा अपनी क़लम को भावनाओं, अहसासों एवं जज़्बातों की स्याही में डूबोकर लिखते हैं -

बाबूजी री/कैणगत रो खारोपण/काम पेटे ओळमा सुणावणा/किण ढब/मिठास में ढाल देंवता हा/थे मा सा! (पेज-28)

पिताजी की सहनशीलता एवं तमाम तरह की दु:ख तकलीफों का हिम्मत के साथ मुकाबला करने का जज़्बा भी कवि ने मुखर होकर यूं प्रस्तुत करते हुए लिखा है -

रैया करता हा/अबोळा/तो कदै-कदैई/कर लेवता हा रीस/म्हां सगळा माथै/स्यात म्हैं/नीं समझ सकै हा/उणा रे वैवार रो बदलाव/अर/नीं समझ सक्या/कदैई उणा रो दर्द! (पेज-32)

'पड़तख बसै है' कविता में कवि कमल रंगा ने माँ के हृदय में अपने पुत्र के लिए उमड़ने वाले असीम स्नेह एवं आशीर्वाद को तमाम तरह की चिन्ताओं का निवारण करने वाला बताते हुए लिखा है -

अर इण पाण ही/नीं है म्हानै/कोई चिन्ता/क्यूंकि म्हारी पांती री/सै चिन्तावा/ओट लेवै मा/जणै ही/म्हारा हर पल, हर छिण/रैवै हरख उमाव सूं सवाया/आ ही चावना/राखे है हरमेस/म्हारी मा! (पेज-31)

'चैरौ थारो' कविता में राजस्थानी भाषा की मिठास, मठोठ एवं शब्दों की सुन्दरता को शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। वे लिखते हैं -

ओळूं रै/धुंधलकै में/झिलमिलावै है/चैरौ थारौ/जियां धुंधळावै/आभै में/चमके है चांदौ/मीठो-मीठो/मधरौ-मधरौ! (पेज-15)

'लुगाई मिनख' कविता में आपका दार्शनिक अंदाज़ नज़र आता है। 'छोरी' कविता भ्रुण हत्या पर मर्मस्पर्शी कविता है। 'लालसावां' कविता में कवि ने मकड़ी के जरिए लालसाओं में उलझने वाले व्यक्ति को लालसाओं से दूर रहने का सार्थक संदेश दिया है। कम शब्दों में अपनी बात कहने का हुनर इस कविता में गंभीरता के साथ दिखाई देता है। वे लिखते हैं -

जितरा/तार/बणावै है/मकड़ी/उतरी ई घणी/उलझै है/उण में! (पेज-19)

'थिर हुई', 'आभै ऊभी' और 'प्रीत सवाई' कविताएँ जन्म-जन्मांतर तक प्रेम सम्बन्धों के निर्वहन की बात कहती है। 'पासवर्ड रै ताण' कविता आधुनिक सन्दर्भ बोध की कविता है तो 'रातां' कविता प्रेमियों के मिलन की खुशी और बिछोह के ग़म की सुन्दर काव्यात्मक अभिव्यक्ति करने वाली बेहतरीन कविता है। 'करता जातरा' कविता में कवि अपनी जीवन संगिनी के त्याग, समर्पण और प्यार के आगे नतमस्तक होकर अपने जीवन साथी के धैर्य को आदर से नमन करता दिखाई देता है। 'म्हैं अेकलियौ' कविता वर्तमान समय में व्यक्ति के एकाकीपन के दर्द की कलात्मक अभिव्यक्ति है। 'जनरेशन गैप' संग्रह की बहुत बेहतरीन कविता है। एक पुत्र जब स्वयं पिता बनता है तब उसे पिता होने का सही मतलब पता चलता है। कविता का भाव पक्ष बहुत मज़बूत है जो दिल को आनन्द से सराबोर कर देता है। 'जावणो हुवैला' कविता जीवन की नश्वरता की तरफ इशारा करती है तो 'अबै तो चावूं' कविता में कवि अपने प्रतिबिम्ब की खोज करता नज़र आता है। पहले खण्ड की अन्तिम कविता 'म्हारै घर रै आंगन सूं' एक अध्यात्मिक कविता है।

संग्रह के दूसरे खण्ड की शुरुआत 'किण विध मांडू कविता' से होती है। जिसमें कवि जीवन यथार्थ की यथार्थपरक कविता कहना चाहता है लेकिन यथार्थ से कवि मन खिन्न है और वो चाहकर भी यथार्थ की कविता नहीं कह पाता। इस अन्तर्द्वंद को कवि ने बखूबी कविता में प्रस्तुत किया है।

पण/अजोगती बात/सबद है अणमणा/क़लम है उदास/कागद ई नीं हैं/साफ-सुथरा/चौफेर कलमस/म्हैं किण विध मांडू/जीवन जथारथ री/साव सखरी कविता! (पेज-51)

'आखर री काया' कविता में कवि अक्षर की पूंजी और शब्द की परम्परा को बचाने के जतन करता दिखाई देता है। शीर्षक 'सवाई हुवै कविता' में कवि कहता है कि कविता हर दौर के यथार्थ से संघर्ष करके आगे बढ़ती जाती है, कविता को खत्म करने के सभी प्रयत्न आखिरकार निष्फल हो जाते हैं और कविता सवाई कविता हो जाती है। 'मेज' और 'कुर्सी' शीर्षक से तीन-तीन कविताएँ हैं। जिनमें इन निर्जीव वस्तुओं की मन:स्थिति को कवि ने अपने नज़रिए से प्रस्तुत किया है। 'क़लम' शीर्षक की तीन कविताओं में क़लम का दर्द अभिव्यक्त हुआ है। 'बोलता स्यात' कविता हवेलियों की दुर्दशा की बात कहती है। 'इण इक्कीसवै सईकै में' कविता में कवि शब्दों से सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयत्न करता दिखाई देता है। कवि सोई हुई मानवता को अपनी कविता से जगाने का जतन करता है। 'सूरज रौ अणेसो' कविता में कवि सूरज के जरिए खत्म हो रही मानवता और संसार में बढ़ रही बुराइयों का प्रतिकार करता दिखाई देता है। 'म्हारा थार समदर' कविता में कवि समन्दर के माध्यम से अपनी संस्कृति की गहरी जड़ें खोजने का काम करता नज़र आता है। 'धोरा' शीर्षक से तीन कविताएँ हैं, जिनमें कवि धोरों की मनोदशा को अपने नज़रिए से सामने रखता है। 'पलायनवादी दरखत', 'पून-पुराण', है उणियारो तळाव रो' और 'पानी' शीर्षक वाली कविताएं पेड़, हवा, तालाब और पानी से संवेदनात्मक संवाद की कविताएँ हैं। 'निवण' कविता आज़ादी की लड़ाई में शहीद हुए शहीदों को आदरांजलि पेश करती है और 'नीं पोत सकै कोई कळमस' कविता 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करती है। 'सवाई सींव है म्हारी' और 'बीकाणा सौरम थारी' बीकानेर को समर्पित शानदार कविताएँ हैं। संग्रह की अन्तिम कविता 'मायड़ भाषा बनाम पाटवी' राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए गहरी संवेदनापूर्ण कविता है।

हम कह सकते हैं कि संग्रह की कविताएँ जीवन यथार्थ का एक सच्चा दस्तावेज है। कवि कमल रंगा अपनी कविताओं से संवेदना के तारों को सिर्फ झंकृत ही नहीं करते बल्कि यथार्थ से नज़रें मिलाकर उससे मुक़ाबला करने का हौसला भी रखते हैं।

राजस्थानी भाषा जो जन-जन की प्रिय भाषा है। इस भाषा में सृजन करके कवि कमल रंगा भाषा को जो मान दे रहे हैं उसके लिए उन्हें साधुवाद।

रंगा की कविताएँ सिर्फ शब्दों का गठजोड़ नहीं बल्कि शब्दों के साथ गूंथी हुई भावनाओं के गठबन्धन की कविताएँ हैं। कविताओं में रंगा की गहरी सोच, भाषा एवं शिल्प का सौन्दर्य पाठक के मन पर गहरा असर छोड़ने में कामयाबी प्रदान करता है। उनकी कविताओं में उनके जीवन अनुभवों की झलक नज़र आती है। रंगा के पास चीजों एवं वस्तुओं को देखने का एक अलग नज़रिया है जो उनकी कविताओं में मुखर होकर सामने आता है। वे

Rajasthan Education Department

सिर्फ कविताएँ कहते नहीं बल्कि कविताओं को जीते हैं।

अन्त में यही कहना चाहूँगा कि रंगा की कविताएँ इक्कीसवीं सदी के उत्तर आधुनिक दौर में अपना एक अलग मुक़ाम रखती हैं क्योंकि रंगा अपनी कविताओं में नए-नए कथ्यों को नवसंदर्भ-नवबोध के साथ नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं एवं आपकी कविताओं की गहरी व्यंजना इस बात को सार्थक करती है। कमल रंगा को इस महत्त्वपूर्ण काव्य संग्रह के लिए दिल की गहराइयों से असीम बधाई एवं मंगलकामनाएँ।

समीक्षक : **क़ासिम बीकानेरी**
मदीना मस्जिद के सामने, मोहल्ला भिश्तियान,
बीकानेर (राज.) 334001
मो: 8561814522

परत दर परत

लेखक : डॉ. विद्या पालीवाल; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर- 302006; **मूल्य** : ₹ 150; **प्रथम संस्करण**: 2020; **पृष्ठ** : 104

परत दर परत खुलती है एक पुस्तक मन की, वरक दर वरक बहती है एक नदी भावों की, शब्द दर शब्द मुस्कुराती है एक गठरी अनुभवों की। डॉक्टर विद्या पालीवाल के द्वितीय कहानी संग्रह परत दर परत को पढ़ते हुए ऐसे लगता है जैसे अवसादी शैलों से बनी चट्टानों के मध्य कोई नाजुक कली फूटी हो। उसकी कोमलता नवजात की मुस्कान जैसी पवित्र है।

डॉ. विद्या पालीवाल की कहानियाँ संस्मरण, स्मृति, श्रद्धांजलि और कल्पना का बेहतरीन ताना-बाना है। ये कहानियाँ नपे तुले शब्दों के मध्य मन के भावों, अपनों से जुड़ी यादों को बुनकर एक नया परिवेश पाठक सामने रखती है।

वर्तमान साहित्य में कहानी पर काफी कार्य हो रहा है आदर्शवादी, यथार्थवादी, विज्ञान, कल्पना, राजनीति व सामाजिक विद्रूपताओं को दर्शाने वाले कहानियाँ, मनोविज्ञान की उलझनों को सुलझाने का दावा करने वाली कहानियाँ जिनमें क्रूर सत्य को दिखाने की एक होड़ सी नजर आती है।

किन्तु डॉक्टर विद्या पालीवाल का कहानी संग्रह परत दर परत स्निग्ध कोमल मनोभावों को पाठक के सामने रखता है। कुल जमा 15 कहानियों में रचा-बसा संसार लेखिका के जीवन, उनके अनुभव साथ ही साथ स्मृतियों को हृदय की परतों से निकालकर पाठक की पठनीयता को नया आयाम देता है। आज़ादी से पहले की बालिका आजादी के बाद और वर्तमान तक में हुए पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व आर्थिक बदलावों से होने वाले मनोभावों की सत्यता को उम्र की कलम से परखती हुई लगती हैं।

प्रत्येक कहानी अपने आप में विचार, चिंतन, मन के उद्वेलन व भावनाओं के सागर को समेटे हुए हैं। लेखिका को जानने वाले इन कहानियों में जहाँ उनके जीवन के राग विराग को आसानी से पढ़ सकता है वहीं स्वयं को भी देख सकता है।

कहानियों की पृष्ठभूमि मध्यमवर्गीय व उच्च मध्यमवर्गीय परिवारों की है जिस पर समस्त कथ्यात्मक तथ्य तथा भाव विचार खड़े हैं। कहानियों का चारित्रिक परिवेश तात्कालिक समय की सामाजिक व्यवस्था, धर्म, अर्थ का सामंजस्य, स्त्री की स्थिति को सशक्त तरीके से उभारता है। दिन प्रतिदिन की छोटी घटनाओं से किस तरीके से दर्शन, अध्यात्म गूंथा होता है उसका जीवंत प्रमाण कहानी 'छमिया' व 'गगन मंडल पर सेज पिया की है'; इन कहानियों की एक ओर विशेषता शब्दों के मध्य गुथी हुई निरंतर प्रवाहित होने वाली वेदना है जो पाठक को जोड़ती है, कभी-कभी अपनी बुजुर्ग होती पीढ़ी को समझने का एक सूत्र भी पकड़ाती है। डॉ. विद्या पालीवाल की समस्त कहानियों में एक तटस्थ भाव के साथ जीवन सफर की निरंतरता का एहसास लगातार होता है, आयु के जिस पड़ाव पर लेखिका हैं वहाँ से विगत को देखकर, जीवन को समझ कर एक सार्थक ज़िन्दगी जीने की कुंजी के रूप में अपने अनुभव कहानियों के जरिए सौंपती प्रतीत होती है।

कहानियों की भाषा प्रांजल शुद्ध परिष्कृत व सम्मोहक है तत्सम शब्दों का प्रयोग नई पीढ़ी को विस्मित कर सकता है; जिन शब्दों को बोलने में भी आज के युवा की जिह्वा लड़खड़ा जाए उन्हें बड़ी सरलता से अपनी कहानियों में बुना है जैसे- किंकर्त्तव्यविमूढ़, विभीषिका, निष्पक्ष, निष्णात, तेजोदीप्त आदि कथाचित्र के साथ न्याय करती भाषा शैली उन्हें वर्तमान के लेखकों से अलहदा भी करती है और यह अलहदापन इस कहानी संग्रह की खूबसूरती है। इन तमाम संस्मरणात्मक कथाचित्रों के साथ जिस तरीके के अनुरूप भाषा का प्रयोग बहुत चतुराई समझदारी के साथ किया है यह लेखिका के बहुभाषा विज्ञ होने का प्रतीक भी है। कहानियों में मालवी, गुजराती, संस्कृत, राजस्थानी व अंग्रेजी भाषा के कथोपकथन से भाषाई सौंदर्य बनता है जो कहानियों की पठनीयता, ग्राह्यता को बढ़ाता है।

चरित्र के अनुकूल भाषा शैली को बुनते समय लेखिका एक पूरा सामाजिक, भावनात्मक व रचनात्मक परिवेश पाठक के सामने अभिव्यक्त करती है जिससे गुजरते हुए पाठक कहानी के मूल भाव को आत्मसात करता हुआ आनंद को अनुभूत करता है।

इस संग्रह की समस्त कहानियों में एक संघर्ष भी नजर आता है और वह संघर्ष है अतीत और वर्तमान का, बदलते मानवीय मूल्यों का, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जगत में होने वाले परिवर्तनों का खुरदरापन इन कहानियों की कोमलता बुंनगट में भी पाठक को महसूस हो ही जाती है। यह चुभन विचार तंत्री को झंकृत करती है तथा यह झंकार पाठक को आत्म निरीक्षण, परीक्षण के लिए प्रेरित करती है; कहानियों में बारीकी से बुना आध्यात्मिक जीवन दर्शन एक प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। मन की जटिल उलझनों का सरलीकरण इन कहानियाँ के माध्यम से दृष्टिगत होता है, जीवन के कगार पर खड़े होकर विगत को चितारते हुए, क्या खोया क्या पाया के भाव के साथ निस्पृहता इन समस्त कहानियों का सार है।

कहानी 'मन की परतें' के कथा नायक सौमित्र, मदर्स डे की अचला, बबी बेन, छमिया सभी चरित्र अपने अपने जीवन का सार पाठक को सौंपते हैं।

विद्या पालीवाल की सतत सक्रिय साहित्य साधना युवाओं के लिए प्रेरणादायी है। लेखिका ने अपनी कहानियों के पात्रों के नाम बेहद खूबसूरत, प्रतीकात्मक व गहन अर्थवान रखे हैं जोकि संस्मरण के साथ न्याय भी करते हैं जैसे असीम धरा, अचला, चंद्रकांता, सारन्ध्री, मिनी, यति, प्रियंवदा, नील प्रभा, बसंती, पीयूष, शाकुंतल, छमिया, कौस्तुभ, सुनैना आदि यह समस्त नाम कहानी के मूल भाव वह चरित्रों की व्याख्या करते हैं, साहित्य में व्यंजना का इतना श्रेष्ठ प्रयोग आजकल कम दृष्टिगोचर होता है।

कहानियाँ में दोहा, कविता, गीता के

Rajasthan Education Department

श्लोकों का यथा स्थान सटीक प्रयोग कहानियों के नाद सौंदर्य को द्विगुणित करता है।

कहानी मदर्स डे में
देह धरे को दंड है सब काहू को होय
ज्ञानी भुगते ज्ञान सों मूरख भुगते रोय
बबी बेन में जॉयही...।।।।

छमिया कहानी में लेखिका रूढ़ि व अंधविश्वासों को बड़े सलीके व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडन करती है। छमिया कहती हैं भाई यह दृष्टि दोष होवे हैं हमारे पुरखे बड़े बूढ़े कहैं कि दृष्टि सौ पत्थर तक फट जावे हैं। इस स्टेटमेंट पर लेखिका अपने आर्य समाजी दादा जी के माध्यम से इस प्रकार स्पष्टीकरण देती है कि देखो बेटा इस दृष्टि में बहुत ताकत होती है कोई सदय, सरल और सकारात्मक विचार वाला व्यक्ति देखता है तो उससे वह ऊर्जा आशीर्वाद मिलता है पर जब निम्न स्तरीय संकुचित विचार वाला जलन, ईर्ष्या और द्वेष मन में रखने वाला व्यक्ति नकारात्मक भाव से जब किसी को निहारता है वही दृष्टिदोष हो जाता है ।पाठकों के लिए भी इस प्रकार की सरल व्याख्या पढ़ने का पहला अवसर होगा। विद्या जी की कहानियों का शिल्प अत्यंत सरल व सुघड़ है, शब्दों के मध्य सोने पर मीनाकारी के काम जैसे कहावतों मुहावरों का लालित्य बेहद रुचिकर लगता है।

कई स्थानों पर बड़े ही मनमोहक शब्द चित्र रचे है जैसे एक तुतली गुनगुनाहट दोनों के जीवन को रंगों से सरोबार कर रही थी। कहानी प्रत्यावर्तन पूरे कहानी संग्रह में ऐसे कई मोहक स्थल हैं। उम्र का लेखा जोखा करती कहानियों के माध्यम से अनुभूत पीड़ा को सलीके से कहते हुए भी लेखिका प्रभु व प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करती है।

यह कृतज्ञता ही परत दर परत को विशेष बनाता है। साहित्य साधना सतत चलने वाली प्रक्रिया है यह निरन्तरता बनी रहे। उज्ज्वल व सक्रिय भविष्य की मंगलकामनाएँ।

समीक्षकः **मोनिका गौड़**
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
आई.जी.एन.पी.कॉलोनी,
बीकानेर (राज.)-334001

नवाचार

शैक्षिक भौतिक परिदृश्य का बदलता स्वरूप

❑ भंवरलाल पुरोहित

राजस्थानी, शैली एवं चित्रकारियों का जीवंत उदाहरण भी इस कहावत को चरितार्थ करती है- 'मूक दिवार भी बोलती है, दीवारों के भी कान होते है।' यही सब परिलक्षित होता है, आमली रोड पर पिण्डवाड़ा से बाहर निकलते ही बायीं ओर सड़क के किनारे अवस्थित 'आजादी का जश्न मनाते हुए' स्वच्छता का संदेश अंहिसा के पुजारी के साथ राउप्रावि नं. 01 पिण्डवाड़ा की चारदीवारी यही तो बयान करती है कि- मैं बोलती नहीं हूँ, फिर भी बहुत कुछ बोल जाती हूँ।

मुख्य द्वार जो आकर्षक ही नहीं अपितु शिक्षालय का खुला स्वरूप आमंत्रित करता है- आलोकित, प्रकाशित एवं शिक्षा पुंज प्राप्त करने वाले नन्हें-मुन्ने बच्चों को। हमारी राजस्थानी परम्परा है 'चूनरी ओढ़ाने की' इस परम्परा को सार्थक किया है अल्ट्राटेक सीमेन्ट प्लांट आमली द्वारा राउप्रावि नं. 01 पिण्डवाड़ा को 'सुनहरी चूनड़ी' के रूप में शिक्षा से सरोकार रखते हुए चित्रावलियों, अभ्यास क्रमों, पर्यावरणीय ज्ञान, योग ध्यान से ओत-प्रोत संस्कारों की रंग-बिरंगी कलाओं से ओत-प्रोत कर दिया है। मुख्य द्वार के अन्दर जाते ही एल्फाबेट, एरोप्लेन से लेकर जेबरा की सवारी करते हुए पर्यावरण फलों से लेकर योगा तक सेहत को सबल बनाने की कामना करते हैं। ये सब मुँह बोलती रचनाकार 'रंग रसियां' के ऊंगलियों से चलते ब्रुश एवं रचनाधर्मिता को दर्शाते हैं। मूक दीवारों, पीलरों पर चित्रों, कोष्टकों, पर्यावरणीय एवं बादलों से अटे हुए चित्रों को देखकर सजीवता की ओर उन्मुख होता भाव दिखाई देता है। बोलते हुए, कहते हुए पाते हैं कि आओ कक्षा में जाने से पहले मुझसे भी कुछ बत्तिया लो और ज्ञान के भण्डार को समृद्ध बना डालो।

रचनाकार रंग रसिया द्वारा बनाई गई सटीक ज्ञान गंगा में डूबकी लगाते हुए महसूस किया कि स्वयं प्रजापिता ने रंग रसियां को शिक्षा की नींव को मजबूत करने का दायित्व सौंप दिया है। शाला भवन का केसरिया आवरण वीर बनो, धीर बनो की आवाज के साथ रसोईघर से मिलता आमंत्रण 'पधारो म्हारे देश' की आवाज के साथ निमंत्रण देता नजर आता है। दीवारों पर बने रंगों, चित्रों एवं ज्ञान गंगा को सोचने-समझने से लेकर पाठ्यचर्या के ज्ञान को लेकर कहती है कि 'शिक्षक कम है तो चिन्ता न कर 'मैं हूँ ना' आप धीरज रखिए, मुझसे आते-जाते, खेलते हुए थोड़ा ठहर कर बात तो करिये, मैं अनबूझे-अनसुलझे सवालों, हिन्दी की पहेलियों एवं पर्यावरण के चरित्र को समझा दूंगा। मुझे भी लगा कि इस सतरंगी चुनरी में सतरंगा ज्ञान का खजाना है, उसे केवल और केवल देखने-समझने की आवश्यकता है। हर कदम पर हर पीलर कुछ सीखने-सिखाने के अंदाज में खड़ा है। कक्षा-कक्षों की बात तो अलग-अलग न्यारी सी है, कोई कक्ष कहता है- मैं मदर टेरेसा तो कोई रानी लक्ष्मीबाई की गाथा सुनने को बुलाता है, रमन कक्ष में तो फर्श पर बना सौरमण्डल विशालकाय ब्रह्माण्ड की कल्पना करवाता है, जिसमें एक बालक सूर्य की धुरी बनकर तो दूसरे ग्रह नक्षत्र, तारों के संसार को समझते, समझाते हुए नजर आए। सब कुछ खेल-खेल में सप्तरंगी चूनड़ी ही सीखा पाई कि इस सोच के पीछे अल्ट्राटेक सीमेंट की सी.एस.आर. टीम एवं टीम लीडर प्रबंधक श्री पाण्डे जी की सोच, मार्गदर्शन, दूरदर्शिता की झलक भी दिखाई देती है। प्रधानाध्यापिका श्रीमती उम्मेद कंवर की मेहनत एवं उत्साह भी परिलक्षित होता है।

राउप्रावि नं. 01 पिण्डवाड़ा मॉडल स्कूल में विकसित करने की सोच को कायम करने हेतु अल्ट्राटेक के इंजीनियर, चार्टेड अकाउंटेंट, प्रतिभाशाली प्रशासन एवं प्रबंधकों की छवि बालकों में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो, इस हेतु अध्यापक-अभिभावक सभी कृत संकल्पित है कि नए शैक्षिक परिदृश्य को अंजाम तक पहुँचाने में अपनी भूमिका निभाएंगे।

खण्डहर सी लगती बिल्डिंग आज चूनर ओढ़े एक दुल्हन सी लग रही है, सतरंगी चूनरी से सुशोभित विद्यालय अपने नए आयामों के साथ नए परिदृश्य के साथ नव कीर्तिमान स्थापित करेगा। ऐसी मेरी कामना है।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी,
समग्र शिक्षा, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज.)
मो. 9414767779

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

स्वामी विवेकानन्द

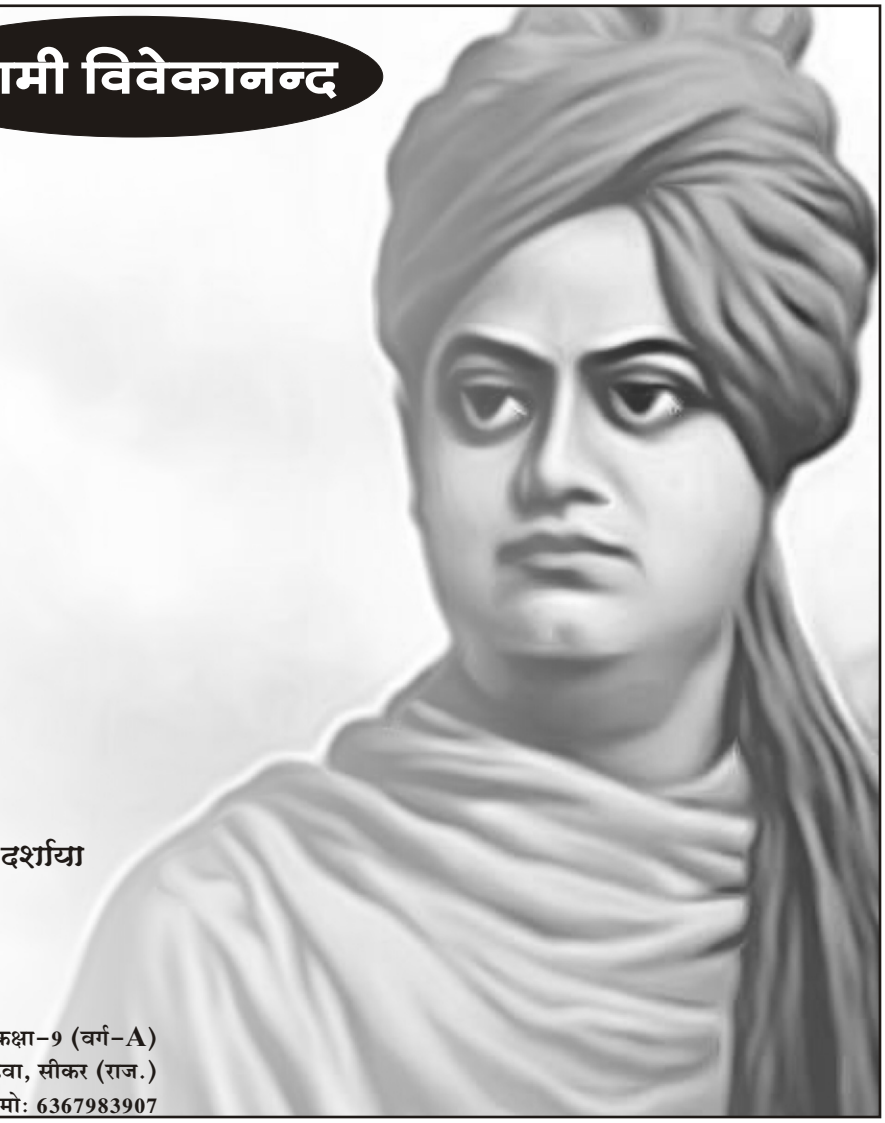

सोयी दुनिया को जगाया
सिंहों को सिंह बनाया
प्रेम योग हो या भक्ति योग हो
एक रहस्यमयी सूत्र उपजाया
दूसरों के लिए जीना और
नर-पशु में मतभेद बताया
वही आत्मज्ञानी महापुरुष
स्वामी विवेकानन्द कहलाया।

रुको न जब तक लक्ष्य न पाओ
मन दुर्बलता को दूर भगाओ
इंसानियत का यही मर्म
जीवन पथ पर हो सत्कर्म
सोच लो तो शैतान बनो
सोच लो तो इंसान बनो
आत्म भक्ति ही शक्ति का दर्पण दर्शाया
इंसानियत का धर्म सिखलाया
वही ज्ञानी महापुरुष
स्वामी विवेकानन्द कहलाया।।

दीपिका जाँगिड़, कक्षा-9 (वर्ग-A)
राजकीय माध्यमिक विद्यालय डूडवा, सीकर (राज.)
मो: 6367983907

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

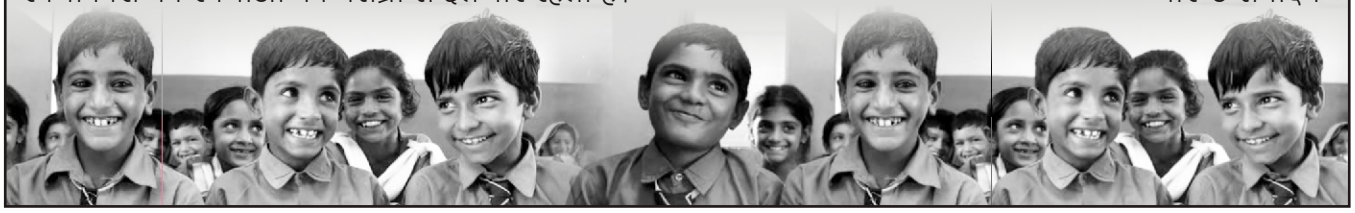

Career Day

Today was career day,
And the children were all lined up,
to walk to the gymnasium
to look at what they wanted to be
some day.

A little girl stood mlike
anxious to go see,
In hopes that it would be there,
the table on what she wanted to be.

The children started walking
and some began to talk,
but the little girl in back,
was shaking while she walked.

As they neared the gym,
The teacher said to go,
Find the things they may want to be,
an ideas if they didn't know.

Ronak, Class-XII (Section-A)
Government Senior Secondary School
Dudwa, Sikar (Raj)
Mob.: 9649211536

गर्भनाल से जुड़ी माँ

मेरा ये अस्थि मज्जा,
रक्त, सांसे,
और धड़कन सब
तूझी से हैं!!
फिर क्यों लोग
कहते हैं कि तू
मुझसे और मैं तुमसे
जुदा हो गया हूँ।
झूठे है वो, जो कहते हैं
तुम आसमां में खो गई हो।
जी नहीं, माँ कहीं नहीं
जाती!!
माँ धड़कती है दिल में
धड़कन बनकर
माँ महकती है सांसो में
खुशबु बनकर
माँ बसती है आँखों में
रोशनी बनकर
माँ बचाती है मुश्किलों से
साया बनकर
माँ गूंजती है वाणी में
शब्द लहरी बनकर
माँ बहती है धमनियों में
रक्त बनकर
तुमने भी तो नौ माह
अपने गर्भ में रखकर
अपने ही रक्त से सींच
हर अंग का
रेखाचित्र खींचा
गर्भनाल से
खिलाया-पिलाया
जीवन तंतुओं को
मजबूत बनाया
फिर एक दिन काट
दी गर्भनाल
ताकि खड़ा हो सकूँ
तेरी अंगुली पकड़कर
चल सकूँ-लड़ सकूँ
हर मुश्किलों से संभल कर
और कर दूँ रोशन
तेरा नाम!!
मुझे तो लगता है माँ
एक बार फिर तुमने
गर्भनाल खुद से
जोड़ ली है।
फर्क सिर्फ इतना है कि
इस बार नाल
नाभि से नहीं
दिल से जुड़ी है
तभी तो तेरी
सब सदाएं स्वर्ग से सीधे
दिल तक आ रही है!!
गा रही हैं कि तुम गई नहीं
यहीं हो, यहीं हो, यहीं हो!!
देखो ना
फूलों की खुशबू,
रंगों में तुम हो।
मंदिर की घंटियों में
तुम हो।
मस्जिद की अजानों में
तुम हो।
शब्द और प्रार्थनाओं में
तुम हो।
जल के कल-कल में
तुम हो।
हवा और पल-पल में
तुम हो।
माँ, तुम ही यत्र-तत्र
सर्वत्र हो।
माँ! तुम चतुर्दिक
व्याप्त हो।

सुभाष गर्ग, कक्षा-11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा
का गोलिया (जालोर) मो: 9610714084

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

मुख्यमंत्री महोदय के कर कमलों से 'राजस्थान के सम्मानित शिक्षकों की उपलब्धियाँ' स्मारिका का विमोचन

जयपुरः माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने अपने निवास पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान द्वारा प्रकाशित 300 रंगीन पृष्ठों की स्मारिका 'राजस्थान के सम्मानित शिक्षकों की उपलब्धियाँ' का विमोचन 13 नवम्बर 2021 को किया। स्मारिका में राज्य के 929 राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय पुरस्कृत शिक्षकों का परिचय, उनकी उपलब्धियाँ तथा शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की भी जानकारी है। स्मारिका का मुख्य संपादन पुरस्कृत शिक्षक फोरम के महासचिव श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने किया है। स्मारिका में पुरस्कृत शिक्षकों से संबंधित उनके हितों से जुड़े आदेश व परिपत्र प्रकाशित किए गए हैं। 929 पुरस्कृत शिक्षकों की रंगीन फोटो, परिचय, विशेष उपलब्धियाँ, उनके निवास का पता तथा मोबाइल नंबर आदि को भी प्रकाशित किया है। सन 1995 से 2021 तक राज्य स्तरीय विभिन्न आयोजनों और कार्यक्रमों के छायाचित्र भी प्रकाशित किए हैं। विमोचन के अवसर पर फोरम अध्यक्ष सुश्री निर्मल ग्रोवर, महासचिव श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा, उपाध्यक्ष श्री सुदर्शन कुल्हार व श्री विनोद शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश शर्मा, संयोजक सचिव श्री बसन्त कानूनगो तथा श्री मोहन मितवा उपस्थित थे।

कोरोना जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

सिरोही– संघवी हंसराज कानाजी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जीरावल में राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स एवं बेयरफुट इंटरनेशनल कॉलेज स्वयं सेवी संगठन के तत्वावधान में जीरावल गाँव के विभिन्न क्षेत्रों के जैन मंदिर, रेबारी वास, रामदेव मंदिर, वेरा वल्ली, गोदोड़ बाबा चौक, बस स्टैंड व ग्राम पंचायत के आगे कोरोना जागरूकता हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। स्काउट बालचरों ने कोरोना जागरूकता अभियान में नारे लगाकर जागरूकता का संदेश दिया। इस अवसर पर स्काउट व बेयर फुट कॉलेज की टीम द्वारा मास्क वितरित कर नियमित हाथ धोने व दो गज की दूरी बनाए रखने का संदेश दिया साथ ही कोरोना के नए वेरिएंट्स के लक्षणों की भी जानकारी दी गई। इस अवसर पर संस्थाप्रधान श्री कमल कांत शर्मा, स्काउट प्रभारी श्री मुकेश पुरोहित, स्वयंसेवी संस्था बेयर फुट कॉलेज के प्रतिनिधि सर्वश्री अमन, रिजवाना बानू, स्काउट तुलसी राम, दीपक कुमार, मगन लाल, विक्रम कुमार, विपुल कुमार, सुरेश, गोविंद पुरी उपस्थित रहे।

बचत बैंक की स्थापना व प्रश्नोत्तरी का आयोजन

बाड़मेर– मे.हु. राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मोकलसर उपखण्ड सिवाणा के वरिष्ठ अध्यापक (गणित) श्री कुमार जितेन्द्र जीत ने बालिकाओं के भविष्य को मजबूत उड़ान देने के लिए विद्यालय में **'बालिका बचत बैंक'** की शुरुआत की है। वर्तमान समय में शिक्षा और खेल में सर्वश्रेष्ठ अनेक बालिकाओं के परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे अपनी उड़ान को नए पंख नहीं दे पाती है। इन्हीं बालिकाओं को नए पंखों से भविष्य की उड़ान भरने के लिए श्री कुमार जितेन्द्र ने स्वयं बालिका **'बचत बैंक पेटी'** को विद्यालय में भेंट कर प्रधानाचार्य श्री कृष्ण लाल जांगिड़ के कर कमलों द्वारा एक नई पहल का शुभारंभ किया है। इसी विद्यालय में संविधान दिवस पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय की पच्चास से अधिक बालिकाओं ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्थान दीक्षिता कक्षा नवमी, द्वितीय स्थान पर पूजा कक्षा ग्यारहवीं, भूमिका कक्षा दसवीं, गोदावरी कक्षा नवमी, तृतीय स्थान पर नीतू कक्षा नवमीं, मोनिका कक्षा नवमीं, मेघा कक्षा नवमीं, खुशबु कक्षा नवमीं रही। वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र जीत द्वारा प्रथम स्थान प्राप्तकर्त्ता को संविधान की उद्देशिका फ्रेम, द्वितीय एवं तृतीय को डॉ. भीम राव अम्बेडकर की पुस्तकें और प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाली सभी बालिकाओं को एक एक पेन वितरित किए गए। कार्यक्रम के इस अवसर पर व्याख्याता सर्वश्री सुरेश कुमार सोलंकी, जगदीश विश्नोई, फरसा राम

मेघवाल, भरत कुमार सोनी, हीरा राम गर्ग, अध्यापिका सजना कुमारी सुमित्रा बाई, मोहिनी गोदारा, रेखा जाट, लिपिक मुकेश कुमार, सागर बाई सहित विद्यालय की बालिकाएँ उपस्थित रही।

स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

बूँदी–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा, खटकड़, बूँदी में छात्र छात्राओं के स्वास्थ्य जाँच करने हेतु संस्थाप्रधान श्री जितेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्रों की जाँच के दौरान 13 छात्रों में गंभीर बीमारी के लक्षण पाए गए। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक सर्वश्री राम लक्ष्मण मीणा, गजेंद्र राठौर, महेंद्र स्वामी, राकेश कुमार, परशुराम मेघवाल, श्रीमती सुनीता आदि ने स्वास्थ्य जाँच हेतु सहायता की।

गाँधी हेल्प डेस्क पर गाइड्स ने दी सेवाएं

उदयपुर– प्रशासन गाँव के संग अभियान के तहत आयोजित शिविर में गाइड्स ने गाँधी हेल्प डेस्क पर सेवा देते हुए लोगों को आवश्यक जानकारी प्रदान करने के साथ ही वृद्धजन सेवा, दिव्यांग ग्रामवासियों की सेवा, छात्रों व अन्य ग्रामीणों के जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र, आधार कार्ड की समस्याओं से संबंधित आवेदन पत्र भरने का कार्य करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारी से संपर्क कराने का कार्य किया, साथ ही समस्त विभागों के अधिकारियों–कर्मचारियों हेतु जल सेवा व्याख्याता एवं गाइडर माधवी त्रिपाठी के नेतृत्व में किया गया। प्रशासन गाँव के संग अभियान शिविर की प्रभारी नीलम लखारा उपखंड अधिकारी गोगुंदा, श्री लाल सिंह झाला निवर्तमान जिला अध्यक्ष देहात जिला कांग्रेस कमेटी उदयपुर, डॉ. मांगीलाल गरासिया पूर्व मंत्री एवं पीसीसी महासचिव राजस्थान सरकार, श्री जितेंद्र सिंह राजावत विकास अधिकारी गोगुंदा, श्री विमलेन्दर सिंह तहसीलदार, अंबालाल खटीक एसीबीईओ गोगुंदा, कमली बाई सरपंच मोड़ी, श्री प्रहलाद सिंह झाला उपसरपंच मोड़ी, ग्राम विकास अधिकारी श्री मुकेश सिंह का गाइड्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर से स्वागत किया गया। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी नीलम लखारा ने गाइड प्रभारी माधवी त्रिपाठी सहित सभी गाइड्स को शिविर में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रशंसा पत्र प्रदान करते हुए मोड़ी की गाइड्स द्वारा नि:स्वार्थ भाव से शिविर में की गई सेवा के लिए सभी गाइड्स को धन्यवाद दिया। शिविर को सफल बनाने में विद्यालय परिवार से मोहम्मद हमीद शेख व सोहन लाल नाई का भी सहयोग रहा।

65वीं राज्य स्तरीय तीरंदाजी छात्र-छात्रा 17 व 19 वर्ष आयुवर्ग खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

जयपुर–दिनांक 20 नवम्बर 2021 शनिवार को राज्य स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें खेल एवं युवा मंत्री, राजस्थान सरकार श्री अशोक चांदना, द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित श्री वीरेन्द्र पूनिया, अर्जुन पुरस्कार प्राप्त श्री रजत चौहान, महाराणा प्रताप खेल रत्न से सम्मानित खिलाड़ी सुश्री स्वाति दूधवाल, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, जयपुर पश्चिम श्री विष्णुदत्त गुप्ता, उपजिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा जयपुर श्री सुमेर सिंह खटाना उपस्थित रहे तथा विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। समापन समारोह में बोलते हुए श्री अशोक चांदना ने कहा कि राजस्थान में अब खिलाड़ियों का भविष्य अन्य प्रदेशों की भांति उज्ज्वल होगा। आउट ऑफ टर्न भर्तियाँ करके सरकार ने इस मामले में अपनी मंशा भी जाहिर कर दी है। पैरा ओलंपिक विजेता श्री सुन्दर गुर्जर ने खिलाड़ियों के लिए 55 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में राज्य के 33 जिलों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में कुल 43 मेडल्स तीरदांजों ने जीते जिनमें से 28 मेडल छात्राओं ने तथा 15 मेडल छात्रों ने जीते। स्थानीय विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी ने खिलाड़ियों को पदक जीतने पर बधाई दी तथा खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। स्थानीय विद्यालय के वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक तथा प्रभारी उपजिला शिक्षा अधिकारी (शारीरिक शिक्षा) जयपुर डॉ. मोहन लाल ने सभी खिलाड़ियों तथा टीम प्रभारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

विज्ञान मेले से लौटे विद्यार्थियों का किया सम्मान

चूरू–जिला स्तरीय विज्ञान मेले में भाग लेकर लौटे विजेता विद्यार्थीयों का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अजीतसर के प्रधानाचार्य व विद्यालय स्टाफ ने अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में जिला स्तर पर मॉडल प्रतियोगिता

जूनियर वर्ग में प्रथम रहे वेदप्रकाश व सेमीनार प्रतियोगिता में प्रथम रही मीतु तथा मॉडल प्रतियोगिता सीनियर वर्ग में दूसरे स्थान पर सुनील, भरत, इमरान, दशरथ व अंकित को माला व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। विद्यार्थीयों ने पूनम सैनी व भवानी शंकर के निर्देशन में मेले में भाग लिया। वेदप्रकाश व मीतु 11जनवरी 2022 से 14 जनवरी 2022 तक होने वाले राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में भाग लेंगे। वेदप्रकाश ने **'रेन अलार्म'** बनाया है जिसके द्वारा सामान्यत: बड़े घरों में वर्षा के समय उपयोगी सामग्री भीगने का खतरा रहता है इस उपकरण के द्वारा वर्षा शुरू होते ही अलार्म बजना शुरू हो जाता है। श्री नेमीचन्द सुडीया ने बताया कि शिक्षा के साथ सहशैक्षिणक गतिविधियों में भाग लेने पर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है अत: विद्यार्थीयों को सहशैक्षिणक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। कार्यक्रम मैं सर्वश्री रुकमानन्द सारण, रामेश्वरलाल, लावणया लता, राकेश सैनी, राकेश सरावग, नेमीचन्द सुथार, श्रवण कुमार, बजरंग लाल पारीक, नेमाराम उपस्थित थे।

शोभासर में हुआ राष्ट्रीय सेवा योजना के एक दिवसीय शिविर का आयोजन

बीकानेर– श्री तुलसीराम रामनारायण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शोभासर में राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ प्रधानाचार्य श्री मनोहर सिंह शेखावत द्वारा स्वयंसेवकों की रैली को रवाना कर किया गया। शिविर प्रभारी श्री संजय कुमार शर्मा के दिशा-निर्देशन में शिविर में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। वरिष्ठ अध्यापक श्री मनोज कुमार तंवर ने स्वयंसेवकों को संगठित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। स्वयंसेवकों की टीम ने शोभासर ग्राम पंचायत स्थित गोपाल कृष्ण गौशाला में जाकर श्रमदान किया, वहाँ पर गौशाला के अध्यक्ष श्री भगवान सिंह एवं प्रबंधक श्री सोहन सिंह बड़गुजर द्वारा स्वयं सेवकों को सेवा कार्य के महत्त्व के बारे में अवगत कराया एवं स्वयंसेवकों के अवदान की भूरी भूरी प्रशंसा की। इस अवसर पर श्री धूड़ाराम व्याख्याता व श्री ओमप्रकाश वरिष्ठ अध्यापक ने अपने वक्तव्य के दौरान स्वयंसेवकों को विकास में समर्पण की भावना से जोड़ने के लिए प्रेरित किया।

7वाँ संविधान दिवस मनाया गया

जयपुर– 26 नवम्बर, 2021 को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) मानसरोवर, जयपुर में संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बाल अधिकार संरक्षण आयोग, राजस्थान के सदस्य श्री शिव भगवान नागा, सहायक निदेशक श्री विकास मीणा उपस्थित रहे। इनकी

उपस्थिति में संविधान की प्रस्तावना का पाठकर शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर श्री नागा ने बाल अधिकारों के बारे में जाग्रति, चाइल्ड हेल्पलाइन-1098 आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। श्री मीणा ने भारतीय संविधान के निर्माण, उसके महत्त्व के बारे में जानकारी दी। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी ने विद्यार्थियों को संविधान के महत्त्व से अवगत करवाया, इन्होंने बताया कि 19 नवम्बर, 2015 को भारत सरकार ने गजट सूचना जारी कर डॉ. भीमराव अंबेडकर की 125 वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इस अवसर पर विद्यालय में विद्यार्थियों को संविधान के निर्माण पर आधारित एक लघु फिल्म दिखाई गई। स्थानीय विद्यालय के शिक्षकों डॉ. सुरेश कुमार यादव, डॉ. संतोष कुमार जाखड़, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री गिरिश कुमार सांवरिया, श्री राकेश कुमार बैरवा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जूडो प्रतियोगिता के लिए छात्रा का चयन

जालोर– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल की छात्रा सपना मीणा पुत्री श्री शंकर लाल मीणा का राज्य स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जूडो प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कृष्णा कॉलोनी ब्यावर में 65 वीं राज्य स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुश्ती एवं जूडो प्रतियोगिता का आयोजन 27 नवंबर से 1 दिसम्बर तक हुआ। शारीरिक शिक्षक श्री दलपत सिंह आर्य ने बताया कि सपना ने हाल ही में सांकरणा में हुई जिला स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जूडो प्रतियोगिता के 27 किलोग्राम भार वर्ग में **'गोल्ड मेडल'** जीता था। यह विद्यालय की पहली खिलाड़ी है, जिसको स्कूल खुलने के लगभग 50 वर्ष बाद पहली बार विद्यालय की बालिका को राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु रवाना होने पर प्रधानाध्यापक श्री सुरेंद्र सिंह परमार व श्याम सिंह मेड़तिया ने अक्षत तिलक लगाकर व माल्यार्पण कर तथा गुड़-धाणा खिलाकर स्वागत किया। इस

अवसर पर अध्यापक श्री राजेश बालोत व स्विटी सिसोदिया ने भी उनका स्वागत कर शुभकामनाएँ दी। सपना मीणा आर्य वीर दल, सुभाष व्यायामशाला लालपोल की प्रशिक्षणार्थी है। इससे पूर्व सपना ने जिला क्रीड़ा परिषद के सदस्य छगन आर्य के नेतृत्व में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री टीमा राम मीणा तथा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री कमल सिंह परमार से उन्होंने आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर उनके पिता श्री शंकरलाल मीणा सहित कई लोग मौजूद थे।

नि:शुल्क साइकिल एवं स्वेटर वितरण समारोह

सिरोही–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निचलागढ़ सिरोही में राजस्थान सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजना 'निशुल्क साइकिल वितरण' के तहत साइकिल वितरण किया। प्रधानाचार्य श्री बाबूलाल के निर्देशन में और शाला प्रबंधन समिति सदस्यों की उपस्थिति में सत्र 2020 और 2021 की नवम कक्षा में अध्ययनरत 25 बालिकाओं को साइकिल का वितरण किया गया। दूर दराज से आने वाली छात्राओं के लिए ये साइकिल काफी फायदेमंद रहेगी और उनका ठहराव सुनिश्चित होगा। साइकिल पाकर छात्राओं के चेहरे खिल उठे। इस अवसर पर SDMC उपाध्यक्ष श्री नानाराम गरासिया और व्याख्याता श्री अमित सिंह, श्री गणेश कुमार बामणिया उपस्थित रहे। इसी विद्यालय के शिक्षक ज्योतिष कुमार की प्रेरणा से राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद् आबूरोड के संयोजक श्री नवलराम जोगराम के सहयोग से मुम्बई निवासी उद्योगपति 87 वर्षीय श्री शैलेन्द्र सिंह घीया के द्वारा 60 हजार की लागत से 200 स्वेटरों का वितरण स्थानीय विद्यालय के कक्षा 6 से 10 के छात्रों को किया गया। प्रधानाचार्य श्री बाबूलाल प्रजापत ने उनका बहुमान किया और समय-समय पर मिलने वाले भामाशाह सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। भामाशाह घीया ने छात्रों को अपने जीवन के अनुभव बताते हुए देशहित में किए जाने वाले परोपकार कार्यों को बटोरने का आह्वान किया। उन्होंने छात्र जीवन को बड़ा कीमती समय बताया और उसका अधिकाधिक सदुपयोग करने के लिए टिप्स बताए, जिनका जीवन भर अनुसरण किया जा सकता है।

स्कूल की 41 छात्राओं को मिली साइकिलें, मतदाताओं को जागरुक करने के लिए निकाली जागरूकता रैली

बीकानेर : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ में राज्य सरकार व शिक्षा विभाग की नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ में दूर दराज के गाँव-ढाणियों से आने वाली कक्षा 9 की छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण की गई। कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहर सिंह मीना ने बताया की सत्र 2020-21 व

सत्र 2021-22 में अध्ययनरत 20 छात्राओं सहित 41 छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल वितरण की गई। इस अवसर पर प्रधानाचार्य उषा कालरा व उप सरपंच श्री श्रवणराम ने छात्राओं से नियमित स्कूल आने व पढ़कर अच्छे अंक लाने के लिए प्रेरित किया। साथ ही निर्वाचन आयोग व विभाग के आदेशानुसार ईएलसी ग्रुप के छात्र-छात्राओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाता सूची में नाम जुड़वाने व वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करने का संदेश ग्रामीणों को दिया। छात्र छात्राओं ने रैली में नारों व पोस्टरों के माध्यम से ग्रामीणों को वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करने, मतदाता सूची में संशोधन, 18 वर्ष आयु पूरी कर चुके युवाओं का नाम जुड़वाने आदि की जानकारी दी।

कक्षा-कक्षों के उद्घाटन के कार्यक्रम का आयोजन

जालोर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय विरोल बड़ी सांचौर में समसा के तहत निर्मित दो कक्षा-कक्षों के उद्घाटन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उद्घाटन में मुख्य अतिथि माननीय श्री सुखराम बिश्नोई वन एवं पर्यावरण मंत्री राजस्थान सरकार, अध्यक्षता श्री दलीचंद पुत्र श्री रायचंद जैन विशिष्ट अतिथि श्री मोहन सिंह राव, श्री हिन्दूसिंह प्रधान प्रतिनिधि पंचायत समिति चितलवाना, श्री पूनमचंद विश्नोई सीबीईओ सांचौर, श्री नरेश सेठ नगरपालिका चेयरमैन सांचौर, श्री लाडूराम नोडल प्रधानाचार्य सांचौर, श्री कुपाराम चौधरी पूर्व प्रधान, श्री पीराराम चौधरी सरपंच ग्राम पंचायत विरोल, प्रधानाचार्य श्री किशन लाल सारण राउमावि विरोल बड़ी, एसएमसी अध्यक्ष व समस्त स्टाफ व ग्रामीण मौजूद रहे। उद्घाटन कार्यक्रम के साथ ही विरोल के मूल निवासी सेठ श्री दलीचंद पुत्र श्री रायचंद जैन परिवार के मुमुक्षुरत्न सर्वश्री मुकेश शांतिलाल संघवी, मुमुक्षुरत्ना शिल्पा मुकेश संघवी, मुमुक्षुरत्न युग मुकेश संघवी, मुमुक्षुरत्ना कियोशा मुकेश संघवी के दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री भंवरलाल पुत्र श्री मुल्तान मलजी चंदन द्वारा गाँव में कंबल वितरण किए गए। विरोल गाँव के प्रत्येक परिवार को एक स्टील का भाणा

श्रीमती शमुदेवी/चुन्नीलाल, घमंडीराम जी चंदन स्टील लिमिटेड मुंबई द्वारा भेंट किया गया व विद्यालय विकास के लिए इक्यावन हजार रुपए नकद भी दिए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री सुखराम बिश्नोई वन एवं पर्यावरण मंत्री राजस्थान सरकार ने बताया कि समाज के उत्थान के लिए व्यक्ति को संस्कारवान होना आवश्यक है। मंत्रीजी ने वन एवं पर्यावरण के संरक्षण का आह्वान करते हुए बताया कि पर्यावरण से ही जीवन है जिसे सुरक्षित रखना जरूरी है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रधानाचार्य श्री किशन लाल सारण ने बताया कि शिक्षा से व्यक्ति का जीवन सफल होता है। शिक्षा के लिए अधिक से अधिक राजकीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने की बात कही साथ ही राजकीय विद्यालयों में संचालित लाभकारी योजनाओं की जानकारी दी। पूर्व सरपंच श्री चंदनसिंह ऊर्फ फौजी ने कहा कि चंदन परिवार व माननीय मंत्री श्री सुखराम बिश्नोई का विरोल के साथ आत्मीय संबंध है जिस कारण हर संभव मदद का विश्वास दिया एवं पूरे गाँव के चार हजार ग्रामीणों ने शिलान्यास कार्यक्रम में भाग लिया। इस मौके पर सर्वश्री मालमसिंह नारायण सिंह, जोगसिंह, आईदान देवासी, भेराराम, भागीरथ राम खिलेरी, हंसाराम चौधरी, पूनमाराम चौधरी, प्रभु राम राणा, चंपाराम, जालमसिंह, दलाराम, जामता राम, राजूराम सेन, नरेश गर्ग, पृथ्वीराज सिंह सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य श्री किशनलाल सारण ने किया।

संस्कृत सूक्ति लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया

जयपुर– महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय जमवारामगढ़, जयपुर में प्रधानाचार्य श्रीमती सरोज कंवर इंदा के नेतृत्व में श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर द्वारा संस्कृत सूक्ति लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर प्रतियोगिता को सफल बनाया। प्रतियोगिता का परिणाम दो सदस्यीय वरिष्ठ अध्यापक श्री जीवराज सिंह व श्री श्रवण लाल मीणा निर्णायक मंडल के द्वारा घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में कोमल बिवाल ने प्रथम स्थान, मौली सोब्ती ने द्वितीय तथा प्रेरणा शर्मा व भारती वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता को सफल बनाने में विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आयोजक श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर ने सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

छात्रा ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया

चूरू– राजकीय कनोई बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 12 की छात्रा मिठ्ठू रेगर पुत्री श्री गोवर्धन रेगर ने अपनी मार्गदर्शिका सांस्कृतिक प्रभारी श्रीमती स्नेह प्रभा मिश्रा के निर्देशन में शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम में राज्य स्तरीय छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने माता-पिता व विद्यालय का नाम रोशन किया। संस्थाप्रधान ने छात्रा को सम्मानित किया।

युवा चौपाल श्रीरामवाला ने विद्यालय में लगवाए सीसीटीवी कैमरे एवं इन्वर्टर

बाड़मेर–जिले के सुदूरवर्ती धनाऊ पंचायत समिति के निकटवर्ती राजकीय प्राथमिक विद्यालय जाटा बस्ती मन्दिर वाला श्रीरामवाला में ग्राम पंचायत के युवाओं द्वारा एक मुहिम चलाकर युवा चौपाल 'श्रीरामवाला ग्रुप' के माध्यम से जनसहयोग राशि एकत्रित करके विद्यालय परिसर की सरंक्षा एवं सुरक्षा हेतु सीसीटीवी कैमरे मय इन्वर्टर लगवाए। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री करनाराम सहारण ने बताया कि श्रीरामवाला के युवा चौपाल के एडमिन सर्वश्री हनुमान पावड, हनुमान पोटलिया, मूलाराम डूडी, प्रकाश सहारण, कँवराज महिया, भगाराम ईशराम, जोगाराम सहारण, हरचन्द सहारण इत्यादि साथियों ने एक बेहतरीन पहल करते हुए सामूहिक जनसहयोग राशि एकत्रित की जिसमें गाँव के युवाओं ने कुल चौसठ हजार दो सौ अड़तालीस रुपए के सीसीटीवी कैमरे एवं इन्वर्टर लगवाकर विद्यालय में भेंट किए। विद्यालय के संस्थाप्रधान श्री पूनमचन्द जाखड़ ने युवाओं की इस पहल की सराहना करते हुए आभार जताया। इस दौरान सर्वश्री राहुल सियाग, जगदीश डूडी, गोगाराम ईशराम, भगवानाराम पावड, अनिल सौऊ, दमाराम सियाग, सतीश खोथ, पूनमाराम सहारण, गोमाराम भाखर सहित अनेक युवा साथी मौजूद थे।

शिक्षक द्वारा के विद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण

भीलवाड़ा– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सरगाँव के मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण जिसकी लागत 02 लाख रुपये है, स्थानीय विद्यालय में पूर्व में कार्यरत शिक्षक श्री कैलाश चन्द्र कचौलिया जो वर्तमान में प्रधानाध्यापक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय माणक नगर भूतेला

(सहाड़ा) में कार्यरत है, के द्वारा करवाया गया। इनके पूज्य पिता स्वर्गीय श्री काशीलाल जी की 25 वीं पुण्यतिथि 25.10.2021 को विद्यालय में प्रवेश द्वारा का निर्माण कर विद्यालय को समर्पित किया गया। ग्रामीणजन, जन प्रतिनिधि एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, शिक्षक एवं विद्यालय के छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रीमती मंजू सैनी प्रधानाचार्य राउमावि सरगांव व विद्यालय स्टाफ ने आभार व्यक्त किया।

गाँधी जयन्ती पर पुस्तकालय में लगाई पुस्तक प्रदर्शनी

जालोर- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चान्दराई में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर पुस्तकालय में गाँधी कॉर्नर की स्थापना व पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गाँधी कॉर्नर का उद्घाटन प्रधानाचार्य श्री पृथ्वीराज रतनू एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि श्री ऊमसिंह राठौड़ द्वारा किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी में सभी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, एसडीएमसी सदस्यों ने पुस्तकों का अवलोकन किया। विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया। छात्र-छात्राओं द्वारा गाँधी साहित्य की पुस्तकों, कहानियों, प्रेरक-प्रसंगों, कृषि विज्ञान, प्रतियोगी परीक्षाओं, चार्ट, पोस्टर, कॅरियर डे फाइलों आदि का अवलोकन किया। पुस्तकालय अध्यक्ष श्री हेमन्त कुमार लखेरा ने बताया कि इस पुस्तक प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का ध्यान पुस्तकालय की ओर आकृष्ट कर पुस्तकों को पढ़ने हेतु प्रेरित करना एवं समय-समय पर पुस्तकालय का उपयोग कर लाभान्वित करना है। पुस्तक प्रदर्शनी में छात्र पुस्तकालय परिषद् के विद्यार्थियों एवं लाइब्रेरी कैप्टन श्री करण कुमार का पूर्ण सहयोग रहा। आए हुए आगन्तुकों एवं प्रधानाचार्य ने पुस्तक प्रदर्शनी की सराहना कर आगे उत्सव एवं जयन्ती पर ऐसे आयोजन करने हेतु एवं पुस्तकालय में सहयोग हेतु आश्वासन दिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री पृथ्वीराज रतनू, व्याख्याता सर्वश्री भंवरसिंह, सखाराम, सुजाराम चौधरी, भरत भारती, सुरेश जाट, राजेश दान, वरिष्ठ अध्यापक सर्वश्री इन्द्रसिंह, नारायण सिंह, नरेन्द्र कुमार अध्यापक, रमेश कुमार, बरदाराम, रीना गोजा, जुहारलाल डांगी, महेश मीना, शा.शि. श्री महेन्द्रसिंह दहिया, पुस्तकालय अध्यक्ष श्री हेमन्त कुमार लखेरा एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

कुंचौली में निःशुल्क साइकिल वितरण

राजसमंद- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली में अध्यनरत कक्षा 9 व 10 की छात्राओं को बालिका शिक्षा प्रोत्साहन एवं सम्बलन हेतु राजस्थान सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के तहत सत्र 2021 -22 में नवीं में अध्यनरत 27 छात्राओं एवं

सत्र 2020-21 की नवी कक्षा की 30 छात्राओं को जो कि वर्तमान में कक्षा 10 में अध्यनरत है को विद्यालय में साइकिल वितरण समारोह आयोजन कर छात्राओं को साइकिलें वितरित की। समारोह की अध्यक्षता कार्यवाहक पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी श्री उमेश सर्वा, मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत कुंचौली की सरपंच श्रीमती निर्मला देवी भील, विशिष्ट अतिथि श्री धनराज भील की उपस्थिति में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सरपंच श्रीमती भील ने इस अवसर पर बालिका शिक्षा व महिला सशक्तीकरण पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कार्यवाहक प्रधानाचार्य ने जानकारी देते हुए कहा कि वैश्विक महामारी के कारण विगत 2 सत्रों की नवी कक्षा में अध्यनरत छात्राओं को निःशुल्क साइकिल योजना के तहत वर्तमान सत्र में विद्यालय को साइकिलें मिलते ही वितरित की गई। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ सर्वश्री भगवती लाल आमेटा, गणेश लाल मेघवाल, समोज कुमार, ओम प्रकाश वर्मा, दल्ला राम भील, गिरजा शंकर भील, पुष्पा शर्मा की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन शारीरिक शिक्षक श्री राकेश टॉक ने किया।

भामाशाहों के सहयोग से बदली विद्यालय की तस्वीर

बीकानेर : श्रीडूँगरगढ़ ब्लॉक का राजकीय माध्यमिक विद्यालय नोसरिया विकास के नित नए आयाम स्थापित कर रहा है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री हजारीमल बाना के कुशल नेतृत्व एवं अधीनस्थ स्टाफ की छात्र हित में कड़ी मेहनत के फलस्वरूप यह संभव हो पाया है। गत दो वर्षों में न केवल शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हुई है बल्कि भामाशाहों के सहयोग से विद्यालय में भौतिक सुविधाओं में भी काफी सुधार हुआ है। शाला प्रधान श्री हजारीमल बाना की प्रेरणा से डॉ. सुरेन्द्र बेनीवाल वरिष्ठ कैंसर रोग विशेषज्ञ बीकानेर ने 1,00,000 (एक लाख) रुपये की लागत से स्मार्ट क्लास रूम विद डिजिटल बोर्ड एवं कम्प्यूटर विद्यालय को भेंट

किया, जिससे शाला के बच्चों को तकनीकी नवाचार से पढ़ाई में मदद मिलेगी। गाँव मिंगसरिया के भामाशाह श्री किशनलाल प्रजापत पुत्र श्री नथाराम ने कक्षा 1 व 2 को खेल-खेल में एवं गतिविधि आधारित शिक्षण के द्वारा पढ़ाने के उद्देश्य से आधुनिक साज सज्जा युक्त, दीवारों पर शिक्षण अधिगम सामग्री अंकन एवं खिलौने इत्यादि के लिए 1,00,000 (एक लाख) रुपये का आर्थिक सहयोग दिया है। गाँव नोसरिया के भामाशाह श्री किशनाराम सारण ने बालिका टॉयलेट्स की मरम्मत एवं दरवाजों के निर्माण के लिए 21,000 (इक्कीस हजार) रुपये का सहयोग दिया। प्रधानाध्यापक श्री हजारीमल बाना ने शाला कार्यालय की सुसज्जा के लिए 21,000 (इक्कीस हजार) रुपये की ग्रीन मैट शाला को उपलब्ध करवाई। विद्यालय के बच्चों के जूते-चप्पल व्यवस्थित रूप से रखने के लिए श्री किशनलाल सेनी नोसरिया ने 11,500 (ग्यारह हजार पाँच सौ) रुपये का आर्थिक सहयोग दिया। विद्यालय कार्यालय में आगन्तुकों एवं स्टाफ के बैठने के लिए सोफा फर्नीचर के निर्माण के लिए श्री बजरंग सिंह राठौड़, नोसरिया ने 11,000 (ग्यारह हजार) रुपये का सहयोग दिया। विद्यालय कार्यालय में रंग-पुट्टी एवं दरवाजों तथा खिड़कियों के लिए पर्दे क्रय करने के लिए गाँव मिंगसरिया के श्री हनुमान राम प्रजापत ने 11,000 (ग्यारह हजार) रुपये दिए। विद्यालय में पेयजल समस्या के निवारण के लिए 1HP की पानी की मोटर एवं पेयजल की सुचारू व्यवस्था के लिए श्री कुंभाराम मिंगसरिया ने 6,600 (छह हजार छह सौ) रुपये का सहयोग दिया। श्री मनोज कुमार शा.शि. ने टॉयलेट्स के गेट निर्माण के लिए 5,100 (पाँच हजार एक सौ) रुपये विद्यालय को दिए। विद्यालय के पूर्व वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत) श्री रामरतन झाझड़िया ने 3 छत पंखे विद्यालय को भेंट किए। श्री कालूराम ज्याणी, नोसरिया ने पाँच कक्षा कक्षों में शिक्षण कार्य हेतु लेक्चर स्टैण्ड का निर्माण 5,100 (पाँच हजार एक सौ) रुपये की लागत से करवाया। भौतिक संसाधन विकास हेतु श्री कुंभाराम गोदारा मिंगसरिया ने 51,000 (इक्यावन हजार) रुपये विद्यालय प्रबंधन को भेंट किए। ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय स्टाफ द्वारा किया गया अंशदान निम्न प्रकार है- सर्वश्री बाबूलाल मीणा (व.अ.) 11,000 रुपये, जीवनराम मेघवाल (अध्यापक) 11,000 रुपये, दलीप कुमार (अध्यापक) 5,100 रुपये, करणाराम (अध्यापक) 5,100 रुपये, ओमप्रकाश गोदारा (अध्यापक) 5,100 रुपये, चेतनराम गोदारा (प्रबोधक) 11,000 रुपये, सुरेश कुमार (प्र.अ. (पूर्व)) 5,100 रुपये, हजारीमल बाना (प्र.अ.) 21,000 रुपये, रामरतन झाझड़िया (व.अ.) 5,100 रुपये, मनोज कुमार रंगा (शा.शि.) 5,100 रुपये, अन्य स्टाफ सदस्यों के द्वारा 15,000 रुपये भेंट किए गए। उपर्युक्त सूची के अनुसार कुल 99,400 (निन्यानवे हजार चार सौ रुपये) का आर्थिक सहयोग विद्यालय स्टाफ द्वारा किया गया है। उक्त राशि का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक बेल, इन्वर्टर, कार्यालय एवं स्टाफ रूम के लिए मैट, छात्राओं के टॉयलेट गेट का निर्माण, छत पंखे, छत पर टाइल्स लगवाने, पेयजल के लिए 15 नल एवं पानी की टंकी, बालिका टॉयलेट्स में फव्वारे इत्यादि के लिए किया गया। NMMS परीक्षा 2020 में विद्यालय में पाँच बच्चों क्रमशः बसन्ती प्रजापत, अनिता पूनिया, लाली मेघवाल, ललिता सऊ एवं गजेन्द्र सिंह राठौड़ का चयन हुआ है।

आसना स्कूल में अलमारी भेंट

उदयपुर-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आसना में विद्यालय की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती बसंती नरूका ने अपने मातुश्री श्रीमती अनोप कँवर की पुण्य स्मृति में प्रधानाचार्य डॉ. महावीर प्रसाद जैन की विशेष प्रेरणा से एक लोखन की अलमारी 6-5 3 की मूल्य 9000 की प्रधानाचार्य को विद्यालय हेतु भेंट की। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त स्टाफ उपस्थित था।

विशेष शिक्षिका स्नेहलता शर्मा रेड़क्रॉस भरतपुर द्वारा कोविड-19 प्रतिभा सम्मान से सम्मानित

भरतपुर-राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगीपुरा, नदबई, भरतपुर की विशेष शिक्षिका एवं मास्टर ट्रेनर फस्ट एड ट्रेनिंग को कोविड़-19 में चिकित्सा सेवाओं में अनुकरणीय योगदान एवं मानव सेवा में समर्पण भाव से उल्लेखनीय कार्य करने पर रेडक्रॉस शाखा-भरतपुर के चैयरमेन श्री एस.एन.अग्रवाल, अति. जिला कलेक्टर श्री रघुनाथ खटीक द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। श्रीमती स्नेहलता शर्मा, इण्डियन रेडक्रॉस की महिला मास्टर ट्रेनर है। फस्ट एड, वाउचर, मैडेलियन, प्राथमिक उपचार व्याख्याता एवं मास्टर ट्रेनर से प्रशिक्षित हैं। रेडक्रॉस की आजीवन सदस्या है। दूरदर्शन, आकाशवाणी केन्द्र पर कई बार दिव्यांग बच्चों की पढ़ाई एवं उनकी देखभाल विषयों में रिकार्डिंग का प्रसारण देश भर में हो चुका है। श्री पवन खण्डेवाल सचिव, रैड़क्रॉस के निवेदन पर अति. जिला कलेक्टर द्वारा रेडक्रॉस की गतिविधियों को स्कूलों में संचालित करने के लिए पत्र लिखने की सहमति प्रदान की। सचिव द्वारा मंच का संचालन किया गया व उन्होंने रेडक्रॉस द्वारा किए गए गत वर्षों के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाखल, जिला-जालोर

(भामाशाह संघवी हितैष कुमार भंवरलालजी कटारिया के द्वारा निर्मित)

❐ किशनलाल विश्नोई

सांचोरी धरा दानवीरों की भूमि है। इसी भूमि से अनेक दानवीर पैदा हुए, जिन्होंने सरस्वती के मंदिर में बहुत सा दान दिया है। भामाशाह जैसा व्यक्ति जिसने समस्त धन राशि मंदिर निर्माण की बजाय राष्ट्र निर्माण में अर्पण कर दी। इससे प्रेरित होकर राज्य सरकार ने भामाशाह योजना लागू की। वीरमदेव की शौर्य भूमि जालोर से 150 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 68 पर बसा राजस्थान का पंजाब माने जाने वाले सांचोर (सत्यपुर) से राष्ट्रीय राजमार्ग 68 पर 15 किलोमीटर दूर वाया डेडवा भीनमाल रोड पर बसा ग्राम पंचायत जाखल जहाँ आज भी शिक्षा के मूल्य को पहचानने वाले भामाशाह संघवी हितैश कुमार भंवरलाल कटारिया मौजूद हैं। इन्होने न केवल अपने व्यक्तित्व अपितु कृतित्व से राजस्थान में अनूठी पहल कर अपनी स्वर्गीय दादी व दादा के नाम को युग युगांतर तक याद रखे, इतना महत्त्वपूर्ण कार्य कर दिया। भवन का लोकार्पण दिनांक 03 मार्च 2021 श्रीमान महेंद्र सिंह धोनी लेफ्टिनेंट कर्नल, पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान, भामाशाह संघवी कटारिया परिवार, श्रीमान सुखराम बिश्नोई माननीय वन एवं पर्यावरण मंत्री राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य श्रीमान देवजी एम पटेल माननीय सांसद जालोर की अध्यक्षता, श्रीमती कमला देवी सरपंच ग्राम पंचायत जाखल, रामप्यारी पंचायत समिति सदस्य, पूनी देवी पूर्व सरपंच जाखल एवं गण मान्य नागरिकों के बीच सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विभाग की ओर से जिला शिक्षा अधिकारी एवं राज्य स्तर पर श्री दिलीप परिहार (CSR) सहायक निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर, उपखंड अधिकारी श्री भूपेन्द्र यादव, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, श्री अशोक रोहिशवाल, जिला शिक्षा अधिकारी श्री मोहनलाल मेघवाल, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मोहनलाल परिहार, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री पूनमचंद विश्नोई, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री पोपटलाल मेघवाल उपस्थित रहे। भामाशाह संघवी हितैश कुमार भंवरलाल कटारिया ने ग्राम जाखल में लगभग 2.03 करोड़ की लागत का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल भवन बनाकर राज्य सरकार का सौंपने का संकल्प लिया जिन्हें पूर्ण कर राज्य सरकार को समर्पित किया। जिस भवन में वर्तमान में विद्यालय संचालित हो रहा है।

भामाशाह का संक्षिप्त परिचय –

श्री हितैष कुमार का जन्म सांचोर जिला-जालोर में दिनांक 04.12.1974 को श्री भंवरलाल संघवी परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती शायंती बेन, दादा स्वर्गीय मिश्रीमल, दादी तीजां बेन कटारिया के घर में हुआ। इन्होंने बीकॉम तक की शिक्षा हासिल की। इनके पिताजी मुम्बई में मेटल मार्केट के व्यवसायी है। इनका विद्यार्थी जीवन अच्छी तरह से गुजरा एवं नामी हस्तियों से इनका सम्पर्क रहा, क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी एवं उनके साथियों से गहरी मित्रता है।

आपने इतनी विशाल सोच के साथ छोटी-सी उम्र में व्यवसाय में दिन प्रतिदिन उन्नति प्राप्त कर ख्याति प्राप्त की है। स्वयं के भीतर विद्यार्थी जीवनकाल से लेकर अब तक ग्रामीण विद्यार्थियों के सामने आने वाली बाधाओं और चुनौतियों को विस्मृत नही किया सदैव उन विद्यार्थियों के बारे में विचार किया जिन्हें शिक्षा प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही है।

आपने प्रगतिवादी सोच को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा के मंदिर में धनराशि का समुचित उपयोग करने का संदेश दे कर कीर्तिमान स्थापित किया। श्री संघवी हितेश कुमार कटारिया ने विद्यालय भवन बनाकर सौंपने का संकल्प लिया।

विचार को मूर्त रूप देने में विभागीय सहयोग– इस कार्य को मूर्त रूप देने हेतु श्री किशनलाल विश्नोई व्याख्याता (प्रधानाचार्य) व श्री भंवरलाल विश्नोई व्याख्याता ने भामाशाह को व्यक्तिश: मिलकर प्रेरित कर महत्त्वपूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। इस कार्य को अंजाम देने में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्री मोहनलाल परिहार एवं राज्य स्तर पर सहायक निदेशक (CSR) श्री दिलीप परिहार द्वारा मार्ग दर्शन प्रदान किया गया। इस कार्य के लिए विद्यालय के समस्त स्टाफ साथियों का भरपूर सहयोग रहा। इस कार्य की शुरुआत हेतु भूमि पूजन एवं शिला पूजन समारोह दिनांक 08.07.2019 को आयोजित किया गया। भूमि पूजन कार्यक्रम समारोह के साक्षी व गरिमामयी उपस्थिति सरपंच श्रीमती पूनी देवी विश्नोई, पूर्व सरपंच श्री रामावतार विश्नोई, श्री पूनमाराम विश्नोई, विद्यालय के समस्त स्टाफ, ग्राम पंचायत जाखल के पंच व विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, ग्रामीणों की मौजूदगी में किया गया। भूमि पूजन के बाद अतिथियों व ग्रामीणों ने अल्पाहार व मिष्ठान का आनन्द उठाया। इस मौके संस्थाप्रधान श्री किशनलाल विश्नोई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

समय की धारा अविरल बहती है। जिस स्वप्न की आस लेकर दिनांक 08.07.2019 को भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित हुआ। शनै: शनै: उसका मूर्त रूप सामने आने लगा। हजारों राजमिस्त्री व श्रमिकों के अथक प्रयासों से भवन रूप लेने लगा। भवन का स्वरूप निखरने लगा। इसी दौरान वैश्विक स्तर पर महामारी कोविड–19 ने अपने चपेट में लोगो को लेने लगी। हजारों की संख्या में युवा और वृद्ध काल के ग्रास बन गए। राज्य सरकार और चिकित्सा विभाग ने इस महामारी से निपटने के लिए अपना सर्वस्व समर्पण किया और नियंत्रण करने में सफल भी हुई।

देश में राजस्थान राज्य ने अपने बेहतर व कुशल प्रबंधन में प्रथम स्थान प्राप्त किया और अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय बनकर राजस्थान ने अपनी अहम भूमिका निभाई। इस महामारी के समय में भी श्रीमान कटारिया परिवार ने अपने संकल्प को विराम न लगाते हुए अनवरत रूप से निर्माण कार्य को जारी रखा ।

मेहंदी जब सहती है प्रहार बन जाती हैं
ललनाओं का सिंगार बन .....

मानव जब जोर लगाता है तो पत्थर भी पानी बन जाता है। अथक प्रयास से भवन का निर्माण कार्य 2 वर्ष से पूर्व ही पूर्ण हो गया। वर्तमान में लोकार्पण बाद इसी भवन में विद्यालय संचालित हो रहा है। इस अवसर पर संघवी कटारिया परिवार हितैश कुमार अपने मन के स्वप्न को साकार कर उक्त भवन राज्य सरकार को सुपर्दगी हेतु दान पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज कार्यवाही हेतु विभाग को सुपर्द कर दिए हैं। जिनकी कार्यवाही प्रक्रियाधीन है ।

श्रेष्ठता के लिए, ज्ञान के लिए, दान के लिए, उत्कृष्टता के लिए, परमार्थ के लिए लाखों बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सर्वे भवन्तु सुखिनः की मनोकामना को साकार रूप देने के लिए इस अवसर का आयोजन नव निर्मित भवन में कोरोना काल के पश्चात दिनांक 01.09.2021 से संचालित किया जा रहा है। यह एक यज्ञ है जिसमे सभी ने अपनी क्षमतानुसार अपनी हवि प्रदान की। इस हवि में राउमावि. के प्रधानाचार्य श्री किशनलाल विश्नोई, विद्यालय परिवार के समस्त स्टाफ, स्थानीय सरपंच, पूर्व सरपंच एवं समस्त ग्रामवासियों का अहम योगदान रहा एवं भरपूर सम्बल मिलता रहा, जिनके प्रयासों से इस ऐतिहासिक कार्य को सम्पन होने में सहयोग मिला।

आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल भवन का निर्माण कार्य:– भामाशाह श्री संघवी हितैश कुमार कटारिया परिवार द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाखल में विशाल विद्यालय भवन का निर्माण करवाया गया। इसमें कुल 18 कमरों एवं मुख्य दरवाजा है। इसमें कक्षा कक्ष सहित प्रधानाचार्य कक्ष, स्टाफ रूम, भूगोल कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, कंप्यूटर लेब एवं छात्र छात्राओं के लिए पृथक् पृथक् पर्याप्त शौचालय एवं मूत्रालय सहित समस्त सुविधाओं युक्त कुल 20 कक्ष है। इस भवन का कुल निर्माण क्षेत्र 1505.44वर्ग मीटर है। इस भवन में डिजिटल कक्षा–कक्ष व तकनीकी सुविधाओं से युक्त ई–कक्षा का संचालन किया जा सकना सम्भव होगा। इन सब के अतिरिक्त 71.3x111.9 फीट का अहाते के भीतर खुला क्षेत्र है जिसमे वॉलीबॉल, बेडमिंटन कोर्ट का उपयोग किया जा सकने वाले खेल मैदान भी सम्मिलित है। मुख्य सड़क से विद्यालय तक सी.सी. सड़क व चारदीवारी इस निर्माण कार्य के अतिरिक्त है। जिसमे फुटबॉल, क्रिकेट, सॉफ्टबॉल, हेंडबॉल, खो–खो, कबड्डी एवं समस्त प्रकार के खेल मैदान विकसित किए जा सकते हैं। इन सुविधाओं का उपयोग ग्राम पंचायत जाखल के निकटवर्ती ढाणियों, गाँवों के बच्चों के लिए किया जा सकता है।

विद्यालय का संक्षिप्त विवरण–

स्थापना वर्ष : 1948
उच्च प्राथमिक स्तर : 1997
माध्यमिक स्तर : 2013
उच्च माध्यमिक स्तर : 2018
वर्तमान संकाय : कला संकाय
कुल नामांकन (सत्र 2020–21) : 311
कुल नामंकन (सत्र 2021–22) : 370
संस्थाप्रधान का नाम : श्री किशनलाल विश्नोई
कार्यरत व्याख्याता : 3
कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक : 4
कार्यरत अध्यापक : 5
कार्यरत शारीरिक शिक्षक : 1
कुल स्वीकृत पद : 18
कुल कार्यरत पद : 13

आभार –

धन्य है यह पावन धरा जिस पर भामाशाह श्री हितैश कुमार का जन्म हुआ। जिसका लाभ स्थानीय क्षेत्र के सभी ग्रामवासियों को मिलेगा। वंचित वर्ग के विद्यार्थी भी उचित शिक्षा–दीक्षा प्राप्त कर पाने हेतु सुविधा प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षा रूपी यज्ञ जिसमें सभी अपनी क्षमतानुसार आहुति दे रहे हैं। इस यज्ञ के फलस्वरूप प्राप्त शिक्षा का उपयोग राष्ट्र के विकास हेतु फलीभूत होगा।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाखल, सांचोर,
जालोर (राज.)

Rajasthan Education Department

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–नवम्बर, 2021 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	VIMALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHEJRA DIKHANADA (215342)	CHURU	1500000
2	OM PRAKASH	GOVT. SECONDARY SCHOOL HANSIYAWAS (215202)	CHURU	320000
3	SUBHASH CHANDER AGARWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHIGARLA (215200)	CHURU	320000
4	JOGENDER SINGH SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHALERI (211551)	CHURU	100100
5	SANJEEV KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL OJATOO (215797)	JHUNJHUNU	100000
6	KISHAN LAL JANGID	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHUI (219395)	NAGAUR	100000
7	VINOD KUMAR SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHALERI (211551)	CHURU	100000
8	MAHENDAR KUMAR SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHALERI (211551)	CHURU	100000
9	SHRI RAM RATAN FOUNDATION	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAPINI (220306)	JODHPUR	100000
10	LOKESH JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MARJEEVI (224331)	CHITTAUR GARH	78100
11	SURESH KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DANTA SIKAR (213313)	SIKAR	69000
12	KAILASH AGARWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAGHELA (215199)	CHURU	60000
13	RAJ KUMAR SESMA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
14	HANSA JAGDISH SOMANI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LADARIYA (219788)	NAGAUR	51000
15	NEMICHAND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	51000
16	RAM SAHAI GOOJAR	SANT SHIROMANI NARAYAN DAS GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHOULA (218637)	JAIPUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–नवम्बर 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	118	3298980
2	NAGAUR	52	302331
3	JHUNJHUNU	40	235591
4	SIKAR	60	221050
5	GANGANAGAR	15	139101
6	CHITTAURGARH	29	112551
7	JODHPUR	15	109001
8	KOTA	199	90186
9	BANSWARA	35	80910
10	JAIPUR	77	78754
11	BUNDI	42	69601
12	SAWAIMADHOPUR	5	65600
13	HANUMANGARH	22	52300
14	JHALAWAR	42	40031
15	SIROHI	16	39494
16	AJMER	99	35255
17	UDAIPUR	35	33850
18	DAUSA	58	32556
19	PALI	42	32282
20	BIKANER	15	32230
21	BARMER	66	31637
22	BHARATPUR	32	29551
23	BHILWARA	137	25227
24	PRATAPGARH	34	22100

Rajasthan Education Department

25	RAJSAMAND	138	21547
26	ALWAR	36	19311
27	BARAN	6	17100
28	JAISALMER	38	14728
29	DUNGARPUR	45	13153
30	TONK	46	9870
31	JALOR	96	8739
32	KARAULI	12	7500
33	DHAULPUR	16	1513
	Total	**1718**	**5323630**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट :-

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Project Submit किए गए। नवम्बर 2021 में 291.97 लाख की लागत के कुल 09 Projects को स्वीकृति/अनुमति प्रदान की गई है। उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects में से 01 लाख से अधिक की लागत वाले Project निम्नानुसार है :-

क्र.सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय
01	श्रीमती कान्ताबाई नथमलजी रामाणी चेरिटेबल ट्रस्ट	865	जालोर जिले के गुडा बालोतान ग्राम में राजकीय विद्यालय हेतु आधुनिक सुविधायुक्त नवीन भवन के निर्माण का कार्य ।	225 लाख
02	एस.एम. सहगल फाउडेशन	849	अलवर जिले के राउमावि खरेड़ा में कक्ष-कक्षों की मरम्मत, फर्नीचर, शौचालय, चारदीवारी, वॉटर हारवेस्टिंग इत्यादि का कार्य।	40.07 लाख
03	श्री रामेश्वर लाल	858	बीकानेर जिले में महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय तेजरासर में अतिरिक्त कक्षा-कक्ष का निर्माण का कार्य।	16.22 लाख
04	श्री बालाराम	860	बाड़मेर जिले के राउमावि रामसर का कुआं के विद्यार्थियों हेतु 250 सिंगल सिटेड फर्नीचर का कार्य।	3.12 लाख
05	श्री भूराराम	856	नागौर जिले के राउप्रावि धादरिया खुर्द विद्यालय के मुख्य द्वार का निर्माण	2.25 लाख
06	श्री राम जीवन	861	बाड़मेर जिले के राउमावि उपरला विद्यालय में प्याऊ निर्माण का कार्य।	02 लाख
07	ए.यू स्मॉल फाइनेस बैक	857	जयपुर जिले के 07 राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर मय प्रिन्टर, ट्री गार्ड, चेयर इत्यादि का सहयोग।	1.78 लाख
08	श्री उदयभानू सिंह चम्पावत	848	नागौर जिले के राउमावि पालोट में पार्किंग शेड के निर्माण का कार्य।	1.17 लाख

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

सीकर

रा.मा.वि. राजपुरा (डांसरोली) तह. दांतारामगढ़ को श्री राधेश्याम शर्मा द्वारा विद्यालय को शुद्ध पेयजल हेतु आर.ओ. सिस्टम भेंट किया जिसकी लागत 11,000 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि. सींथल को श्री अशोक कुमार तनेजा से विद्यालय को एक प्रिंटर सप्रेम भेंट जिसकी लागत मूल्य 20,500 रुपये।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. सेमड़ पं.स. सायरा, तह. गोगुन्दा में श्रीमती दाखुबाई नान्द्रेचा (सेमड़) द्वारा पेयजल व्यवस्थार्थ टंकी तथा आर.ओ. लगवाने में 1,20,000 रुपये खर्च किए एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा 30,000 रुपये की लागत से एक पानी की मोटर लगवाई।

झालावाड़

रा.उ.मा.वि. बड़बड़ ब्लॉक बकानी को पूर्व छात्रों, अभिभावकों व विद्यालय में कार्यरत स्टाफ में विद्यार्थियों के बैठने हेतु कुल 50 टेबल एवं 50 स्टूल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 67,500 रुपये।

जालोर

रा.उ.मा.वि. नरसाणा पं.स. सायला को श्री मांगू सिंह बालावत द्वारा विद्यालय को ठंडे पानी हेतु कूलर

हमारे भामाशाह

भेंट जिसकी लागत 45,000 रुपये।

चूरू

संचियालाल बैद रा.बा.उ.मा.वि. रतनगढ़ में श्री जोधराज बैद द्वारा 29,10,000 रुपये की लागत से 20×25 वर्ग फीट के तीन कक्षा-कक्ष मय बरामदा, पुरुष शौचालय, बालिका शौचालय, आदर्श रसोई व महिला शौचालय का निर्माण कर विद्यालय को भेंट।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. मलार (पीपाड़ शहर) को श्री पप्पूराम एवं छोटाराम राम चोयल ने प्रधानाचार्य कक्ष के टेबल एवं कुर्सी भेंट जिसकी अनुमानित लागत 20,000 रुपये, श्री कमलेश चौधरी से चार आधुनिक कुर्सियां भेंट जिसकी लागत 10,000 रुपये।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. शक्करपुर (रूपवास) में श्री राकेश कुमार शर्मा (अध्यापक लेवल-1) एवं उनकी माताजी श्रीमती प्रेमवती देवी द्वारा विद्यालय में कक्षा-कक्ष मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 6,00,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : अरुण कुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका : जनवरी, 2022

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू, बाड़मेर में ऊर्जा संरक्षण विषय पर शाला परिसर में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अपने अपने पोस्टर के साथ सृजनशील विद्यार्थीगण।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर (लूणकरणसर), बीकानेर के 31 दिसंबर 2021 को सेवानिवृत्त हो रहे प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला कक्षा-कक्ष निर्माण हेतु मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना के लिए सीबीईओ. श्री राजकुमार सोनी को दो लाख का चेक विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति के नाम सौंपते हुए।

बाल शिविरा जनवरी, 2022

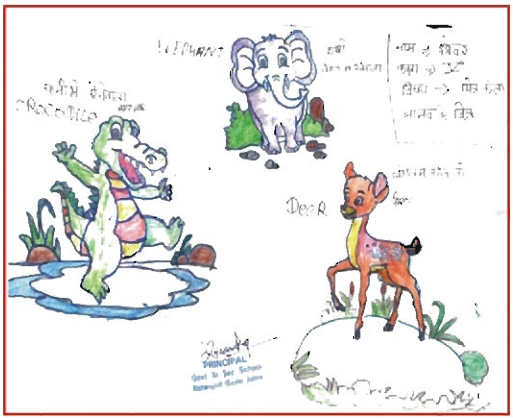

नाम- ईश्वर, कक्षा -5,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़,
सायला, जालोर

छात्रा- राजल, कक्षा-3,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
होडू, बाड़मेर

श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बिंजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर में गतिविधि
आधारित शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता

छात्रा -राजश्री मेहरा, कक्षा-10 एवं छात्रा-गरिमा जुगल, कक्षा-8
रामावि हड़वा, पंचायत समिति-शिव, जिला-बाड़मेर

छात्रा- दुर्गा, कक्षा -2 एवं छात्रा-माफिया कुमारी, कक्षा-7
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा, जिला- जालोर

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2022 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्र वीथिका : जनवरी 2022

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के क्षेत्रीय केन्द्र बीकानेर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय डॉ. बी.डी. कल्ला की गरिमामयी उपस्थिति एवं गतिविधियों का अवलोकन

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय डॉ. बी.डी. कल्ला के कर कमलों से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमीसर (बीकानेर) में तीन हॉलमय बरामदों का लोकार्पण।